अध्याय – द्वितीय

2 नेवारी संगीत की उत्पत्ति एवं विकास

2.1 नेवारी जाति का परिचय

2.2 नेवारी संगीत का परिचय

2.3 दाफा संगीत

2.4 नेवारी संगीत का अन्य प्रकार

द्वितीय अध्याय : – नेवारी संगीत की उत्पत्ति एवं विकास

संगीत एक ऐसी कला है जो हर व्यक्ति, समाज, प्रांत, देश तथा पूरे विश्व भर में छाई हुई है। संगीत की उत्पत्ति के विषय में संगीतज्ञों तथा विद्वानों की कई मतमतांतर प्राप्त हैं। इसी तरह नेपाल का नेवारी संगीत नेवारी जाति में छाया हुआ एक लोक गीत प्रकार है जो प्राचीन समय से चला आ रहा है। नेवारी संगीत की उत्पत्ति के विषय को लेकर कई विद्वानों की कई मत प्राप्त है। कुछ विद्वानों का मानना है की नेवारी संगीत की उत्पत्ति नेवारी जाति की उत्पत्ति के साथ साथ ही हुई होगी। नेपाली संस्कृति एवं अनुभवी पारखी विद्वान, अन्वेषक एवं लेखक 'गणेशराम लाछि' के अनुसार विश्व में संगीत अलग अलग रीति से प्रचलन में आए। संगीत की उत्पत्ति एवं उसका विस्तार निश्चित ही कहीं न कहीं एक स्थान से शुरू हुआ होगा। हमारे देश नेपाल में भी संगीत को अपने तरीके से अपनाया होगा। नेपाल के संगीत का नेवारी जनजाति द्वारा प्राचीन समय से अपनी परम्परा, रीतिरिवाज, तौरतरीके इत्यादि से विकास हुआ होगा और अभी भी इस संगीत की निरंतरता है। नेपाल का नेवारी संगीत एक प्रचलित संगीत के रूप में वर्तमान समय में देख सकते है जो सदियों से भिन्न भिन्न समय से परिचित होते आए है।

2:1 – नेवारी जाति का परिचय

काठमांडू उपत्यका तथा उपत्यका के आसपास सदियों से रहते आए हुए आदिवासी नेवार जाति के हैं, जिनके विषय में स्वदेशी तथा विदेशी विद्वानों ने विभिन्न खोज एवं अनुसंधान किया है किंतु यह जाति का निश्चित इतिहास हासिल करना असंभव सा बना है। यह जाति को आदिवासी जाति कहा गया है इसका कारण यह है की अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने जनजाति की परिभाषा के विषय में कहा है कि जनजाति वह है जो देश की मुख्य शासक-जाति से भिन्न भाषा, धर्म, संस्कृति का अस्तित्व रखती हैं। इस परिभाषा के आधार पर नेवार जाति के इतिहास को देखते हुए इस जाति को जनजाति बोला गया है। वर्तमान समय में काठमांडू उपत्यका में आदिवासी नेवार जाति के साथ साथ अन्य स्थान जैसे पूर्व, पश्चिम, हिमाली प्रदेश तथा मधेश के जातियों का निवास बढ़ने लगा है; जिसका मुख्य कारण है काठमांडू जो नेपाल का राजधानी शहर है तथा यही कारण से यहां पर अन्य स्थानों की तुलना में पर्याप्त मात्रा में सुविधाएं जैसे कि यातायात, व्यापार, शिक्षा, नौकरी इत्यादि अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं। इस प्रकार अन्य जाति रहते हुए भी नेवारी जाति का मुख्य निवास स्थान काठमांडू, ललितपुर और भक्तपुर है। ये स्थान देश का मुख्य स्थान होने के साथ-साथ अनुकूल वातावरण के कारण नेवार जाति अन्य जाति की तुलना में अत्याधिक सुसंस्कृत पाई जाती है। हजारों वर्ष से हिमालय प्रदेश के आसपास के प्रदेश और दक्षिण भारत का व्यापार मार्ग उपत्यका होने के कारण यहां के निवासी उद्योग, व्यापार, कला-कौशल, साहित्य

इत्यादि में निपुण हैं। नेवार जाति की प्रजा का मुख्य पेशा कृषि होते हुए भी व्यापार, उद्योग, कला-कौशल एवं कुछ प्रशासकीय कार्यों में भी वे लोग अग्रसर हैं।

नेवारी जाति के परिचय देने के क्रम में सर्वप्रथम शोधार्थीनी ने नेवार शब्द उत्पत्ति के विषय में शोध करने का प्रयास किया है।

2:1:1 – नेवार शब्द की उत्पत्ति और प्रचलन

नेवर शब्द की उत्पत्ति के विषय में अलग-अलग विद्वानों से अलग-अलग मत शोधार्थी ने पाया है। नेवार शब्द की उत्पत्ति के संदर्भ में नेवार और नेपाल को एक दूसरे के पर्याय माने गए हैं। "इतिहास शिरोमणि बाबूराम आचार्य" के अनुसार नेवार शब्द की उत्पत्ति नेवाङ, नेवाहाङ अथवा नेवा: से हुई है तथा यही शब्द से नेपाल का नामकरण किया गया। इसी प्रकार विद्वान श्री बाल चंद्र शर्मा ने भी 'नेपाल' और 'नेवार' शब्द को एक दूसरे में बंधा हुआ माना है। अफगानिस्तान निवासी अफगान, इंग्लैंड निवासी इंग्लिश आदि की तरह नेपाल में रहने वाली प्रजा को नेवार अथवा नेवा: कहने में कोई शंका नहीं मानी है। **"**एक और फ्रांस के प्रख्यात इतिहास विद सिल्भालेभी ने यह कथन दिया है की "Either Newar derives its origins from the word Nepala or that Nepal owes on the country her name to the Sanskrit adaptation of local ethnic name." प्रस्तुत कथन में भी सिल्भालेभई ने नेवार और नेपाल शब्द के मध्य अत्यंत गहन संबंध का उल्लेख किया है। अन्य एक विद्वान सुनीति कुमार चटर्जी ने इस विषय में विश्वास एवं स्पष्टता के साथ कहा है कि "It would appear, however that the name came from that of Tibeto-Burman speaking tribe, the ancestors of the present day Newar.**"**[(1)]

अनेक भाषाविदों ने नेपाल शब्द को तिब्बती एवं बर्मी भाषा का माना है। इसी के अनुरूप 'ने' का अर्थ गाय अथवा भैंस और 'पा' का अर्थ पालन करने वाला मानव होता है। आज भी यहाँ गाय और भैंस का पालन करने वालों को ङेवा अर्थात आज का नेवा: अथवा नेवार कहते हैं। नेवार शब्द को संस्कृत भाषा के अनुरूप नेपाल शब्द से संबोधित किया गया है। यही तथ्य के आधार पर देखा जाए तो नेवार शब्द का इतिहास उतना ही पुराना है जितना नेपाल का इतिहास है।

एक विद्वान के मतानुसार प्राचीन 'किरात-काल' में किरात जाति के विभिन्न राजाओं ने अपने राज्य के क्रम में नेवार वंश के राजा को भी राज करने दिया था। तत्पश्चात तत्कालीन राजा के नाम से नेवार अथवा नेपाल नाम रखा गया। यही बात का समर्थन करते हुए इतिहासकार बाबूराम आचार्य ने भी पुष्टि

1. तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपालभाषा साहित्यको इतिहास/ p-19

की है कि यह बात सत्य है। अन्य एक विद्वान प्रो. मणिकलाल श्रेष्ठ के मतानुसार वर्तमान समय के विलायत का ऐतिहासिक नाम ब्रिटेन था, वर्तमान समय में भी विभिन्न मुल्कों के मानव वहां पर बसोबास करते आए हैं फिर भी प्राचीन काल अर्थात पांचवी शताब्दी में विलायत में ब्रिटेन जातियां ही निवास करती थी। यही प्राचीन जाति 'ब्रिटन' के नाम से देश का नाम ब्रिटेन हुआ है अथवा ब्रिटेन देश में रहने वालों का नाम ब्रिटन हुआ है। इसी प्रकार नेपाल में रहने वाले लोगों को 'नेवार' शब्द से संबोधित किया गया अथवा यहां के आदिवासी 'नेवार' जातियों से देश का नाम नेपाल रखा गया है। दोनों बातों से यह बात पक्की है कि एक दूसरे में एक अभिन्न संबंध की स्पष्टता झलकती है।

नेवार शब्द के प्रचलन कि यदि बात करें तो इतिहास को ध्यान में रखते हुए प्रारंभ में नेपाल उपत्यका से बाहर रहने वाले लोग उपत्यका में रहने वाले लोगों को नेवार शब्द से संबोधित करते थे। मध्य काल के शासक मल्ल राजा स्वयं को नेवार लोगों के राजा मानते थे या स्वीकार करते थे। मध्यकाल में 'नेवार' शब्द का सर्वप्रथम 1618 ई.स. मैं कस्तेदात कृत 'नरपतिजयचर्या स्वरोदय' ग्रंथ में उल्लेख पाया गया था।[(1)] एक इतिहासकार डॉ. डिल्लीरमण रेग्मी के अनुसार 1654 ई.स. मैं नेपाल के गोरखा राज्य के राजा राम शाह के समय में उपत्यका से व्यापार के लिए आए हुए लोगों को नेवार नाम से संबोधित करने लगे तब से नेवार शब्द प्रचलन में आया ऐसा माना गया। तत्पश्चात काठमांडू उपत्यका के राजा प्रतापमल्ल ने भी हनुमानढोका (मल्ल काल का राज दरबार) के शिल्प पत्र में 1656 ई.स. में नेवार शब्द का उल्लेख किया गया प्राप्त होता है। उसके बाद काठमांडू उपत्यका में गोरखा शासको द्वारा दूसरे राज्य पर आक्रमण करके उपत्यका को अपने अधिकार में जीत लिया। तत्पश्चात उपत्यका के मुख्य नेवारों की भाषा को उनकी मातृभाषा में सीमित कर दीया और तब से नेपाली भाषा का प्रचार (जो गोरखा राज्यों की भाषा है जिसे खस भाषा भी कहते हैं) शुरू हुआ। गोरखा राज्य से आए हुए समुदाय उपत्यका के मुख्य आदिवासि निवासियों को नेवारी समुदाय से संबोधित करने लगे। एक अन्य लेखक मदन सेन ब्रज आचार्य ने अपनी पुस्तक 'नेपा: गा: या: नेवा बौद्धसंस्कृतिइ लोकबाजा' मैं बताया है कि नेवार शब्द की उत्पत्ति के विषय में नेपाल भाषा के भाषिक दृष्टिकोण से देखें तो जगह के प्रमाण से ही इस जाति का नाम रखा गया होगा, जैसे-

क्रम	**नेवारी वस्ती की नाम**	**स्थानीय निवासी**
1.	यें	यमि
2.	यल	यलमि

1. तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपालभाषा साहित्यको इतिहास/ p-21

3.	खोप	खोपमि
4.	किपू	किपुमि
5.	पांगा	पांगामि
6.	नगा	नगामि
7.	नर	नरमि
8.	संक्क	संक्कमि
9.	ख्वना	ख्वनामि

इसी प्रकार प्राचीन समय से रहते आए हुए नेवारी जाति की प्रजा को नेवार, नेवा: या नेपा: मि (नेपालमि) कहां गया होगा।

2:1:2 - नेवारी जाति में अन्य जातियों का प्रवेश

नेपाल में नेवारी जाति क्राइस्ट से 600 साल पहले ही निवास करते थे। इतिहास शिरोमणि बाबूराम आचार्य के अनुसार मङगोल नस्ल के नेवाङ/नेवाहाङ /नेवा: लोग चीन के कांसु प्रांत तथा उत्तर-पूर्व तिब्बत देश के दक्षिण और पूर्व अर्धवृत्त क्षेत्र से नेपाल उपत्यका में प्रवेश किया था जो कि आज के आदिवासी नेवार समुदाय माने जाते हैं। नेपाल का काठमांडू उपत्यका भौगोलिक अनुकूलता, प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ यहां की उर्वर भूमि तिब्बत और भारत के मध्य वाणिज्य व्यापार का मूल केंद्र के रूप में विकसित था। इसलिए अन्य राज्य के शासकों ने इस जगह में अपना राज्य स्थापित किया। इतिहासविदों के अनुसार गोपाल राज वंशावली द्वारा नेपाल में शासन शुरू हुआ जो कि यह लोग अपने आप को श्री कृष्ण की संतान मानते थे। तत्कालीन समय में उनके रोजगार का साधन पशुपालन था। काठमांडू उपत्यका और इसके आसपास के स्थान में वर्तमान समय में भी गोपाल वंश के वंशज रहते हैं। काठमांडू के सापू:, फर्पिंग, कीर्तिपुर एवं थानकोट में ग्वा:, पालुङ, चित्लाङ, तिस्टुङ के गोपालीयों को गोपालवंश के रूप में स्वीकार करते हैं।[1]

गोपाल वंशावली के बाद नेपाल में महिषपाल वंशावली ने शासन किया। तत्पश्चात नेपाल के पूर्व भाग से आए हुए किरात शासकों ने नेपाल में 1903 वर्षों तक शासन किया। किरात वंश मङगोल नस्ल के थे। कुछ विद्वानों का मत है कि किरात काल को एक पौराणिक युग कह सकते हैं, इसका कारण यह है कि उस समय के उपलब्ध अभिलेखों के अनुसार किरात वंश ने नेपाल को संगठित राज्य व्यवस्था के रूप में संचालित किया जाता था। किरात काल के बाद 484 ईसा पूर्व में प्रवेश किए हुए लिच्छवि शासकों ने

1. तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपालभाषा साहित्यको इतिहास/ p-22

460 ई.सं. से ही अपना शासन नेपाल उपत्यका में आरंभ किया था।[1] कई स्वदेशी तथा विदेशी विद्वानों का कहना है कि प्राचीन किरात और लिच्छवि शासकों के वंशज वर्तमान में नेवार जाति के लोग है। लिच्छवि शासन के समय को ऐतिहासिक माना गया है इसका कारण यह है कि तत्कालीन समय से ही ऐतिहासिक धरोहर के तौर पर विभिन्न अभिलेख उपलब्ध हुए। यह काल में संस्कृत भाषा के साथ-साथ नेवारी भाषा में लिखित बहुत से अभिलेख प्राप्त हुए। इस बात से यह अनुमान लगा सकते हैं कि नेवारी भाषा लिच्छवि काल के पूर्व ही विकसित हो चुकी थी। 13वीं शताब्दी के आरंभ में लिच्छवि शासन का अंत होकर मल्ल शासन का प्रारंभ हुआ और यह काल में नेवारी जाति तथा भाषा को आजादी प्राप्त हुई क्योंकि मल्ल राजाओं ने नेवारी भाषा को मुख्य भाषा के रूप में स्वीकार किया। केवल भाषा ही नहीं किंतु नेवारी संस्कृति, साहित्य का यथेष्ट विकास एवं विस्तार किया।

इस प्रकार विभिन्न समय में आए हुए शासक, नेपाल के उत्तर दक्षिण दिशा से आई हुई विविध जाति (आभीर, गोपाल, महिषपाल, किरात, लिच्छवि, शाक्य, ठकुरी, वृज्जि, गुप्ता, मल्ल) की जनता आदि के यहां की मुख्य आदिवासी नेवाङ /नेवाहाङ/नेवा: मङगोल समुदाय की प्रजा होते हुए भी उनके नेपाल उपत्यका में बसोबास से प्रत्येक जनजाति के समुदाय को नेवार संज्ञा से संबोधित किया जाने लगा। इस प्रकार नेवार जाति में अन्य शासकों से पराजित हुए राज परिवार, भारदार, प्रजा व रैती लोग विलीन होकर नेवार जाति में सम्मिलित हो गए। "जैसे हरिसिंहदेव तिरहुत सिमरौन गढ़ के राजा थे। यह सिमरौन गढ़ वर्तमान समय में नेपाल का बारा जिला में स्थित है। तत्कालीन राजा हरिसिंहदेव ने अपनी हार स्वीकार कर भक्तपुर में शरण ली थी। यह राजा राजपूत थे। जब राजा भक्तपुर दरबार में शरण लेने जा रहे थे तब बीच राह उनका देहांत हो गया तत्पश्चात उनके पुत्र ने भक्तपुर दरबार में शरण लिया। नेवारी भाषा में 'रा' को ला बोला जाता है। इसलिए राजपूत शब्द 'लायपू' कह लाया गया। इस तरह लायपू की सभी संतान नेवार जाति में संविलीन हो गए। इसी तरह मल्ल राजा भुपतिन्द्र मल्ल के समय में गुजरात प्रांत से वैद्य बुलाए गए थे और वह राजवैद्य के रूप में प्रस्थापित हुए तथा उनके साथ आए हुए जनजाति के लोग नेवार समुदाय में संविलीन हो गए।"[2]

2:1:3 - नेवारी जाति के प्रमुख निवास क्षेत्र

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक नेवारी जाति की अधिकतम जनसंख्या काठमांडू उपत्यका में ही निवास करते आए हैं। CBS 2011 के तथ्यों के अनुसार नेवार जाति की कुल जनसंख्या 13,21,933 है, जो नेपाल देश की कुल जनसंख्या से 5.2 प्रतिशत है। नेवार जाति की कुल जनसंख्या में से 47%

1. तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपालभाषा साहित्यको इतिहास/ p-23
2. महर्जन राजेंद्र/ हाम्रो संस्कृतिक पहिचान तथा परंपरागत बाजाहरू/ p-22

अर्थात 5,82,370 लोग काठमांडू उपत्यका में निवास करते हैं। बाकी जनसंख्या नेपाल देश के अन्य प्रमुख व्यापारिक केंद्र एवं शहरों में निवास करते हैं। अर्थात काठमांडू, भक्तपुर, ललितपुर (पाटन) में सीमित न होकर देश के अन्य स्थान जैसे बनेपा, धुलिखेल, दोलखा, सिंधुपालचौक, नुवाकोट, मकवानपुर इत्यादि शहरों में फैल चुके थे जो वर्तमान के मध्यमाञ्चल विकास क्षेत्र में स्थित है। नेपाल के पूर्वी क्षेत्र में अन्य जातियां जैसे खंबूवान, लिंबूवान और पश्चिम क्षेत्र में मगरात जातियों का स्थान माना जाता हैं। उसी प्रकार नेवारी जाति भी स्वयं को प्राचीन काल के गोपाल, महिषपाल, किरात, लिच्छवि, ठकुरी तथा मल्लकाल के शासन से अपना प्रभुत्व मानती हैं। "नेपाल के उत्तर भाग में भोट के दिगार्चे, दक्षिण भाग में तराई के थोरी जंगल, पूर्वी क्षेत्र में दूधकोशी और पश्चिम क्षेत्र में त्रिशूलीगंडकी तक फैली हुई प्राचीन नेवार भूमि नेपाल मंडल को आज नेवार जाति की आदिभूमि मानते हैं। इस बात को 2007 ई.स. में नेवा:देय दबू(नेवार समुदाय का राष्ट्रीय संगठन) ने चतुर्थ राष्ट्रीय सम्मेलन में घोषणा की थी।"[1]

व्यापार व्यवसाय के रूप में विकसित किए हुए नेवार लोग नेपाल देश के विभिन्न भूभाग और तिब्बत तक भी पहुंच गए थे। मध्य काल के अंत में शाह राजा के प्रवेश के बाद उपत्यका मैं स्थित नेवार जाति की प्रजा नेपाल के विभिन्न स्थानों में बसने लगे। वर्तमान नेपाल के 75 जिले तथा भारत देश के सिक्किम तथा पश्चिम बंगाल, भूटान देश एवं चीन के खासा प्रदेश तक नेवारी जाति के लोग बसने लगे। वर्तमान समय में विभिन्न देश जैसे कि अमेरिका, बेलायत, केनेडा, जर्मनी, जापान, ऑस्ट्रेलिया, कोरिया आदि देशों में नेवार जाति के लोग स्थाई हो चुके हैं।

नेपाल मण्डल को तीनों उपप्रदेश के अनुसार जिलों में वर्गीकृत किया गया है जो निम्नानुसार है-

1. भित्री (3 जिले): कान्तिपुर, ललितपुर, भक्तपुर
2. मध्य (4 जिले): काभ्रे, सिंधु, नुवाकोट, मकवानपुर
3. बाह्य (5 जिले): धादिङ, रसुवा, दोलखा, रामेछाप, सिन्धुली

CBS; 2003 श्रोत के अनुसार नेवार जाति के प्रमुख 12 जिलों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है [2]:

1. तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपालभाषा साहित्यको इतिहास/ p-26
2. तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपालभाषा साहित्यको इतिहास/ p-28

क्रम	जिल्ला	नेवारी जनसंख्या	शहर की जनसंख्या	गाँव की जनसंख्या
1.	काठमांडौ	320244	236047	84197
2.	ललितपुर	136200	81661	54539
3.	भक्तिपुर	125926	93197	32729
4.	काभ्रे	50263	22771	27492
5.	सिंधुपलाञ्चोक	33924	00	33924
6.	धाडिङ	32429	00	32429
7.	रामेछाप	29931	00	29931
8.	मकवानपुर	26764	10466	16298
9.	नुवाकोट	21927	4776	17151
10.	सिन्धुली	18164	4530	13634
11.	दोलखा	15837	4490	11347
12.	रसुवा	1251	00	1251
13.	**कुल संख्या**	**1245232**	**578545**	**666687**

12-जिलों में नेवारी जनसंख्या के निवास के विवरण पश्चात नेपाल के पांच विकसित क्षेत्रों की नेवारी जनसंख्या का विवरण CBS; 2003 के अनुसार इस प्रकार है [1]:

क्रम	विकास क्षेत्र	हिमाल	पहाड़	तराई	जनसंख्या
1.	पूर्वाञ्चल	12159	70396	92402	174957
2.	मध्यमाञ्चल	50487	854569	64859	969915
3.	पश्चिमाञ्चल	259	112094	33315	145668
4.	मध्य पश्चिमाञ्चल	499	9408	13340	23247
5.	सुदूर पश्चिमाञ्चल	290	2643	4213	7146
6.	**कुल जनसंख्या**	**63195**	**1046467**	**190576**	**1321933**

नेपाल के पांच विकसित क्षेत्रों में नेवारी जनसंख्या का विवरण यह दर्शाता है कि ज्यादातर जनसंख्या नेपाल के मध्यमाञ्चल विकास क्षेत्र (पहाड़ी भाग) में स्थाई हो चुकी है। प्रस्तुत तथ्य से हमें यह ज्ञात होता है कि मध्य पहाड़ी स्थान ही नेवारी जाति का मुख्य स्थान है।

नेवारी जनसंख्या के 12 जिले एवं पांच विकास क्षेत्र के विस्तृत विवरण के बाद सोधार्थिनी को नेपाल के अन्य कुछ मुख्य जातियों की तुलना में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में नेवारी जाति की जनसंख्या का CBS; 2003 के विवरण प्राप्त होता है जो निम्नानुसार है [2]:

क्रम	जाति	शहरी क्षेत्र	ग्राम्य क्षेत्र	कुल जनसंख्या
1.	क्षेत्री	728907	3669146	**4398053**
2.	ब्राह्मण	875720	2351183	**3226903**
3.	मगर	328120	1559613	**1887733**
4.	थारू	82629	1654841	**1737470**
5.	तामाड़	202556	1337274	**1539830**
6.	नेवार	641963	679970	**1321933**

उल्लेखित विवरण के अनुसार नेवारी जाति की केवल 38007 जनसंख्या शहरी क्षेत्र से ग्रामीण क्षेत्र में ज्यादा है। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है की अन्य जातियों की तुलना में नेवारी जाति शहरोंमुख जाति है।

2:1:4 - नेवारी भाषा एवं लिपि

1. तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपालभाषा साहित्यको इतिहास/ p-29
2. तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपालभाषा साहित्यको इतिहास/ p-29

नेवारी भाषा(नेपाल भाषा) चीन-तिब्बती भाषा परिवार के अन्तर्गत आने वाली पाँच भाषाओं में से एक है और इसका लिपिबद्ध प्रमाण भी प्राप्त है। साधारण बोलचाल में नेवारी लोग अपनी मातृभाषा को 'नेवा : भाय' कहते है, किन्तु अन्य भाषाभाषी के लोग नेवारी/ नैवार भाषा/ नेपाल भाषा आदि से संबोधित करते हैं और औपचारिक रूप में नेवारी भाषा को नेपाल भाषा से ही सम्बोधित करते है। मुख्य रूप से नेवारी जाति में प्रचलित नेपाल भाषा को प्राचीन काल से विभिन्न लिपियों में लिखा गया है जैसे- रञ्जना, भुजिंमोल, प्रचलित, गोलमोल, लितुमोल, पाचमोल, क्वंयमोल, हिंमोल, कुंमोल इत्यादि। इन सभी लिपियों में से प्रचलित तथा अधिकतर प्रयोग होने वाली लिपि हैं नेपाल लिपि, भुजिंमोल और रञ्जना। नेपाल लिपि और भुजिंमोल व्यवहार में अधिकतर प्रयुक्त की जाति है तथा मनमोहक एवं कलापूर्ण रञ्जना लिपि नेपाल देश के अतिरिक्त विदेशों में मांगलिक कार्य की अवधि में प्रयोग की जाती है। नेपाल लिपि जिसे नेवार अक्षर भी कहते हैं, का उपयोग मध्यकाल में केवल नेपाल भाषा के ग्रंथ लिखने के लिए ही नहीं किंतु अन्य भाषा जैसे कि मैथिली, भोजपुरी, संस्कृत, नेपाली इत्यादि भाषा-ग्रंथों के लेखन हेतु भी किया जाता था। नेपाल भाषा लिपि के अति प्राचीन ग्रंथ में सन् 907 मैं लिखा गया 'लङ्कावतार' माना जाता है।[1]

विशेष रूप से हिंदू धर्मावलंबी द्वारा प्रयोग नेवारी जाति में प्रचलित भुजिंमोल लिपि 11 वीं सदी से प्रचलन में आई होगी ऐसा माना जाता है। यह लिपि को अधिकतर प्राचीन ग्रंथ जैसे 'विचित्र कौतुक', 'हरमेखला', 'नारद संहिता', 'गोपालराज वंशावली' आदि ग्रंथों के लेखन हेतु उपयोग में लिया गया है। नेपाली जाति में प्रचलित तीसरी रञ्जना लिपि का प्रयोग भी 11 वीं शताब्दी के आसपास का माना गया है। यह लिपि का प्रयोग विशेष रुप से बौद्ध धर्मावलंबियों ने अपने धार्मिक, मांगलिक ग्रंथ के लेखन हेतु एवं मंत्र आदि कार्यों में किया है। प्राचीन समय से प्रचलित रञ्जना लिपि वर्तमान समय में भी उतनी ही प्रचलित है ऐसा मान सकते हैं इसका कारण यह है कि नेपाल संयुक्त राष्ट्रसंघ में नेपाल की सदस्यता प्राप्ति के लिए मौलिक लिपि के रूप में रञ्जना लिपि का ही प्रयोग किया गया था।

विद्वानों के मतानुसार नेवारी भाषा का प्रयोग 11 वीं सदी से पहले यानि लिच्छविकाल में उतना नहीं पाया गया। उस समय ज्यादातर अभिलेखों में संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है। जैसे जैसे मध्य काल का समय बढ़ने लगा वैसे वैसे नेपाल भाषा का प्रयोग बढने लगा और संस्कृत भाषा का प्रयोग शिथिल होने लगा। मल्ल काल के प्रारम्भिक राजा जयस्थिति मल्ल के शासन काल में प्रत्यक्ष रूप में तत्कालीन आवश्यकता तथा शासकों की रुचि अनुसार अन्य भाषा के प्रसिद्ध ग्रन्थों की टीकानुवाद, भाषानुवाद के साथ साथ वंशावली तथा घटनावलियों को भी नेपाल भाषा के माध्यम से लिखना शुरू

1. तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपालभाषा साहित्यको इतिहास/ p-51

किया गया संभवतः इसी समय से सर्जनात्मक कार्य जैसे गीतों का लेखन भी शुरू हुआ होगा। वि.सं. 1290 के राजा अभय मल्ल के पाटन मोतीटएस्थित शिलालेख नेवारी भाषा में पाया गया है।[1] प्रस्तुत उल्लेखित शिलालेख के अनुसार नेवारी भाषा का प्रचलन मध्य काल के प्रारंभ से माना जा सकता है। मध्यकाल में मल्लकाल के राज्य विस्तार एवं व्यापार के लिए उपत्यका से बाहर जाने के क्रम में नेपाल भाषा का भी प्रभाव केवल उपत्यका में सीमित ना रहकर नेपाल के अन्य भू-भागों में फैलने लगा।

मध्यकाल में बोली तथा लेखन कार्य में सक्रिय एवं अत्यंत प्रचलित नेवारी भाषा राजा पृथ्वीनारायण शाह के राज्य काल से आधुनिक काल तक अपना मज़बूत प्रभाव बनाने में सफल रही। शाह वंश के राजाओं की नेवारी भाषा के प्रति भावना सराहनीय थी। वि.स. 1903 के पश्चात जब राणा काल का शासन प्रारंभ हुआ तब से नेवारी भाषा को प्रोत्साहन मिलना अल्प हो गया। शोधार्थिनी का मानना है कि मध्य काल और शाह काल के प्रारंभ में नेवारी भाषा की उन्नति एवं विस्तार अधिक मात्रा में हुआ है एवं वही विकास राणा काल के समय में शिथिल हो गया तथा लेखन और प्रकाशन की संख्या में अभाव होने लगा तथापि कुछ विद्वानों द्वारा लिखित महाकाव्य प्रस्तुत काल में उपलब्ध है जैसे चित्रधर दृश्य का 'सुगत सौरभ' आदि। वि.सं. 2007 में प्रजातंत्र का आरंभ होने से पुन: नेवार भाषा और साहित्य का विकास होने लगा। विभिन्न संस्थाएं जैसे आशा सफूकुथी, नेपाल भाषा परिषद आदि की स्थापना हुई। विभिन्न प्रकार के पुस्तकालय, साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएं, नाटक, कथा, गीत संग्रह, उपन्यास आदि का प्रकाशन हुआ जो वर्तमान समय में भी निरंतर चलन में है। यही व्यवस्थित कार्य होने के कारण आज संपूर्ण नेपाल में नेवारी भाषा बोलने वाली जनसंख्या अल्प होते हुए भी नेवारी भाषा का अपना अलग एवं उच्च स्थान बनाए रखना सफल हुआ।

2:1:5 - नेवारी जाति के धर्म

नेवारी जाति में ज्यादातर दो धर्म हिंदू एवं बौद्ध धर्म का अनुसरण किया जाता है। स्वयंभू महापुराण के अनुसार नेपाल देश की उत्पत्ति के साथ साथ बौद्ध धर्म, संस्कार और संस्कृति की उत्पत्ति एवं प्रचलन बढ़ने लगा था। "परापूर्व काल में *विपश्वि तथागत* तपस्वी ने पानी से भरे हुए उपत्यका में एक बीज डाला जिसके परिणाम स्वरूप स्वयंभू धर्मधातु(Stupa) ज्योतिरूप की उत्पत्ति हुई, जिसके दर्शन हेतु चीन के "महामञ्जुश्री" आए थे। जिन्होंने सभी पुण्यात्मा स्तूप के दर्शन कर पाएं उस उद्देश्य से अपनी शक्ति द्वारा उपत्यका का सभी पानी बाहर निकाला और मञ्जुपट्टन शहर की स्थापना की।"[2] इन

1. नेपाल परिचय/ p-27
2. ब्रजाचार्य, मदनसेन/ नेपा: गा: या: नेवा: बौद्ध संस्कृति लोकबाजा/ p-3

तथ्यों के आधार पर बौद्ध धर्म एवं संस्कृति का सबसे पहले बीजारोपण नेपाल में 'महामंजुश्री' ने किया ऐसा माना गया है। गोपालराज वंशावली में कुछ विद्वानों के मताअनुसार शैवधर्म के बारे में उल्लेख किया गया है साथ ही नेपाल के आदिवासी नेवारी जाती बौद्ध धर्मी होने से बौद्ध धर्म का भी उसी समय से होना अनुमान किया जा सकता है।

नेपाल के अन्य लिच्छवि काल जिनको ऐतिहासिक रूप में प्रमाणित काल कहा गया है। लिच्छवि काल के सर्वप्रथम शासक वृषदेव राजा का बौद्ध शासक के रूप में जयदेव के समय में रचित पशुपति अभिलेखों में उल्लेख मिलता है। विद्वानों ने लगभग 2000 वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म संबंधित ग्रंथ "दश भुमीश्वर" का अनुसंधान प्रस्तुत किया है। इस अनुसंधान को एशियाई लिपि में लिखें हुए पुराने ग्रंथों में से एक माना जाता है। "बौद्ध धर्म विचारक एवं धर्मरत्न शाक्य 'त्रिशूली' के अनुसार नेपाल के लुंबिनी स्थान में सिद्धार्थ गौतम का जन्म हुआ। गौतम बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के बाद उपत्यका में स्वयं दर्शन करने के लिए आए थे ऐसा 'त्रिपिटक' ग्रंथ में बताया गया है।"[(1)] धर्मरत्न शाक्य 'त्रिशूली' के अनुसार नेपाल में बौद्ध धर्म का अनुसरण दो या तीन हजार ही नहीं किंतु उससे पूर्व का अनुमानित कर सकते हैं। अन्य एक विद्वान डॉ. भद्ररत्न व्रजाचार्य के मतानुसार "मगध सम्राट अशोक नेपाल में स्वयंभू गुहेश्वरी दर्शन करने हेतु आए थे और उन्होंने विभिन्न स्थानों में बौद्ध चैत्य(मंदिर) की स्थापना की। सम्राट अशोक ने तत्कालीन समय में अपनी पुत्री चारुमति का विवाह नेपाल के देव पाल के साथ किया।"[(2)] इन बातों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आज से 2300 वर्ष पूर्व नेपाल में बौद्ध धर्म प्रचार में था।

तत्पश्चात नेपाल का मौलिक बौद्ध धर्म लिच्छवि शासनकाल में सनातन धर्म के साथ मिश्रित होने लगा। नेपाल की आदिवासी नेवार जाति का धर्म बौद्ध होने के कारण वर्तमान समय में भी यही परंपरा कायम रही है। विभिन्न शासन काल में अन्य जातियों के रीति-रिवाज, परंपरा, संस्कृति के साथ सम्मिलित होते हुए भी अपनी परंपरा में टिके रहने में सफल रही है। काठमांडू उपत्यका एवं उपत्यका से बाहर रहने वाले नेवारी जाति जैसे ज्यापु, स्यस्य, नौ, कौ, द्रिपा, कुलु, पुं, सायमी, जोगी, शाक्य, वज्राचार्य, शिल्पकार, ताम्राकार, शिलाकार, बुद्धाचार्य आदि आज भी बौद्ध संस्कार का अनुसरण करते आए हैं तथा कुछ कुछ संस्कारों में हिंदू धर्म का भी प्रभाव देखने को मिलता है।

बौद्ध धर्म के मुख्य देव–देवियों के रूप में संबर, महासंबर, व्रजदेवी, योगिनिगण इत्यादि है। इस धर्म में मुख्य रूप से गृह्यपूजा और चर्या नृत्य करके भगवान की आराधना करते है। बौद्ध धर्म में मनाए जाने वाले विभिन्न चाड पर्व तथा जात्रा मेला में सांगीतिक माहौल भी भिन्न पाया जाता है। पर्वों में प्रयुक्त वाद्य

1. ब्रजाचार्य, मदनसेन/ नेपा: गा: या: नेवा: बौद्ध संस्कृति लोकबाजा/ p-6
2. ब्रजाचार्य, मदनसेन/ नेपा: गा: या: नेवा: बौद्ध संस्कृति लोकबाजा/ p-7

तथा गान शैली भी अलग होती है। बौद्ध नेवारी लोक के जितने भी पूजा कार्य संपन्न होते है वे सभी बौद्ध धर्म के उच्च पदाधिकारी बज्राचार्य द्वारा संपन्न होता है। अन्य नेवारी जाति के समूह जो हिंदू धर्म का अनुसरण करते है, उनके समूह पुजारी ब्राह्मण होते है।

बौद्ध धर्म दो प्रकार का होता है एक बज्राचार्य पुरोहित द्वारा संचालित और दूसरा लामा पुरोहित द्वारा संचालित। बज्राचार्य पुरोहित द्वारा संचालित बौद्ध धर्म अधिकतर काठमांडू, पोखरा, पाल्पा, धनकुटा, भोजपुर आदि स्थानों में निवास कर रहे नेवारी जाति की प्रजा ने अपनाया है। अन्य, लामा पुरोहित द्वारा संचालित बौद्ध धर्म नेपाल के उत्तर स्थान में निवास कर रहे तामाङ, थाक्से, थकाली, मगर, गुरुङ, शेर्पा, राई, लिंबू आदि जाति की प्रजा ने अपनाया है। उत्तरी क्षेत्र का बौद्ध धर्म तिब्बती बौद्ध धर्म से ज्यादा प्रभावित हुआ है। नेपाल का संपूर्ण भाग उत्तरी हिमालय भू-भाग से जुड़ा होने के कारण वहां के निवासियों का तिब्बती निवासीयों के धर्म के साथ–साथ व्यापारिक संबंध, देव–देवी, रीति- रिवाज, परंपरा, त्यौहार, पर्व आदि से मिलता-जुलता है। वर्तमान समय में यातायात की सुविधा की वृद्धि होने के कारण एवं अंतर्राष्ट्रीय गतिविधि के कारण काठमांडू उपत्यका में और उसके आसपास के स्थानों में उत्तरी बौद्ध धर्म के उपासक एवं उपासिका और लामा एवं लामिनी की संख्या पर्याप्त मात्रा में देखने को मिलती है।

2:1:6 - नेवारी जाति में उपजातियां

नेवारी जाति विभिन्न उप-जातियों से भरपूर जाति है। अधिकतर दो धर्म हिंदू एवं बौद्ध धर्म मानने वाले नेवारी जाति की धर्म के आधार पर भी उपजातियां पाई जाती है। जैसे हिंदू धर्मावलंबी के अंतर्गत राजोपाध्याय, विभिन्न थरी के श्रेष्ठ, कपाली आदि तथा बौद्ध धर्मावलंबी के अंतर्गत बज्राचार्य, शाक्य, उदास, मानन्धर, महर्जन आदि। हिंदू मार्गियों ने अपने पुरोहित के पद पर राजोपाध्याय को अपनाया है और बौद्ध मार्गियों ने अपने पुरोहित के पद पर बज्राचार्य को माना है। दोनों संप्रदाय में अलग-अलग प्रकार से विभाजन हुआ है। हिंदू संप्रदाय में वर्णाश्रम धर्म के अनुसार और बौद्ध संप्रदाय में वर्णव्यवस्था धर्मानुसार ना होते हुए भी जाति विभाजन हुआ है।

जाति विभाजन के इतिहास पर शोधार्थिनी ने पाया है की मल्ल काल के जयस्थिति मल्ल के द्वारा नेपाल में हुए जातिय विभाजन से पूर्व ही वहां पर जातिय विभाजन स्थित था। इसका प्रमाण थानकोट के शिलालेख में प्राप्त लिच्छवि काल के जातीय विभाजन से प्राप्त होता है। "जयस्थिति मल्ल ने विदेशी विद्वानों की सहायता से प्राचीन जातीय व्यवस्था का संशोधन कर लिच्छवि काल की 18 जातियों में से 725 उपजातियां प्रयुक्त करी। इन्ही जाति के आधार पर प्रजा के काम, कपड़े, रहनसहन, संस्कार,

इत्यादि के राजकीय नियम भी बनाएं गए।"(1) जैसे मंत्री को अमात्य, सेना प्रमुख को प्रधान, राजभंडार को संभालने वाला राजभंडारी, राज परिवार के शिक्षक को जोशी, नेवार श्रमिक वर्ग को नापित, माली, चित्रकार, नकर्मी, रञ्जितकार, तंडुकार तथा खेती के काम करने वाले को महर्जन कहा गया। "इन प्रत्येक जातियों को तीन समूहों में विभाजित किया गया था सर्वश्रेष्ठ, मध्यम और निम्न। सर्वश्रेष्ठ जाति के अंतर्गत पुरोहित जाति जैसे बज्राचार्य तत्पश्चात मध्यम जाति के अंतर्गत किसान जाति आई जैसे ज्यापू लोग, मर्हजन, ढंगोल, प्रजापति आदि एवं अंतिम निम्न जाति में जुगी, कामी, पोडे, नाय आदि जिनका पेशा सिलाई, साफ-सफाई, संगीतकार इत्यादि होता था उन्हें सम्मिलित कर दिया गया।"(2)

2:1:7 - नेवारी वेशभूषा

नेपाल एक बहूजातिय, बहुभाषीय, तथा बहुसांस्कृतिक देश होने के कारण विभिन्न वर्ण तथा विभिन्न वेशभूषा में सुसज्जित लोग देखने को मिलते हैं। इन्हीं जातियों में से नेवारी जाति का भी अपना अलग ही रहन-सहन, वेशभूषा एवं पहनावा भिन्न-भिन्न है। नेवरी जाति के पुरुष तथा महिलाओं की वेशभूषा इस प्रकार है:

पुरुषों की वेशभूषा: दौरा सुरुवाल, कमीज सुरुवाल, ईस्टकोट, ज्वारी कोट, पटुका, ढाका टोपी आदि।

महिलाओं की वेशभूषा: हाकू-पटासी, घर में तैयार की गई साड़ी (थाना पर्सि), मिसा लँ (चौबंदी चोलो), जनै (पटुका), गाचा (खास्टो), दोपटा पर्सि (विवाह में प्रयोग सारी), तास या मिसा लँ (चोली) इत्यादि।

वर्तमान समय में नेवारी जाति के पुरुष तथा महिलाएँ अपने प्राचीन भेशभूषाओं के साथ-साथ अन्य पहिरण भी पहनना पसंद करते है जैसे साड़ी के विभिन्न प्रकार, कुर्ती-सलवार, बखखु, म्याक्सी, मिडी तथा पुरुषों ने विभिन्न प्रकार के टी-शर्ट, पेंट, कोट इत्यादि पहनना शुरू कर दिया है। नेवारी जाति अपने अलग-अलग प्रकार के पहनावा के साथ-साथ सुंदर गहनों से भी अपनी पहचान को दर्शाने में प्रवल है। नेवारी गहनों, आभूषणों में पुरुष ज़्यादातर सिखः, अंगु(अंगूठी), कंगन इत्यादि पहनते है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं के गहने अधिक उपयोग में लिए जाते है, जैसे:-

- "गले में लगाए जाने वाले गहने- सिखः, जन्तर, तायः, भिम्पु माः, तकिमा, म्वः, माः, न्यापु सिखः
- सिर में पहनने वाले गहने- सिरबिन्द, सचिका, लूँ स्वांः, वह स्वांः, सपः स्वां (सपः तिसा)
- अंगूठे में पहनने वाले गहने- अंगु के विभिन्न प्रकार
- हाथों में पहनने वाले गहने- बाइ, चुरी

1. प्रजापति, सुभाष/ संस्कृति भित्र/ p-45
2. Grandin, Ingemar/ Music and Media in Local Life/ p-xliii

- कानों में पहनने वाले गहने- तुकि, कल्या, मार्चा:, माकसि, यार्लिङ इत्यादि।"[1]

नेवारी भाषा में इन सभी गहनों को 'तिसा ज्वल' कहते है। यह समस्त गहनें सोने तथा चाँदी से बनाए जाते हैं। नेवारी परंपरा में विभिन्न चाड, पर्व, त्यौहार, जात्रा आदि प्रत्येक वर्ष दरमियान क्रमशः मनाने की परंपरा है। इन सभी त्योहारों में नेवारी भेषभूषा और गहनों को पर्व अनुरूप पहन कर अपनी पहचान कायम रखने में सफल है।

2:1:8 – नेवारी जाति की गुठी परंपरा

नेवारी संस्कृति में विभिन्न प्रकार के गुठी होते है। यहाँ गुठी का सामान्य अर्थ 'समूह' होता है। गुठी पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों प्रकार के होते है। गुठी का मुख्य कार्य अपनी पारिवारिक एवं सामाजिक गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालन करना, परापूर्व काल से चली आ रही संस्कृति का संरक्षण करना, आदि है। प्राचीन काल से ही सुचारू रूप में चली आ रही इस गुठी संस्थान के विभिन्न प्रकार[2]निम्नलिखित है:

1. सनां गुठी और सी गुठी
2. देवाली गुठी
3. नासः घ गुठी

इस गुठी संस्थान के विभिन्न प्रकार का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:

1) **सनां गुठी और सी गुठी:** यह दोनों सनां गुठी और सी गुठी का संबंध मृत्युसंस्कार से है। सी गुठी शव की अंतिम यात्रा एवं आर्यघाट (स्मशान गृह) में शव के अंतिम संस्कार की विधि करती है। अन्य सनां गुठी के सदस्य शव की अंतिम यात्रा के समय जरूरी साधन-सामग्री जैसे लकड़ी, मटका, धूप, दिया, वाद्यवृंद को बुलाना आदि की व्यवस्था करते है। सनां गुठी और सी गुठी नेवारी समाज के प्रत्येक दो तीन टोल(Society) से मिलकर बनी होती है। यह नेवारी जाति की विशेषता है जो अन्य जातियों में बहुत कम देखने को मिलता है।
2) **देवाली गुठी:** देवाली गुठी पारिवारिक गुठी है। इस गुठी में एक ही वंश की संताने होती है। प्रत्येक वर्ष एक बार सारे परिवार जन मिलकर अपने कुल देवता की पूजा करते एवं भोजन करते है। इस गुठी के अध्यक्ष को मुखिया(थकाली) का स्थान दिया जाता है। थकाली देवपूजा आयोजीत करते है एवं थकाली जब तक जीवित रहता है तब तक कुल देवता की नित्य पूजा

1. http://youtu.be/-qsFFNZGwnU
2. तंडुकार, सरोजिनी/ बागमती अञ्चलको लोकगीतबारे एक झलक/ p-18

उन्हीं के घर में रख कर की जाती है। देवाली पूजा में वाद्य वादन भी प्रयोग किया जाता है जिससे पूजा की शोभा में वृद्धि होती है।

3) **नासः घः गुठी:** नासः घः गुठी को नेवारी जाति में नाटेश्वर भगवान का दर्जा दिया गया है। कोई भी वाद्य वादन एवं दाफा गायन सीखने से पहले और सीखने के बाद नासः घः की पूजा विधि से श्रद्धा आराधना की जाती है। इसी गुठी को नासः घः गुठी कहते है। अगर देखा जाए तो प्रत्येक दाफा समूह, भजन समूह को नासः घः गुठी कह सकते है, इसका कारण यह है की नासः भगवान को साक्षी मानकर, अनुमति प्राप्त कर ही संगीत आराधना प्रारम्भ होती है। इसलिए नेवारी समाज में प्रत्येक संगीत गतिविधियां करने वाले प्रत्येक पारंपरिक समूह को नासः घः गुठी के रूप में देख सकते है।

इसी प्रकार शोधार्थिनी ने अन्य छोटे मोटे गुठी समूह भी पाएँ है जैसे होली गुठी(जो होली त्योहार के समय अपनी गतिविधियां करती है), ससु गुठी(जो वर्ष के अन्त्य समय फागुन, चैत्र माह के समय अपनी नज़दीकी सरस्वती मंदिर में हर्षोल्लास के साथ तथा वाद्य वादन कर पूजा आराधना कर और प्रसाद ग्रहण कर उत्सव मनाते है), च: रे गुठी (चौथी पूजा की गुठी), सिनाज्याः गुठी (आषाढ़ माह में धान की खेती समय में गतिविधियां करती है) इत्यादि।

2:1:9 नेवारी जाति का 'नेपाल सवंत्'

"नेपाल के इतिहास में मुख्यतः चार संवत् का उपयोग पाया गया है। अधिल्लो(आगे का) लिच्छवि संवत्, पछिल्लो(पीछे का) लिच्छवी संवत्, नेपाल संवत् और विक्रम संवत्। 'सुमति तंत्र ग्रंथ' के आधार पर नेपाल संवत् में 802 अंक जोड़ने से शक संवत् बनाने का उल्लेख किया गया है और पछिल्लो संवत् मानदेव द्वितीय द्वारा प्रचलित किया हुआ मानदेव संवत् था।"[(1)] कुछ विद्वानों के मतानुसार और कुछ अभिलेखों के आधार पर लिच्छवि संवत् और मानदेव संवत् को एक संवत् ही माना गया है। इस आधार पर नेपाल में तीन संवत् हैं जिसमें लिच्छवि संवत्, नेपाल संवत् और विक्रम संवत् प्रचलित हुए। कुछ अनुसंधान के आधार पर लिच्छवि संवत् शक(नेपाल) संवत् के 17 माह पहले ही शुरू हुआ ऐसा प्रमाण प्राप्त हुआ है परंतु लिच्छवि संवत् की उत्पत्ति और प्रवर्तक के बारे में कोई निश्चित या ठोस तथ्य प्राप्त नहीं होता।

नेपाल संवत् का प्रारम्ह सन 879 अक्टूबर 20 में हुआ ऐसा अनुसंधानकर्ता किलहर ने बताया है और विक्रम संवत् 936 में नेपाल संवत् शुरू हुआ। लिच्छवि शासनकाल के पश्चात ठकुरी शासन काल में राजा राघवदेव के समय में नेपाल संवत् का प्रार्दुभाव माना गया है। राघवदेव के समय में एक व्यापारी,

1. प्रजापति, सुभाषराम/ संस्कृतिभित्र/ p- 27

कहीं शूद्र, कही कुम्हार, ज्यापू या कहीं गोपाल आदि वंशावली से संबंधित व्यक्ति शंखधर साखवा: ने उस समय ऋण में डूबे हुए जनता को ऋण मुक्त समाज बनाया था और नया संवत् प्रचलन में लाया गया था। नेपाल संवत् का उत्पत्ति क्षेत्र नेपालमंडल (काठमांडू) होते हुए भी इस संवत् का प्रयोग नेपाल के अन्य क्षेत्रों में तथा विदेशों जैसे भारत, तिब्बत के बीच विभिन्न कार्य जैसे प्रमाण पत्र, स्वर्ण मुद्राएं, भेंट आदि के साथ तथा संधि पत्रों में भी प्रयोग किया गया है। नेपाल में सन् 1903 से ही चंद्र शमशेर के शासन काल से विक्रम संवत् को सरकारी प्रयोजन में लाया गया था। इसलिए प्राचीन काल से प्रचलित लिच्छवि संवत् और नेपाल संवत् नेपाल का मौलिक संवत् माना जाता है।

नेपाल संवत् शाह वंश पृथ्वीनारायण शाह के शासन काल तक नेपाल के राष्ट्रीय संवत् के रूप में मान्यता प्राप्त संवत् था जब कि लुंबिनी बौद्ध विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डॉ. श्री त्रिरत्न मानंन्धर का मानना है- गरीब जनता को ऋण मुक्त एवं सामाजिक सेवाओं में उत्कृष्ट नमूना पेश कर नेपाल में मौलिक संबंध की शुरुआत का उच्च मूल्यांकन करके वि.सं. 2056 के वर्ष में प्रधानमंत्री कृष्णप्रसाद भट्टराई द्वारा 'शंखधर साख्वा राष्ट्रीय विभूति' की घोषणा की गई थी और वि.सं. 2065 के वर्ष में प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचंड द्वारा नेपाल संवत् को राष्ट्रीय संवत् की मान्यता प्राप्त हुई थी।

2:2 नेवारी संगीत का परिचय

नेपाल की विभिन्न जाति तथा जनजातियों में से एक जो प्राचीन काल से ही काठमांडू उपत्यका तथा आसपास के जिलों में निवास कर रहे है, वे आदिवासी नेवार जाति के लोग उपत्यका तथा आसपास के जिलों के मुख्य निवासी है। इन्हीं उपत्यका निवासी द्वारा गाए जाने वाले गीत-संगीत को नेवारी संगीत कहा जाता है जो नेपाल के अति प्रचलित विभिन्न प्रकार के लोक संगीत में से एक प्रचलित लोक संगीत का प्रकार है। नेवारी संगीत परंपरागत रुप से कई वर्षों से प्रचलन में रहा है। वर्तमान में प्राचीन समय की तरह प्रबल ना होते हुए भी इस लोक संगीत की परंपरा की नींव मजबूत मानी जा सकती है। इस लोक संगीत परंपरा की निरंतरता अधिकतर मौखिक रूप में पाई गई है। नेवारी संगीत की उत्पत्ति के विषय में कुछ विद्वानों का यह मत है की नेवारी जाति की उत्पत्ति के साथ-साथ नेवारी संगीत का भी जन्म हुआ होगा। नेपाल में लिच्छवि शासन काल तक संगीत के विषय में शोधार्थिनी को कोई ठोस प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ है। सातवीं शताब्दी के चिनिया ग्रंथों से संगीत के महत्व एवं संगीत की पुष्टि होती है जिसमें उपत्यका के निवासियों द्वारा ढोलक(धिमे) और झांझ बजाने का उल्लेख किया गया है।(1) अधिकतर विद्वानों का मानना है कि प्राचीन समय से प्रचलित नेवारी संगीत का विस्तृत प्रचार प्रसार मध्य काल में हुआ। 'नेपाल भाषा साहित्यको इतिहास' पुस्तक में पृष्ठ संख्या 104 में लेखक प्रा. प्रेमशांति तुलाधरने नेवारी गीत संगीत का संकलन करते हुए कहा है कि-

नेवारी गीत संगीत का संकलन एवं तथ्याङ्कन 1570 से मिलता है। 1570 के समय में 'प्रणमति श्री जुगपति...' नामक एक रचना प्राप्त हुई है। इसी प्रकार सन 1571 में चोगामके गढ बनाने के समय में रचित गीत 'अमल सहस्रनाम श्री बुङ्ग्लोक्येश्वर' और सन 1570 में एक अपूर्ण गीत, ऐसे कुल तीनों गीत पाटन(ललितपुर) के शासक राजाओं नरसिंह देव, राजा पुरन्द्रसिंह देव और राजा उद्धवसिंह देव के संयुक्त कार्यकाल (ई.स. 1560-1577) में विजय यात्रा संबंधी वीर रस भाव में लिखें हुए यह गीत प्राप्त होते हैं। उसी प्रकार राजा महेंद्र मल्ल ने ई.सं 1561-1574 समय के दौरान में नाम उल्लेखित किया हुआ किंतु वर्ष उल्लेखित नहीं किए गए ऐसे दो नेवारी गाने उपलब्ध है जो इस प्रकार है-

1) कपति माया नं केन्या है रामा....
2) मेव मदु जित छि शरण....

यहां उल्लेखित दोनों गानों में से प्रथम गीत पूर्णतः उपलब्ध है जो राग विभास और ताल प्रताल में उल्लेखित है-

1. Widdess Richard/Dapha: Sacred singing in a south asian city/ p-5

कपतीया माया नं केन्या है रामा ॥धु॥

न्हयवस जी दोन्या छिपाली मजोन्या सुखया रसतु लेन्यां।

लोभसतु दोन्या धिर तासे चोन्या जमया पास मखन्या ॥1॥

हितन जि कन्या न्हसस मखन्या आव नुगल मछिन्या

अनारी मनन लिमल मखन्या मखुल लपुस दुविन्या ॥2॥

पुराण आदिन तंत्र जपतप दक जीन बोन्या

न्हिनीछिया दिन खिउजुसेवन छि नाम काय मलान्या ॥3॥

छु याय दासनि छेमा जी पापीया कृष्णया दास नं ल्यानया ॥4॥

यह गाने का भावार्थ कुछ इस प्रकार है कि मानव श्री कृष्ण भगवान से कह रहा है कि यह मायावी दुनिया में वह फंस गया है इसलिए आप की भक्ति इच्छा अनुरूप नहीं कर पाता है, भक्ति नहीं कर पाने के कारण वह क्षमा प्रार्थी हैं। इस प्रकार यह गाना भक्ति रस प्रधान भजन है ऐसा शोधार्थिनी का मानना है। कई 'दाफा' (नेवारी संगीत प्रकार) गायकों का अनुमान है कि यह गीत महेंद्र मल्लने रचा है। मध्य काल के मल्ल शासन काल में ही अधिकतर नेवारी गीत संगीत का विकास हुआ है ऐसा माना जाता है इसलिए प्राचीन तथ्याङ्कन और अनुसंधानकर्ताओं में से कोई मल्ल राजा महेंद्र मल्ल को आदि कवि के रूप में तो कोई रण मल्ल(ई.स. 1481-1525) को प्रथम कवि स्वीकार करते हैं। परंतु दोनों राजाओं का अभिलेख दाफा भजन पुस्तक में पाई गई रचनाओं के आधार पर तुलना कि हुई है। इस प्रकार दोनों की तुलना में राजा महेंद्र मल्ल को ही आदि कवि के रूप में अधिकतर प्राथमिकता दी गई है।

मध्य काल के ही अन्य मल्ल राजा जगतज्योति मल्ल, जो उपत्यका भक्तपुर के राजा थे उनके शासनकाल में नेवारी कला संगीत के क्षेत्र में अनेकानेक विकास हुआ एवं नेवारी लोकगीतों को शास्त्रीय संगीत का उच्च स्थान दिया गया। भारत देश के भरतमुनि कृत्य नाट्यशास्त्र का नेपाल देश की नेवारी भाषा में पहली बार 'संगीतचंद्र' नामक ग्रंथ राजा जगतज्योति मल्ल और उनके पंडित वंशमणि ओभ्ला ने मिलकर(ई.स. 1606-1633) अनुवाद किया था।[(1)] यहां अनुवादित ग्रंथ में मुख्यतः भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' और अभिनव गुप्त के 'रस सिद्धांत' के सार के विषय में उल्लेख किया गया है। तत्पश्चात नृत्य, नाटक, अभिनय, रंगमंच इत्यादि के विषय में भी चर्चा की गई है। उक्त ग्रंथ की मदद से नेपाल में नाट्य और संगीत का विकास हुआ ऐसा माना जाता है। इस प्रकार 'गीतपञ्चाशिका' और 'सप्तताल गीत'

1. तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपालभाषा साहित्यको इतिहास/ p-92

ग्रंथ जो की मैथिली और संस्कृत भाषा में था, वह भी राजा जगतज्योति मल्ल ने ही लिखें थे।[1] संगीत ग्रंथ के साथ-साथ उन्होंने विभिन्न नेवारी भाषा के गीत भी लिखे हैं जिसमें से 'नानार्थपञ्चदश गीत' ग्रंथ है जिसमें 15 गाने लिखे हैं जिसको विभिन्न प्रकार में विभाजित किया गया है जैसे कि- देश भक्ति गीत, शृंगारिक गीत, ध्याचू (व्यंग्य) गीत और कुछ नीतिगत गीत। तदनुसार उन्होंने गीत संगीत को मनोरंजन के साथ-साथ समाज परिवर्तन कार्य के रूप में प्रस्तुत किया। मध्यकाल में ही एक और ग्रंथ 'गायनलोचन' का भी अनुवाद किया गया था। इस ग्रंथ को 'जितामित्र मल्ल' राजा द्वारा नेपाल भाषा में अनुवाद किया गया था। इस ग्रंथ में मुख्य राग रागिनी का परिचय, लक्षण, और गायन के समय के विषय में वर्णन किया गया है। विद्वानों का यह मानना है कि मध्यकाल में और भी दो-चार संगीत ग्रंथों का अनुवाद किया गया है उनमें से राजा जगतज्योति द्वारा अनुवाद किए गए ग्रंथ 'संगीत चंद्र' को ही मुख्य आधार ग्रंथ माना गया है।

मल्ल राजाओं के विभिन्न शासनकाल में नेवारी कला संगीत को साहित्य में उच्च स्थान प्राप्त था। एक के बाद दूसरे ऐसे क्रमशः अधिकतम मल्ल राजाओं का नेवारी संगीत में योगदान देखने को मिलता है। इसी क्रम में 17 वीं सदी को गीत, नाटक, साहित्य एवं लेखन कार्य के विकास का समय माना गया है। इस काल में केवल पुरुष ही नहीं किंतु महिलाओं की भी साहित्य लेखन में संलग्नता दिखाई देने लगी। जैसे राज परिवार से रानी राज्यलक्ष्मी, रिद्धिलक्ष्मी, भुवनलक्ष्मी, जयलक्ष्मी आदि और राज परिवार से बाहर के जनसाधारण में से केशव उदास, जगतकेशरी, वृषहर्ष आदि साहित्यकारों का जन्म हुआ। इस काल में साहित्यकार केवल मुक्तक, भजन और स्तुति लेखन परंपरा के साथ साथ गितीकथा, देशवर्णन, राजवर्णन उल्लेखित नाटक गीत गाने की परंपरा शुरू हुई ऐसा माना जाता है। जगत केशरी जैसे कवियों ने लोकगीतों को शास्त्रीय अंग की सहायता से गाने रचने की परंपरा की शुरुआत की। इस कारण इस युग को नेवारी साहित्य के साथ-साथ गीत संगीत के विकास की दृष्टि से भी विद्वान लोग मल्ल शासन काल को स्वर्ण युग मानते हैं। मल्ल राज्यकाल के बाद 18 वीं सदी आधुनिक काल का आरंभ था, जिसमें नेवारी साहित्य संगीत के विकास में कुछ कमी आने लगी। इसका कारण देश की राजनीतिक अस्थिरता, शासकों का बदलाव इत्यादि माना गया है। इस समय केवल दरबार के आश्रित पंडित, कवि तथा स्रष्टाएं अपनी कला विस्तार में सक्रिय पाए गए हैं।

नेवार समुदाय की प्रजा स्वयं को नेवारी लोक संगीत के क्षेत्र में समृद्धशाली मानते हैं। मुलतः नेवार जाति का व्यवसाय कृषि है और यह जाति सामूहिक जीवन व्यतीत करना पसंद करते हैं इसीलिए अपनी लोक कला और संगीत में समृद्धशाली हुए ऐसा शोधार्थिनी का मानना हैं। लोक संगीत लोक की

1. थायभु/ नेपाल पज्ञा-प्रतिष्ठान पत्रिका / p-77

अभिव्यक्ति के रूप में प्रकट होता है इसलिए नेवारी गीत संगीत में भी नेवार जाति की केवल भूगोल, सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक छाप ही नहीं किंतु पूरे इतिहास तथा लोक साहित्य में व्यक्त ना कर पाए, मन के घातप्रतिघात एवं शुक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति में पाई जाती है। नेवारी परंपरा में विकसित नेवारी लोकगीत के समय और वातावरण को निकटता से स्पष्ट देख सकते हैं। इस समुदाय में समयानुसार शास्त्रीय संगीत सुनने और सुनाने की परंपरा के साथ नेवारी समाज द्वारा रचित नेवारी लोकगीतों का समयानुसार अलग-अलग ऋतु, जात्रा, पर्व, मेला, उत्सव, संस्कार आदि के अनुरूप गाने बजाने की परंपरा चलती आई है। इन्हें परंपरा के अंतर्गत नेवारी संगीत विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है जैसे कि धार्मिक गीत, चर्या गीत, संस्कार गीत, चाडपर्व अंतर्गत(होली गीत, य: मरी गीत, मालश्री गीत) कार्यगत गीत (रोपाई गीत तुकाज्या गीत), सामयिक गीत, बारहमासे गीत, खेल गीत इत्यादि। नेवारी संगीत की मुख्य पहचान 'दाफा संगीत' है जो प्राचीन काल से प्रचार प्रसार में रहा है। यह संगीत शास्त्रीय संगीत से जुड़ा हुआ संगीत है। इस संगीत को विभिन्न रागों में गाया जाता है तथा भिन्न भिन्न प्रकार के ताल भी इसके साथ प्रयोग में लिए जाते हैं। कुछ प्रचलित ताल इस प्रकार है- प्रताल, चो ताल, पलेमा ताल, जति ताल, लं ताल, अस्तरा(ब्रह्म ताल) इत्यादि। संपूर्ण नेवारी संगीत में ताल वाद्य का महत्वपूर्ण स्थान है। नेवारी परंपरा के हर एक चाड पर्व-त्यौहार में गायन के भिन्न-भिन्न प्रकार के तथा अलग-अलग वाद्यों को बजाया जाता है। कुछ प्रचलित नेवारी वाद्यों के नाम इस प्रकार है- खिं वाद्य, घा: वाद्य, धिमे , पच्छिमा, भुस्या, ता:, मुहाली, बासुरी, पोंगा, नेकुं वाद्य इत्यादि। संपूर्ण नेवारी संगीत नेवारी समाज में मनाए जाने वाले चाड पर्व, संस्कार, उत्सव एवं त्योहार पर निर्भर है। आज के समय में अपनी संस्कृति एवं कला संगीत को संपूर्ण नेपाल में उच्च स्थान से सफल होने के कारण ही नेवार जाति की अपनी संस्कृति के प्रति प्यार, सम्मान और इसकी निरंतरता बनी रही है। इसलिए शोधार्थिनी का मानना है कि नेवारी संगीतकाल ही नेवारी संस्कार एवं संस्कृति को दर्शाता है। कुछ नेवारी मुख्य पर्व कुछ इस प्रकार है- विभिन्न स्थान में मनाया जाने वाला जात्रा पर्व, मोहनी(दशहरा), गाइजात्रा(सापारू), सोंति (दीपावली), य: मरी पुन्हि, घ्य: चाकू संल्हु, यन्ह्या पुन्हि, चैत्र दशै, होली इत्यादि।

नेवारी संगीत को अधिक प्रमाण में समझने के लिए उस में प्रयोग होने वाली भाषा और उसकी प्राचीनता को देख सकते हैं। वर्तमान में उपलब्ध हुए संगीत संकलन से उसकी स्थिति को जान सकते हैं। इस गायन शैली को आने वाले भविष्य में निरंतर रखने के लिए जो प्रयास हो रहे हैं- जैसे संगीत शिक्षण प्रणाली एवं व्यवस्था इत्यादि द्वारा नेवारी संगीत की मजबूती को परखा जा सकता है।

2:2:1 नेवारी संगीत में प्रयुक्त भाषाएं

नेवारी जाति में देखा जाए तो प्राचीन समय से ही विभिन्न धर्म तथा भाषा को अपनाया गया है। धर्म के पक्ष में देखें तो शैव, वैष्णव तथा बौद्ध धर्म का मिश्रण पाया जाता है और भाषा (बोली) में अपनी ही नेवारी भाषा बोली जाती है, परंतु ऐतिहासिक ग्रंथों में जैसे दाफा भजन ग्रंथ, अन्य भजन ग्रंथ, साहित्य पुस्तक, नाटक पुस्तक इत्यादि में संस्कृत और मैथिली भाषा का प्रयोग पाया गया है। कहीं-कहीं हिंदी भाषा में निबद्ध रचनाएं भी गाई जाती है। इस प्रकार नेवारी संगीत क्षेत्र में अन्य भाषा के समावेश को नेवारी संगीत की विशेषता के रूप में ले सकते हैं। नेवारी संगीत के जरिए नेवारी जाति के लोगों की उदार भावना को देखा जा सकता है। यदि अन्य भाषाओं में भगवान के अथाह गुणगान तथा भक्ति हो तो उस रचना को अपना ही समझ कर स्वीकार करके गाया है।

विभिन्न नेवारी साहित्यकार एवं विद्वानों का मानना है कि नेवारी संगीत के मजबूत आधार 'दाफा संगीत' में तीन भाषाओं का मिश्रण माना है। यह तीन भाषाएं नेवारी, संस्कृत और मैथिली हैं, इसका कारण है कि विभिन्न काल में अन्य राजाओं द्वारा विभिन्न मार्गों से नेपाल उपत्यका में प्रवेश। लेखक तुलाधार प्रेमशांति के अनुसार ई.पू. 542 के आसपास कौशल राजा विडुडभ ने कपिलवस्तु(नेपाल का पूर्वी स्थान) और मगध राजा अजातशत्रु ने वैशाली गणराज्य में आक्रमण करने के पश्चात वहां के शासक, शाक्य, कोलीय और बृजीयों उपत्यका में प्रवेश किया इसी तरह उत्तर भारत से लिच्छवि जाति की प्रजा भी विभिन्न समय में प्रवेश करने लगी। लिच्छवि जाति की प्रजा की बोलने की भाषा संस्कृतमूलक मगधी, प्राकृत आदि था। धीरे धीरे यह लोग उपत्यका के आदिम नेवार जाति की प्रजा के साथ व्यवहार एवं उनकी भाषा से मिलने लगे। फलस्वरुप संस्कृत एवं प्राकृत शब्दों को पर्यायवाची शब्द के रूप में लिया गया और समयानुसार संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का प्रभाव इस तरह बढ़ने लगा कि नेपाल भाषियों ने इस भाषा को पैतृक शब्दों के रूप में प्रयोग करने लगे। समाज में संस्कृत भाषा को प्रतिष्ठा एवं गर्व के रूप में लिया गया और अभिलेख, वांङ्मय एवं संस्कारगत विधि विधान कार्य में भी संस्कृत का प्रयोग करने लगे जो वर्तमान में भी कायम है।

मैथिली भाषा के प्रवेश के विषय में विद्वानों का कहना है कि सन् 1325 में तिरहुत के सिम्रौनगढ राज्य में गयासुद्दीन तुगलक के आक्रमण के बाद राजा हरिसिंह देव अपने राज्य को छोड़कर उपत्यका जाने के लिए निकले और उनका तीनपाटन सिंधुली(स्थान) में देहान्त हुआ और उनकी पत्नी रानी देवलदेवी ने उपत्यका में प्रवेश किया। उनके साथ साथ तिरहुत की जनता ने भी काठमांडू उपत्यका में प्रवेश किया था। तिरहुत की जनता के प्रवेश के बाद उनकी मैथिली भाषा का प्रभाव पड़ने लगा। उसके बाद मध्यकाल के मल्ल राजाओं का मिथिला राजकुमारियों के साथ वैवाहिक संबंध होने लगा, जिसके कारण

तिरहुत में मैथिली का प्रभाव भाषा, साहित्य, संगीत कला में भी पड़ने लगा। उसी समय भारत के बिहार और नेपाल के तराई क्षेत्रों में मुसलमानों के आक्रमण के कारण अपनी जीवन रक्षा एवं धर्म संस्कृति के रक्षा के लिए मैथिली विद्वानों ने उपत्यका में प्रवेश किया था। उन सभी मैथिली विद्वानों की कलाओं की प्रस्तुतियों को धीरे धीरे दरबारों में सम्मान मिलने लगा जिससे समाज में भी उनका सम्मान होने लगा। ”14 वीं शताब्दी में मैथिली का प्रभाव नेपाल भाषा में अधिक परिमाण में होने लगा। जिसके कारण विभिन्न मैथिली भाषा में लिखित गीत, नाटक, साहित्य आदि नेपाल भाषा में अनुवादित होने लगे और शब्द तथा वाक्यों का भी प्रयोग करने लगे।”**[1]**

इसी तरह संस्कृत तथा मैथिली भाषा का प्रभाव तीव्र रूप से राजा से लेकर जनता पर पड़ने लगा था। इसीलिए वर्तमान समय में भी कई स्थानों में गाया जाने वाले दाफा संगीत में भी विभिन्न भाषा का मिश्रण देखने को मिलता है, उदाहरण के लिए पाटन के कृष्ण मंदिर में वर्तमान में भी आरती गाते समय मैथिली भाषा में रचित "नाथ महादेव भोला रंगे" नामक रचना गाई जाती है, जो राग जयश्री में और ताल चो में निबद्ध है। इस आरती गीत के रचयिता मिथिला तिरहुत प्रदेश के 'कवि कोकिल' की उपाधि प्राप्त करने वाले "महाकवि विद्यापति जी" है जिन का समय 14वीं शताब्दी के आसपास माना जाता है। इस आरती का शब्द इस प्रकार है:

। नाथ महादेव भोला रंगे ।[2] (राग: जयश्री, ताल: चो)

तैंतीसकोटि देव ठाकुर संगे, नाथ महादेव भोला रंगे ॥धु॥
फणिमणि हार गले रुद्रमाला, अंग विभूति बढ़े बाघ छाला ॥1॥
त्रिशूल खट्वाङ्ग डमरू शोभे हाथे चंद्र कला जटा शोभे माथे ॥2॥
तैंतीसकोटि देव आरती गावे संध्या पार्वती चवर दुलाये ॥3॥
देवी भवानी मंगल गावे भोलानाथ सेवासे नवनिधि पाये ॥4॥
भनय विद्यापति आरती गावे सब दु:ख हरले ओ गौरा माता ॥5॥

इसी प्रकार पाटन कृष्ण मंदिर में ही गाया जाने वाला प्राचीन भजन कुछ इस प्रकार है जो भारतीय संगीतज्ञ जयदेव ने अपने ग्रंथ 'गीतगोविंद' में गीति काव्य के रूप में संस्कृत भाषा में लिखा हुआ है**[3]**:

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए
कलितललितवनमाल जय जय देव हरे ॥१॥

1. तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपालभाषा साहित्यको इतिहास/ p-40
2. श्रेष्ठ, प्रध्युमन/ झीगु भजन म्ये/ p-33
3. श्रेष्ठ, प्रध्युमन/ झीगु भजन म्ये/ p-34 से 37

दिनमणिमण्डलमण्डल भवखण्डन ए
मुनिजनमानसहंस जय जय देव हरे ॥२॥

कालियविषधरगञ्जन जनरञ्जन ए
यदुकुलनलिनदिनेश जय जय देव हरे ॥३॥

मधुमुरनरकविनाशन गरुडासन ए
सुरकुलकेलिनिदान जय जय देव हरे ॥४॥

अमलकमलदललोचन भवमोचन ए
त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे ॥५॥

जनकसुताकृतभूषण जितदूषण ए
समरशमितदशकण्ठ जय जय देव हरे ॥६॥

अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए
श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे ॥७॥

तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ॥८ ॥

श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदम् ए
मङ्गल मुज्ज्वलगीतं जय जय देव हरे ॥९ ॥

महाकवि जयदेवकृत गीतगोविन्दस च्वंगु 'श्रितकमलाकुच' या स्वरलिपि			
१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८
- श्रित क म - निनि नि नि	ला - कु च नि नि नि सां	- मं ड ल - सां सां नि	हे - धृ त ध पम प ध
- कुं ड ल हे - - - (२) ध नि ध ध प - - - (२)			
- कलि त ल - पप प प	हे - रा म प - प म	- कलि त ल - मप प प	लि त ब न प पम ध प
मा - - ल म - - म	ज य ज य ग रे सा रे	- दे ब ह - ग रे रे	रे - रा धा सा - प प
- कलि त ल - पप प प	हे - रा म प - प म	- कलि त ल - मप प प	लि त ब न प म ध प
मा - - ल म - - ग	ज य ज य रे सा रे रे	- दे ब ह - ग रे रे	रे - - - सा - - -

2:2:2 नेवारी संगीत के संकलन का इतिहास

प्राचीन समय से नेवारी लोक संगीत का मौखिक रूप से संवर्धन होता रहा हैं। नेवारी संगीत की पहचान ही गायन और प्रदर्शन में है। इसलिए नेवारी संगीत के ग्रंथ तथा लिखित अभिलेखों की संख्या अल्प मानी गई है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए वर्तमान में कई विद्वान एवं संकलन कर्ताओं द्वारा नेवारी गीत एवं संगीत का संकलन कार्य आरंभ हुआ है।

सर्वप्रथम स्वदेशी भाषा प्रेमी एवं अध्येता मानदास तुलाधर ने अपने जीवन के 40-50 वर्ष से भी ज्यादा समय देकर विभिन्न नेवारी बस्ती(प्रदेशों) में मुलाकात कर, टोल-टोल (सोसाइटी) में गाया जाने वाला दाफा भजन की सफू(किताब) तथा प्रश्न उत्तर के माध्यम से एवं विभिन्न दाफा गुरुओं से प्रत्यक्ष मिलकर 900 से ज्यादा नेवारी गीतों का संकलन किया है।(1) उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तक का नाम 'मल्ल शाह कालया मे' और 'पुलांगु मे' है। ने.सं. 1047 (ई.स.1926) तक अगर देखा जाए तो उनके द्वारा प्रकाशित

1. महर्जन, राजेन्द्र/ सिलु म्ये र सामाजिक प्रतिरोध/ p-142

गीतों की संख्या 1000 से भी अधिक मानी गई है। प्रकाशन के आधार पर मानदास से पहले ठाकुरलाल मानंन्धर द्वारा लिखित 'पुलांगु म्ये' प्राचीन गीति संग्रह मानी गई है। सुगतदास तुलाधार के अनुसार, 'ठाकुरलाल मानंन्धर की पुस्तक में प्रकाशित 44 गीत संग्रह, मानदास तुलाधर की पुस्तक में पाए गए है।

मानदास के कठिन परिश्रम से इकट्ठा किए गए गीतों की संकलित पुस्तक ही अन्य लेखकों एवं संकलनकारों के लिए आधार ग्रंथ है। तत्पश्चात प्रेमबहादुर कसा: ने भी नेवारी गीतों के कार्य में अधिक संख्या में संकलन किया। इसमें मतेनाया मे (लव सोंग्स), बांख मे (स्टोरी सोंग्स), और लोकगाथा संबंधित गीतों का संकलन है। इसी प्रकार छत्रबहादुर कायस्थ ने 'झीगु म्ये' ने.सं. 1086(ई.स. 1966), जुजु सिद्धिनरसिंह्या मे पुच: ने.सं. 1089 (ई.स. 1969), 'नेपालभाषाया प्राचीन काव्य व काव्यकार' ने.सं. 1096(ई.स.1976), जुजु रणबहादुर शाह्या 'म्ये मुना' ने.सं. 1105 (ई.स. 1985) और 'थिमि देया पुलांगु म्ये' ने.सं. 1119 (ई.स. 1999) आदि पुस्तकों का नेवारी भाषा में प्रकाशन किया।

नेवारी भाषा के साथ-साथ नेपाली भाषा और अंग्रेजी भाषा में अनुवादित किए गए गीतों का मुख्य स्त्रोत मानदास द्वारा संकलित पुस्तक है। इन्हीं संकलन के बारे में विदेशी शोधकर्ताओं ने अपनी पुस्तकों में उल्लेख किया है, इनमें से निम्न का उल्लेख यहां शोधार्थिनी ने किया है। "सिग्र्फ्रेड लिनहार्ड ने अपनी पुस्तक 'नेवारीगितीमंञ्जरी: रिलीजियस एंड सेक्यूलर पोएट्री ऑफ नेवार्स ऑफ काठमांडू वेली' का सन् 1974 में प्रकाशन किया था। इन्हीं की दूसरी पुस्तक सन् 1984 में मूलतः मानदास और ठाकुरलाल द्वारा संकलित गीतों के अनुवाद के आधार पर 'सोंग्स ऑफ नेपाल' के रूप में प्रकाशित हुई। इसी प्रकार सन् 1982 में विदेशी अध्येता एस. ऋमवेल ऋफोर्ड ने 'द इवोल्यूशन ऑफ हिंदू एथिकल आइडल्स' और सन् 2011 में हङमार ग्रान्डिन ने 'म्यूजिक एंड मीडिया इन लोकल लाइफ: म्यूजिक प्रैक्टिस इन नेवार नेबरहुड इन नेपाल' पुस्तक में मानदास के संकलित गीतो का अध्ययन किया है। मानदास तुलाधर के संकलन से पहले नेवारी भाषा के लोक गीतों का संकलन एक विदेशी विद्वान ने किया है ऐसा इतिहास प्राप्त हुआ है। ओरिएंटल स्कोलर्स की रूची को ध्यान में रखकर सन् 1870 के दशक में डेनियल राइट ने 'हिस्ट्री ऑफ नेपाल' पुस्तक नेवारी गीतों का समावेश किया। काठमांडू स्थित ब्रिटिश रेसिडेंट(दूतावास) में सर्जन की भूमिका में रहे डेनियल राइट ने मुंशी शिवशंकर सिंहजी के लेखन और अनुवाद के आधार पर पांच नेवारी भाषा के गीतों को अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया था।"[(1)]

इस प्रकार अन्य व्यक्तियों ने नेवारी संगीत के संकलन में अपना योगदान दिया है। लंडन यूनिवर्सिटी के डॉ. वाकले चित्रधर हृदय ने 'नेपाल संगीत' पुस्तक में उल्लेखित गीतों का अंग्रेजी में अनुवाद किया साथ

1. महर्जन, राजेन्द्र/ सिलु म्ये र सामाजिक प्रतिरोध/ p-143

ही रिकॉर्डे भी किया। उसी प्रकार हरी श्रेष्ठ ने भी 'नेवारी लोकगीत' को नेपाली भाषा में अनुवाद किया। इन्हीं सारे संपूर्ण संकलन एवं प्रकाशन से ही वर्तमान में नेवारी संगीत को और अधिक मात्रा में समझने का या जानने का प्रमाण प्रत्यक्ष रूप से सामने है। नेवारी संगीत में उपलब्ध विभिन्न दाफा संगीत के गीत-भजन के साथ साथ इसी प्रकार के गीतों का संकलन नेवारी संगीत जगत को और ज्यादा प्रबल बनाता है।

2:2:3 नेवारी संगीत की शिक्षण प्रणाली

शिक्षा यह शब्द संस्कृत के 'शिक्ष' धातु से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है 'सीखना या सिखाना'। अर्थात् जिस प्रक्रिया द्वारा अध्ययन और अध्यापन होता है उसे शिक्षा कहते हैं। शिक्षा एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो प्रत्येक मनुष्य के जीवन में बहुत ही उपयोगी होता है। शिक्षा जीवन की सभी एक चुनौतियों का कुशलता से सामना करने के लिए तैयार करती है। शिक्षा भी अनेक प्रकार की है, जिनमें से संगीत शिक्षा एक उच्च कोटि की शिक्षा मानी गई है। प्राचीन काल से ही संगीत कला विभिन्न ढंग से आगे बढ़ती आई है चाहे वह मौखिक रूप में हो या लिखित रूप से। नेपाल की नेवारी संगीत कला भी प्राचीन समय से ही प्रचलन में रही है। इस संगीत की निरंतरता के कारण ही नेवारी जाति में सिखाया जाने वाला संगीत नेवारी संगीत शिक्षण प्रणाली के रूप में प्रचलन में आया है। नेवारी संगीत को गुरु शिष्य परंपरा अंतर्गत सिखाया जाता है। नेवारी संगीत सिखाने का तरीका अधिकतर मौखिक रूप में ही होता है। नेवारी संगीत के अंतर्गत गायन, वादन और नृत्य तीनों विधाओं का समन्वय किया गया है। प्रत्येक कला को सीखने के लिए गुरु के सांनिध्य में रहकर सीखना होता है। गुरु शिष्य परंपरा जानने से पहले नेवारी संगीत को सीखने के लिए सबसे पहले 'नास: द्य:' के बारे में जानना आवश्यक है।

नेवारी संगीत के संगीतकार 'नास: द्य:' भगवान को संगीत के गुरू मानते है। नास: द्य: के बारे में विभिन्न नेवारी गुरू, संस्कृतिविद, तथा इतिहासकारों का अपना अपना मंतव्य है। कोई नास: द्य: को महादेव, कोई त्रिदेव(ब्रम्हा, विष्णु, महेश्वर), कोई शिव के पुत्र, कोई सर कटा हुआ भगवान आदि का वर्णन करते हैं। नास: द्य: के बारे में विद्वानों के अलग-अलग अधिक मात्रा में मंतव्य रहे हैं किंतु उनमें से एक बहुत प्रचलित है कि "द्वापर युग में भिमसेन महाराज को गाना सीखने का मन हुआ इसलिए उन्होंने नाट्यश्वर को गुरु मानकर सीखने लगे। एक दिन भिमसेन महाराज जोर शोर से अपने दरबार में राग गा रहे थे, उसी समय एक घोबी अपने खोए हुए गधे को ढूंढते हुए दरबार में प्रवेश करता है धोबी महाराज को देखकर घबराता है और बोलता है कि महाराज मुझे लगा कि मेरा गधा अंदर आकर चिल्ला रहा होगा मुझे माफ कर दीजिए ऐसा कह कर वह बाहर निकल गया। धोबी की यह बात सुनकर भीमसेन महाराज को बहुत गुस्सा आ जाता है कि मुझे किस प्रकार का संगीत मेरे गुरु ने सिखाया? और फिर

अपने गुरु को ढूंढने के लिए महाराज निकलते हैं। अब नाट्यश्वर गुरु को यह बात पता चलती है, इसलिए वह उस नगर से दूर सप्तरूद्र पर्वत कविलाश में छिपकर रहने लगते हैं। नाथगुरु का अपने मूल स्थान पर ना होने से यहां के लोगों में राक्षसी गुण दिखाई देने लगते है और प्रजा में हाहाकार मच जाता है। आठ गुण वाली सिद्धियों के परम ज्ञानी ऐसे सिद्ध पुरुष के पलायन के कारण जनता पर पड़े असर का पता लगने के बाद वहां के तांत्रिक लोग मिलकर सिद्ध गुरु को वापस अपने स्थान पर ले आते हैं। इसी के साथ उनके समानार्थ को जगह-जगह, कोने-कोने एवं गली-गली में स्थापना करते हैं। भीमसेन महाराज अपने गुरु से माफी मांगते है और अपने मूल दरवाज़े पर उनके समानार्थ की स्थापना करते हैं।"[1]

नास: द्य: के आख्यान के आधार से अगर देखा जाए तो वर्तमान में नेवारी बस्तियों के कई स्थानों में स्थापित नास: द्य: की मूर्ति होती है और जहां मूर्ति नहीं होती वहां मूर्ति के स्थान पर तीन छोटे-छोटे छेद को कपड़े से ढक कर रखा जाता हैं।

कुछ विद्वान नाथगुरु (नास: द्य:) को इस तरह वर्णन करते हैं- नास: द्य: की तीन आंख होती है, सर पर जटा और चंद्रमा होता है। गले में नरमुंड माला और वृषभ पर चढ़कर नृत्य करने वाले, 18 हाथ और अनेकों अस्त्र से सुशोभित होते हैं। नाट्यश्वर और शिव की एक ही सवारी और नृत्य होने के कारण जनमानस में ऐसा माना जाता है कि नाट्यश्वर नित्यनाथ ही शिव है और शिव ही नित्यनाथ है ऐसा मानते हैं।

नेवारी संगीत में गायन तथा वाद्य वादन सीखने के लिए सर्वप्रथम 'आखा छें' (संगीत पाठशाला) अथवा किसी के घर या कक्ष को साफ सफाई एवं शुद्धिकरण करने के बाद सिखाया जाता है। संगीत सिखाने के समय अधिकतर रात का समय ही पसंद किया जाता है क्योंकि अपनी दिनचर्या खत्म करके आराम से सीख सकें। संगीत सिखाने का समय तीन या छः महीने जितना होता है। सभी इच्छुक विद्यार्थी को संगीत सिखाने से पहले अपने अपने घर से 'किसलीं' अपने गुरु की आज्ञा से चढ़ाना होता है। "किसलीं एक प्रकार के यंत्र के रूप में माना जाता है, जिसमें पांच पदार्थ होते है जो पंच तत्व के रूप में होता है। किसलीं में पांच पदार्थ रखे जाते हैं,

1. सलीं (मिट्टी का बना हुआ)- जिसको पृथ्वी तत्व मानते हैं
2. जाकि (चावल)- जिसको जल तत्व मानते हैं
3. धेबा (सिक्का-पैसा)- जिसको आकाश तत्व मानते हैं
4. ग्वे (सुपारी)- जिसको वायु तत्व मानते हैं और

1. महर्जन, राजेन्द्र/ हाम्रो संस्कृतिक पहिचान तथा परंपरागत बाजाहरू/ p-2

5. अबीर (कुमकुम)- जिसको अग्नि तत्व मानते हैं

इन पांचों तत्वों को क्रमशः 7 ग्रह के रूप में भी माना गया है:

- किसलीं- बुध ग्रह
- जाकि- चंद्र एवं शुक्र ग्रह
- धेबा- गुरु बृहस्पति ग्रह
- ग्वे- शनि ग्रह
- अबीर- सूर्य एवं मंगल ग्रह

राहु और केतु को छोड़कर सातों ग्रहों को प्रतीक के रूप में किसलीं भगवान के सामने रखकर इसको अर्पण करके क्षमा याचना करते हैं एवं अपनी शिक्षा पूर्ण करने के लिए आज्ञा लेते हैं। इसी के साथ अपने ग्रहों का संतुलन बनाए रखने के लिए प्रार्थना करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक शिष्य भगवान की प्रार्थना के बाद अपने-अपने चढ़ाए हुए किसलीं अपनी संगीत पाठशाला में लेकर आते हैं और एक ही स्थान में रखकर भगवान की स्थापना करते हैं, जिसको काले कपड़े से ढक कर रोज़ सिखाने की प्रथा शुरू होती है। सिखाने से पहले दिया एवं धूपबत्ती से पूजा करी जाती है और इसके बाद ही गुरु अपने शिष्य को धीरे-धीरे सिखाना शुरु करते हैं। सिखाने की प्रथा प्रतिदिन चलती है, इस प्रकार तीन या छः महीने सिखाने की प्रक्रिया के बाद अंतिम दिन को पुनः संगीत के गुरु नास: द्यः के प्रांगण में जाकर गायन तथा वादन प्रस्तुत करते हैं। सिखाने के दरम्यान ही गुरु अपने शिष्यों पर नजर रखते हैं कि कौन से विद्यार्थी को प्रथम, द्वितीय या अन्य पुरस्कार देना चाहिए क्योंकि नेवारी गायन तथा वादन की शिक्षा में विद्यार्थी का हौसला बढ़ाने के लिए पुरस्कार देने की प्रथा परंपरागत रूप से चली आई हुई है। अंतिम दिन की प्रस्तुति नास: द्यः के प्रांगण में देखते हुए गुरु परिणाम की घोषणा करते हैं। संगीत शिक्षा के अंतिम दिन नास: द्यः की भव्य पूजा की जाती है। उस पूजा विधि में बलि प्रथा करी जाती है, जो भी जानवर की बलि दी जाती है उसी के सिरके भाग जिसको 'शी' कहते हैं क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आए हुए शिष्य को गुरू द्वारा प्रदान किया जाता है।"[(1)] इस प्रकार नेपाल के सभी स्थानों में निवास करते आए हुए नेवार जाति गुरु शिष्य परंपरा का संरक्षण करते आए हैं अपनी संगीत शिक्षा ग्रहण करने के बाद नेवारी संगीत परंपरागत जात्रा, पर्व, त्यौहार, मेला, प्रतिस्पर्धा इत्यादि में गायन वादन करके अपना प्रस्तुतीकरण करते हैं। इस प्रस्तुतीकरण से वे अपनी शिक्षा प्रबल बनाते है और अपनी संस्कृति का संरक्षण करते है। संपूर्ण नेवारी बस्ती में इस प्रकार संगीत शिक्षा देने का प्रचलन रहा है। प्राचीन समय में नेवारी जाति के केवल पुरुष लोग ही इस कला में सक्रिय देखने को मिलते थे परंतु

---

1. महर्जन, राजेन्द्र/ साक्षात्कार/ मिति- 06/09/2021

समय परिवर्तन अनुसार वर्तमान समय में महिलाएं भी संगीत शिक्षा ग्रहण करने में सशक्त दिखाई देती हैं चाहे वो गायन हो या वादन की शिक्षा हो। यह परिवर्तन संपूर्ण संगीत कला क्षेत्र के लिए गौरव एवं शोभनीय बात है।

2:3 दाफा संगीत

अन्य संगीत प्रकारों की तरह नेवारी संगीत में भी विभिन्न गायन प्रकार प्रचलित है। नेवारी संगीत के अलग-अलग प्रकारों में से दाफा संगीत नेवारी संगीत को प्राचीन एवं मुख्य संगीत प्रकार माना गया है। दाफा संगीत शास्त्रीय राग एवं ताल में बंधा हुई गायन शैली है जिसकी विस्तृत व्याख्या इस प्रकार है:

2:3:1 दाफा संगीत का परिचय

नेवार जाति प्राचीन काल से ही काठमांडू उपत्यका(जिसको नेपाल मण्डल भी कहा जाता है) में निवास करते आए हुए जनजाति के रूप में स्विकार किए गए हैं एवं यह जनजाति एक सभ्य एवं परंपरागत नीति, नियम, संस्कार, संस्कृति एवं कला में निष्ठा एवं आस्था रखने वाला समूह है। संपूर्ण नेपाल में अपनी संस्कृति में धनी नेवार जाति विभिन्न परंपरा, चाडपर्व मनाते हैं। उन चाडपर्वों को चारचाँद लगाने के लिए संगीत को अति आवश्यक माना गया है। नेपाली समाज में नेवार जाति को केवल संगीत कला ही नहीं किंतु अन्य कला जैसे साहित्य, भाषा, मूर्तिकला, काष्ठकला इत्यादि में भी उच्च विशेषताओं से दक्षता प्राप्त करने वाली जाति मानी गई है। नेवार जाति की संपूर्ण जीवनशैली को देखा जाए तो जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त संगीत कला को अलग अलग प्रकार से प्रयोग में लिया है। इसलिए संगीत को नेवारी जाति के अभिन्न अंग के रूप में मान सकते हैं।

प्रत्येक पर्व में इस जाति में एक साथ इकट्ठा होकर गायन, वादन तथा नृत्य करने की परंपरा रही है। उस समूह में कोई मनुष्य गाना गाते हैं कोई वाद्य बजाकर संगत करते हैं। नेवारी संगीत में धार्मिक तथा सांस्कृतिक दो पक्षों का समावेश किया गया है। धार्मिक संगीत के पक्ष में भगवान की आराधना, प्रार्थना, स्तुति गान इत्यादि किया जाता है और इसी धार्मिक संगीत को 'दाफा संगीत' कहा जाता है। यह संगीत केवल भगवान की भक्ति रस प्रधान होता है। दाफा संगीत शास्त्रीय राग एवं तालों में निबद्ध होता है। **"**दाफा संगीत को 'दफ्फा' भी कहा जाता है। दफ्फा शब्द उर्दू भाषा से लिया हुआ हो ऐसा प्रतीत होता है। तत्पश्चात समय परिवर्तन के साथ दफ्फा से दाफा और दाफा से दाफा अथवा दापा शब्द भी प्रचलन में आया। दाफा शब्द में दा का अर्थ है आघात करना और फा अथवा पा का अर्थ है हथेली। हथेली से आघात करके जो वाद्य बजाया जाता है उसी को दाफा या दापा वाद्य कहा जाता है और उस संगीत को दाफा या दापा संगीत कहा गया ऐसा अनुमान किया गया।**"**[(1)]

नेवारी जाति की मुख्य बस्ती काठमांडू, ललितपुर और भक्तपुर जिलों में देखने को मिलती है और यह जिलों के दाफा गायन के साथ 'खिं वाद्य' बजाया जाता है जो इस संगीत में मुख्य वाद्य के रूप में लिया

1. मानन्धर, त्रिरत्न/ हाँदे/ p-ञ

जाता है। उसी खिं वाद्य को दाफा या दापा भी कहा जाता है। अन्य विद्वानों का यह मानना है कि नेवारी वाद्यों के नाम अधिकतर 'द' अक्षर से प्रारंभ होते हैं जैसे दमोखिं, दंगखिं, दबदब इत्यादि। इसी के आधार पर दाफा अथवा दापा संगीत की नामावली शुरू हुई ऐसा माना जाता है। एक अन्य संगीतज्ञ एवं दाफा गुरु 'प्रद्युम्न कृष्ण' के अनुसार विभिन्न वाद्य जैसे खिं, ता:, बभू आदि को समूह में बैठकर गाया तथा बजाने वाले भक्ति भजन को दाफा संगीत कहते हैं। "दाफा संगीत का नाम किस प्रकार रखा गया इस संदर्भ में सर्वसम्मति के अनुसार भजन गाते समय दो समूह आमने सामने बैठ कर गाना बजाना करते हैं। एक समूह के बाद दूसरा समूह ऐसे बारी बारी के साथ दाफा भजन गाते हैं और इसी दो समूह का अर्थ है 'डफ्फा', और बाद में इस शब्द का अपभ्रंश होकर दाफा हुआ ऐसा मत लोकप्रिय है।"[(1)]

दाफा संगीत भगवान की स्तुति है जो परंपरागत रूप में वर्षों से प्रचलित रागों को सुर में रखकर और विभिन्न लय-ताल में बांधकर गाई जाती है। यह गायन समूह में बैठकर भगवान की आराधना के रूप में गाया जाता है। इस संगीत में वाद्यों को भी उतना ही महत्व दिया गया है जितना गायन को। इसीलिए इस संगीत में हर एक वाद्य की अपनी एक अलग पहचान एवं अपना एक अलग महत्व है। दाफा संगीत की स्तुतियों में भगवान बुद्ध, करुणामई, महामंञ्जुश्री, वसुंधरा, हारती मां, जोगिनी, योगाम्बर, गुह्येश्वरी, गणेश, शिव, नारायण, राम, कृष्ण, भैरव, भैरवी, भीमसेन, नासः द्यः आदि भगवानों की आराधना की जाती है। भगवान की आराधना के साथ-साथ तीर्थ यात्रा, देश वर्णन, जीवन दर्शन आदि के गीतों का भी समावेश किया जाता है। कई कई दाफा संगीत में प्रेम प्रसंग के विषय के गीतों का समावेश किया है।[(2)] नेवारी बस्ती के प्रत्येक दो या तीन टोल के बीच दाफा भजन के समूह होते हैं। इन सभी समूह में एक मुखिया गुरु होता है जो इस गायन तथा वाद्यों की जिम्मेवारी लेते हैं। प्रत्येक दाफा समूह में एक दाफा सफू (किताब) होती है जिसे देखकर नित्य प्रस्तुति की जाती है।

2:3:2 दाफा संगीत की उत्पत्ति

नेवारी संगीत के विभिन्न प्रकारों में से मुख्य गायन प्रकार दाफा संगीत है और उसका विकास कैसे हुआ है और कब हुआ यह कहना मुश्किल है किंतु कुछ अनुसंधानकर्ताओं एवं संगीतज्ञों के अनुसार दाफा संगीत का प्रारंभ लिच्छवि काल से हुआ ऐसा माना जाता है। तत्पश्चात मध्य काल के मल्ल शासनकाल में यह संगीत का विकास अधिक मात्रा में हुआ। "मल्ल काल के प्रारंभिक समय में सिद्धिनरसिंह मल्ल ने इस संगीत का प्रचार शुरू किया था। दाफा संगीत के साथ कार्तिक नाच की भी परंपरा शुरू हुई और यह परंपरा वर्तमान में भी पाटन(ललितपुर) में कायम है। दाफा संगीत का प्रचार प्रसार ने.

1. धिमय्- पौ पत्रिका/ p-16
2. मानन्धर, त्रिरत्न/ हाँदि/ p-2

सं. 845 (ई.स. 1725) में काठमांडू के मच्छेगांव में स्थित शिलापत्र में 'नलिस्वाच' दाफा समूह ने विष्णु देव को घंटी चढ़ाने की बात का उल्लेख किया है। इसी प्रकार ने. सं. 954 (ई.स. 1834) में पाटन धालाछें टोल के ओछुननि फ्लेसि में स्थित एक शिला पत्र में 'ओछुननि स दाफा मंका: खलकया धर्म चित्र उत्पत्ति जुयाओ" करके दाफा शब्दों का उल्लेख पाया गया है।"[1]

दाफा संगीत की उत्पत्ति के विषय में पाटन के दाफा गुरु प्रद्युम्न कृष्ण के अनुसार दाफा संगीत वर्तमान से 1400-1500 वर्ष पूर्व ही प्रचलन में आया होगा। इसका आधार उन्होंने विभिन्न दाफा समूह की प्राप्त पुस्तकों में उल्लेखित मल्ल राजाओं तथा रानियों के नाम को माना है। इसी प्रकार नेवारी संगीत के विदेशी अनुसंधानकर्ता जैसे कि Richard Widdess, Ingemar Grandin ने भी अपनी पुस्तक में दाफा संगीत के प्रचलन के विषय में बताया है कि मल्ल काल में दाफा संगीत का अधिक प्रमाण उपलब्ध होता है इसलिए यह कह सकते हैं कि मल्ल काल दाफा संगीत का उत्पत्ति समय था।

इस प्रकार दाफा संगीत का विकास लिच्छवि काल में होने के साथ-साथ उसकी व्यापकता लिच्छवि काल के बाद मल्ल शासन से शुरू हुई इसलिए कह सकते हैं कि मल्ल काल ही दाफा संगीत का प्रमाणिक समय था।

2:3:3 दाफा गायन शैली

नेवारी संगीत के मुख्य दाफा गायन एवं वादन को क्रमबद्ध रूप में गाया तथा बजाया जाता है, जो इस प्रकार है[2]-

1. द्य: ल्हायेगु
2. ग्वारा गायन
3. घोचा गायन
4. चालिं गायन
5. आरती

2:3:3:1 द्य: ल्हायेगु

दाफा संगीत अर्थात भगवान की आराधना। इसीलिए इस संगीत में गाने तथा बजाने की क्रिया से पूर्व भगवान की आराधना की जाती है। इसको द्य: ल्हायेगु कहते हैं। इस आराधना में भगवान नास: द्य: जो नेवार जाति में संगीत कला के गुरु माने जाते हैं, उस देवता की दाफा संगीत से श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक

1. श्रेष्ठ, सुरेन्द्र/लघु शोध निबंध-कीर्तिपुर पाँगा महाब्बो दाफा खलः मा मासिकरूप गाईने दाफा: एक अध्ययन/ गायन विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय/ वि. सं. 2075 / p-15
2. मानन्धर, त्रिरत्न/ हाँदि/ p-4 से 6

पूजा-अर्चना की जाती है। सर्वप्रथम इस गायन तथा वादन में सम्मिलित सभी जन गोलाकार में बैठते हैं। उनमें से दो जन खिं वाद्य (अवनद्ध वाद्य), दो या तीन जन ख्वालमलि (घन वाद्य) और दाफा के मुख्य गायन गुरु ता:, तीन छुक (घन वाद्य) ले कर बैठते हैं। तीन छुक वाद्य दाफा के सभी कलाकारों की लय निश्चित रूप से बांधने का काम करता है, इसीलिए इस वाद्य को दाफा गुरु ही बजाते हैं।

द्य: ल्हायेगु संगीत केवल वाद्यों द्वारा ही किया जाता है जैसे- खिं, ता: और बभू वाद्य। इस कार्य का मुख्य उद्देश्य संगीत गुरु नास: द्य: का आह्वान करना होता है कि इस भक्ति भजन के सम्पूर्ण काल में वाद्यों एवं गायन में आपका वास है। द्य: ल्हायेगु परंपरा प्रारंभ में की जाती है। उसके बाद दाफा भजन के अंत में भी यही परंपरा अपनाई जाती है, इसलिए संगीतज्ञ का मानना है कि दाफा गायन में आमने और सामने बैठकर एक जोड़ी खिं वाद्य बजाया जाता है, तो उसके बीच स्थान में कोई बैठ नहीं सकते क्योंकि उस स्थान में नास: द्य: विराजमान होते हैं। द्य: ल्हायेगु खत्म होने के बाद फिर गायन शुरू किया जाता है।

2:3:3:2 ग्वारा गायन

दाफा गायन एवं वादन में सर्व प्रथम द्य: ल्हायेगु के बाद ग्वारा गायन को गाया जाता है। दाफा संगीत का मुख्य गायन ही 'ग्वारा' है जिसको गोदा, गोरा या ग्वारा भी कहा जाता है। यह एक राग में बंधी हुई रचना है, जिसे एक या उससे अधिक तालों में गाया जाता है।[(1)] ग्वारा एक जटिल गायन प्रकार है क्योंकि एक ही ग्वारा गायन में बहुत सारे अलग अलग मात्रा के ताल बजाये जाते हैं। इसलिए इस गायन को सीखने के लिए कठिन परिश्रम की जरूरत पढ़ती है। ग्वारा गायन के विषय में दाफा गुरू तथा संगीतज्ञों के विभिन्न अलग अलग मत कुछ इस प्रकार है:

"दाफा गुरु धर्मरत्न शाक्य त्रिशूली के विचार से "ग्वारा शब्द तथा ताल में निबद्ध गायन है, जिसमें एक ग्वारा बंदिश में भिन्न-भिन्न ताल को बजाया जाता है। अर्थात ग्वारा गायन में यदि एक ही ताल का प्रयोग हुआ है तो उसे 'वाधा' कहेंगे। उसी प्रकार तीन, चार, पांच, सात, नौ और बारह तालों का प्रयोग हुआ तो क्रमशः तमां, चौमां, पंचमां, सातमां, नवमां और बाहरमां कहा जाता है। इन सभी भिन्न-भिन्न तालों में सुसज्जित ढंग से प्रस्तुत किए जाने वाली बंदिश या रचना ही ग्वारा गायन है।

इसी प्रकार अन्य कीर्तिपुर निवासी दाफा गुरु 'ज्ञानेश्वर निभा' के मतानुसार खिं वाद्य के साथ विभिन्न लयकारी एवं अपना गायन आकर्षक रूप से, जब दोनों साथ में समाने वाली निश्चित बंदिश, जो राग में निबद्ध है, उसे ग्वारा गायन कहते हैं।[(2)]

---

1. धिमय्- पौ पत्रिका/ p-16
2. श्रेष्ठ, सुरेन्द्र/ लघु शोध निबंध-कीर्तिपुर पाँगा महाब्बो दाफा खलः मा मासिकरूप गाईने दाफा: एक अध्ययन/ गायन विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय/ वि. सं. 2075/ p-22

दाफा गायन गाने से पूर्व उसके सभी नियमों का पालन करते हुए प्रत्येक गायक एवं वादक अपना स्थान ग्रहण करते हैं। गायक एवं वादक दो समूह बना कर बैठते हैं। बीच में 'सुकुन्दा'(जिसमें दिया जलाते हैं) वह पूर्व दिशा तरफ दिखाकर रखा जाता है। दाएं तरफ सबसे पहले खिं वादक बैठता है। फिर दाफा गुरु हाथ में ता: वाद्य ले कर बैठते हैं तथा अन्य कलाकार गुरु के बाई तरफ बैठते हैं।

ग्वारा गायन की शुरुआत दाफा गुरु द्वारा की जाती है। ग्वारा जिस राग में निबद्ध होता है उसी राग में गुरु आलाप करना शुरू करते हैं। आलाप के समय गुरु ना, तन, नाई आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं। तत्पश्चात खिं वादक राग के निबद्ध ताल में उठान जैसी कोई रचना बजाते हैं जिसे 'छूमां कायेगु' कहते हैं। छूमां या उठान के बाद विलंबित लय में खिं वाद्य बजाया जाता है और ग्वारा गायन शुरू होता है। सर्वप्रथम दाफा के मुख्य गुरु गायन का प्रारंभ करते हैं फिर उसी लाइन को बाकी के कलाकार दोहराते हैं। आलाप करने के बाद प्रायः बंदिश की शुरुआत में हँदे शब्द लिए जाते हैं, इसलिए इस शब्द को दाफा संगीत का मुख्य शब्द माना जा सकता है। एक बार गायन शुरू होने के बाद ता:, बभू/ख्वालीमली(घन वाद्य) का वादन शुरू होता है। दाफा संगीत को संपूर्ण स्वरूप तथा भरा हुआ गायन बनाने में इन सभी वाद्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

दाफा संगीत के ग्वारा गायन की विशेषता यह है कि एक ही ग्वारा में एक से अधिक तालों का समावेश करके गाया जाता है जिसे 'मान ग्वारा' कहते हैं। मान ग्वारा में एक से बारह तालों का मिश्रण होता है। इस प्रकार ग्वारा गायन में भिन्न-भिन्न ताल पूरे गायन में राग के साथ बजाएं जाते हैं। ग्वारा में जितने तालों का प्रयोग होता है, उन सभी को अलग-अलग नामों से पहचाना जाता है जैसे-

ताल के संयोजन	**ग्वारा का ताल नाम**
दो ताल का संयोजन	दोमां / दोमान
तीन ताल का संयोजन	त्रिमां / विमान
चार ताल का संयोजन	चौमां / चौमान
पाँच ताल का संयोजन	पंचमा/ पंचमान
छः ताल का संयोजन	छमां/ छमान
सात ताल का संयोजन	सातमां/ सातमान
आठ ताल का संयोजन	आठमां/ आठमान
नौ ताल का संयोजन	नौमां/ नवमान
देश ताल का संयोजन	दशमां/ दशमान
ग्यारह ताल का संयोजन	एघारमां/ एघारमान

बारह ताल का संयोजन　　　　बारहमां/ बारहमान

ग्वारा में अगर एक ही ताल का प्रयोग हो तो उसे 'माथेमा ग्वारा' कहते है, जैसे[1]-

- **ताल का नाम**

1) अस्त्रा माथेमा

2) धलंजति माथेमा

3) एकतालि माथेमा

अधिकतर ग्वारा गायन एक पंक्ति(चरण) का होता है कई गायन में एक से अधिक दो चरण भी होते हैं। जिस ग्वारा में एक ही चरण होता है जिसे छचिलं भी कहते हैं, उस चरण को बार-बार दोहरा कर उसकी सीमा बढ़ाकर गाया जाता है। ग्वारा की प्रत्येक पंक्ति को अलग-अलग नाम दिए गए हैं जैसे-

1. पहली पंक्ति को- माधू　　　　3. तीसरी पंक्ति को- तिक धू
2. दूसरी पंक्ति को- लव: धू

इसी के साथ अंत में वाद्यों द्वारा 'घों' बजाया जाता है।

ग्वारा गायन में वाद्यों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। ग्वारा की प्रत्येक पंक्ति में खिं वादक केवल एक ही बोल द्वारा अलग अलग प्रकारों से संगत करते हैं। खिं वादक राग के निबद्ध ताल में उठान जैसी कोई रचना बजाते हैं जिसे 'छूमां कायेगु' कहते हैं। उसके बाद राग का आलाप किया जाता है जिसे 'क्वला:' भी कहते है। तत्पश्चात ग्वारा की अन्य पंक्तियां माधू, लव: धू, और तिकः धू गाई जाती है।

यदि दाफा संगीत में खिं वादन की विशेषता पर ध्यान करें तो ग्वारा गायन की प्रत्येक पंक्ति में बजाने का तरीका अलग अलग होता है, जिसे विस्तार पूर्वक बजाया जाता है। ग्वारा के तिकः धू को प्रस्तुत करने के बाद अंतिम 'घों' में खिं वाद्य में विशेष प्रकार का वादन होता है। यह विशेष बोल ग्वारा गायन में प्रयुक्त सभी तालों को एक ही तरीके में समावेश करके बजाया जाता है। 'घों' बजाते समय बभू और ता: वाद्य से संगति की जाती है। 'घों' बजते समय गायन भी लंबे समय तक दोहरा कर गाया जाता है। प्रथम पंक्ति 'माधू' से अंतिम पंक्ति 'तिक: धू' तक दोहराकर प्रस्तुत किया जाता है। 'घों' के बाद गायन समाप्त करने के लिए अंतिम पंक्ति में बभू और ता: वाद्य ही बजाया जाता है। तत्पश्चात अंत में गायक एवं अन्य कलाकार प्रथम पंक्ति 'माधू' गा के भजन समाप्त करते हैं। ग्वारा गायन में खिं वादकों को लय का अत्याधिक रूप से ध्यान देना पड़ता है, ग्वारा की प्रत्येक पंक्तियों में अलग-अलग बोलो के प्रकार बजाने होते हैं। ग्वारा गायन में गायकों के साथ-साथ वादकों का भी प्रस्तुतीकरण सुनने एवं देखने को मिलता है।

---

1. धिमय्- पौ पत्रिका/ p-17

2:3:3:3 घोचा गायन

विभिन्न दाफा गुरु के मतानुसार ग्वारा गायन की लगभग एक घंटे की प्रस्तुति के बाद तुरंत उसी गायन के अंत में गाया जाने वाला गीत घोचा गायन है। यह गायन की सीमा छोटी होती है जिसमें एक चरण ही गाया जाता है। इस गायन में केवल एक ही ताल का प्रयोग होता है। घोचा गायन की प्रस्तुति केवल ग्वारा गायन के पश्चात ही होती है।

2:3:3:4 चालि गायन

एक ही ताल में स्वच्छंद रूप में गाए जाने वाले गीत को चालि गायन कहते हैं। यह गायन घोचा गायन से लंबा होता है एवं एक से अधिक चरणों का समावेश किया जाता है। ग्वारा को विलंबित लय में गाया जाता है और उसमें शब्द प्रयोग भी अल्प मात्रा में होता है। दाफा गुरु प्रद्युमन कृष्णा और अन्य दाफा गुरुओं के मतानुसार जिस राग में ग्वारा की रचना हो उसी राग में चालि की रचना होनी चाहिए। अगर ग्वारा और चालि अलग-अलग रागों में एक ही समय गाया जाए तो वह दाफा भजन के नियमों के विरुद्ध हो जाता है। जैसे कि यदि ग्वारा राग यमन में प्रस्तुत हो तो चालिं गायन भी यमन में ही प्रस्तुत होना चाहिए, आशावरी राग में अगर ग्वारा हो तो आशावरी राग में ही चालि निबद्ध होना चाहिए। ग्वारा गायन में एक से अधिक तालों को बजाया जाता है किंतु चालि गीत में अधिकतर एक ही ताल बजाया जाता है। कुछ बंदिशों में अपवाद के रूप में दो या सात तालों को भी बजाया जाता है। ग्वारा गीत से चालि गीत थोड़ा चंचल अर्थात द्रुत लय में होता है, जैसे हिंदुस्तानी संगीत पद्धति में मध्य लय का गायन। चालि गीत की प्रत्येक पंक्तियों में अलग-अलग नाम दिया गया है जैसे गीत की पहली पंक्ति को 'धूवा' या '।।धु।।' कहते हैं। दूसरी पंक्ति को 'न्हयत्वाः' या 'जाः' कहते हैं जिसका चिन्ह '।' है। तीसरी पंक्ति को 'लित्वाः' या 'क्व क्कलाः' कहते हैं जिसमें ।।1 ।। कर के प्रत्येक चरण की संख्या लिखी जाती है।

कुछ चालि गीतों में तीसरी पंक्ति के पूर्व एक और पंक्ति होती है जिसको 'दथुत्वाः' कहते हैं। इस पंक्ति का चिन्ह दूसरी पंक्ति की तरह '।' होता है।
उदाहरण के लिए नीचे गाने के साथ नामों का उल्लेख किया गया है[1]-

- सतगुरु सतगुरु बिव जित बुद्धया शरण ॥धु॥/धुवा
- हाँदे कलिसं जरम जुयाः मफू याये जोग ध्यान । न्हयवाः/ जाः
- काम क्रोध लोभासं तुं मन। दथुत्वाः
- हाँदे मायामोह पाश नं, चिनाव तुं तल थनि
- न्हिन्हिछिया शरील जि हीन ॥1 ॥ धु लित्वाः/ क्कलाः

1. मानन्धर, त्रिरत्न/ हाँदे/ p-7

चालि गीत की सबसे प्रथम पंक्ति को धुवा कहते हैं जो स्थाई है और उसके बाद की सभी पंक्तियों को चरण कहते हैं। सभी चरणों की प्रत्येक पंक्ति के ऊपर उल्लेखित नाम से समझा जाता है।

दाफा गायन में अगर ग्वारा ना गाकर सीधा चालि गीत का प्रस्तुतीकरण करे तो उससे पहले खिं वाद्य से उठान बजाकर कर सकते हैं। ग्वारा के बाद चालि गीत अगर गाया जाए तो बीच में उठान की जरूरत नहीं है। सर्वप्रथम चालि गीत की प्रथम पंक्ति दो बार गाई जाती है उसके बाद खिं वाद्यों में छोटा सा विश्राम लिया जाता है। तत्पश्चात चालि गीत की दूसरी पंक्ति गाने के बाद खिं वाद्य में छोटा सा विश्राम लिया जाता है। अगर गाने की पंक्ति में तीसरी पंक्ति है तो पहली दो पंक्तियों के भांति ही गाया जाएगा। इस गायन के बीच में बभू ताली और खाली दिखाकर बजाया जाता है। जब खिं वाद्य का विश्राम का समय होता है तब (त्वा: ल्हायेगु) बभू वाद्य मात्रा दिखाकर बजाया जाता है।

इसके बाद चरण की सबसे अंतिम पंक्ति गाई जाती है। अंतिम पंक्ति के साथ-साथ पहली पंक्ति भी गाई जाती है। सर्वप्रथम अंतिम और प्रथम पंक्ति गाने के समय बभू वाद्य केवल ताली और खाली दिखाकर ही बजाया जाता है। दूसरी बार जब 'लित्वा:' और 'धुवा' गाते हैं उस समय खिं वाद्य में 'न्हया: बोल' बजाया जाता है। पंक्ति के अंत में खिं वाद्य निरंतर बजाया जाता है इसलिए इसको 'नह्या: बोल' कहा होगा ऐसा शोधार्थीनी का मानना है। नह्या: का अर्थ आगे बढ़ना ऐसा समझा जा सकता है। 'नह्या: बोल' बजाते समय बभू वाद्य ताली और खाली के साथ मात्रा भी दिखाकर बजाया जाती है।

दाफा गायन वादन के कलाकार चाडपर्वों में अपने नगर में गाते एवं बजाते भ्रमण करते हैं। उस दौरान परिक्रमा के क्रम में रास्ते में चलते समय खिं वाद्य में 'नह्या: बोल' बजाया जाता है। रास्ते के बीच में भगवान के मंदिर के सामने बज रहे वाद्य एवं गायन को विश्राम करके खिं वाद्य में(द्य: ल्हागु) भगवान की आरती बजाई जाती है। उसके बाद जब खिं वाद्य में 'नह्या: बोल' बजाया जाता है तो ही सब आगे बढ़ते हैं।

स्थाई की सबसे अंतिम पंक्ति लित्वा: और प्रथम पंक्ति धुवा दो, चार अथवा छः आदि जोड़ीओं में गाने के बाद खिं वाद्य में 'गौ' बोल बजाया जाता है। गौ बोल बजाने के बाद स्थाई की पहली पंक्ति और दूसरी पंक्ति गाई जाती है। यह दोनों पंक्ति दो बार जाने के बाद पुनः धुवा और लित्वा: गाई जाती है। तत्पश्चात वाद्य में गौ बोल बजाके 'चल्ती' बोल बजाया जाता है। चल्ती बोल बजाने के क्रम में दाफा गायन में बाकी के साथ संगत देने वाले वाद्यों को भी बजाया जाता है। इसी तरह चालि म्ये की स्थाई खत्म करके खिं वाद्य में थोड़ा सा विश्राम(त्वा: ल्हाइ) लिया जाता है और इसी प्रकार सभी चरण(अंतरा) गाया एवं बजाया जाता है।

2:3:3:5 आरती

दाफा गायन के अंत में आरती गाई जाती है। सर्वप्रथम आरती गायन के लिए दाफा समूह के मध्य स्थान में रखा गया सुकुन्दा(दिपक) जलाते हैं, फिर आरती शुरू करते हैं। दाफा अगर सुबह और शाम दोनों समय गाने वाले हो तो केवल रात को ही आरती गाई जाती है।[1] आरती गायन से पूर्व राग में आलाप किया जाता है। अगर आरती पूर्व एक ही राग हो तो सीधा आरती का गायन शुरू करते हैं। आरती पश्चात दाफा गीत/भजन का समापन किया जाता है और फिर उसके बाद वाद्यों में देव समर्पण बजाया जाता है। अंत में आरती का सुकुन्दा दाफा गुरु(थकाली) को दिया जाता है वह अपने से बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

2:3:4 दाफा संगीत में प्रयुक्त राग

विभिन्न शोध, अनुसंधान एवं वर्तमान में उपलब्ध दाफा पुस्तकों में रागों का नाम, दाफा गुरुओं द्वारा गाने का ढांचा आदि का अवलोकन अगर किया जाए तो दाफा संगीत प्राचीन समय से रागदारी गायकी मान सकते हैं। हर एक दाफा संगीत ग्वारा, चालि, भजन इत्यादि में निबद्ध पाया जाता है। ग्वारा अथवा चालि गायन पूर्व दाफा गुरु हा, आ, रि, ना, इ शब्दों से पूर्व राग आलाप करते हैं जैसे कि भारतीय शास्त्रीय संगीत में नोम, तोम, त, न, रि, ना, इ इत्यादि शब्दों की सहायता से पूर्व राग आलाप किया जाता है। इस आलाप का मुख्य उद्देश्य राग का माहौल बनाने के लिए किया जाता है। दाफा संगीत में समय प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर रागों में निबद्ध ग्वारा और चालि गीत की प्रस्तुति की जाती है। अलग-अलग भगवान के लिए अलग-अलग रागों में निबद्ध ग्वारा गीत गाया जाता है। अगर रागों के गाने का समय देखा जाए तो सुबह के समय राग रामकली, व्याँचुली, विभास आदि गाए जाते है। शाम के समय बिहाग, गुञ्जली, भुपाली, यमन आदि गाया जाता है। इसी प्रकार ऋतुओं के आधार पर बसंत ऋतु में बसंत, दशहरा(दशैं, मोहनि नख:) में मालश्री राग, दीपावली के समय में धनाश्री राग, वर्षा ऋतु में मल्हार राग में निबद्ध ग्वारा एवं चालि गीत गाए जाते हैं। कुछ विशेष पर्वों में जैसे कि बालाच: ह्रे पर्व में राग कोला, मंगल कार्य में मंगल धुन गाई जाती है। दाफा गायन के अंत में गाई जाने वाली आरती, 'आरती राग' में गाई जाती है। इसी प्रकार विभिन्न संस्कार जैसे विवाह में दुल्हन की विदाई के समय बिहाग राग के दाफा गीत गाए जाते हैं। दूसरी इहिपा(कन्या पूजन) के समय, जंक्व(77 वर्ष के बाद वृद्धावस्था में किए जाने वाली पूजा) इत्यादि में मंगल राग गाया जाता है।

1. श्रेष्ठ, सुरेन्द्र/ लघु शोध निबंध-कीर्तिपुर पाँगा महाब्बो दाफा खलः मा मासिकरूप गाईने दाफा: एक अध्ययन/ गायन विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय/ वि. सं. 2075/ p-23

दाफा गुरु 'त्रिरत्न मानन्धर 'ने अपनी पुस्तक हांदे में दाफा गायन में प्रयुक्त होने वाले राग और उनके गायन समय का स्पष्ट रूप में उल्लेख किया है जो इस प्रकार है:

	राग का नाम	**गाने का समय**
1.	राग व्यांचुली -	सुथया नसंचा ई (सुबह के समय)
2.	राग रामकली -	सुथया प्रहर (सुबह के समय)
3.	राग गुञ्जली -	ह्याउँ निभाः या ई (शाम के समय)
4.	राग बिहाग -	बाचा ईनिसें सुथया द्यः मलूतले (रात का समय)
5.	राज मालश्री -	कायाष्टमीनिसें कातिं पुन्हितक (दशेरे के समय)
6.	राग धनाश्री -	काति पुन्हिनिसे सकिमिला पुन्हि तक (दिपावली के समय)
7.	राग कोला -	बालाच: ह्रे नख: ज: ख: (नवम्बर माह के एक पर्व में)
8.	राग बसंत -	श्री पञ्चमी निसे खाइसंल्हू तक (वसंत ऋतु में)
9.	राग आरति -	आरति मत च्याकेत (आरति गाने के समय)
10.	राग मंगल -	त: धंगु उत्सव पुजा आदि क्वचायेका: भ्वयथुवा: या छेंय मंगल हालेबलय (विभन्न पुजा, मंगल कार्यों के समय)

दाफा संगीत में अनेक रागों का प्रयोग पाया गया है। उन रागों को गाने के लिए अलग-अलग प्रहर के अनुसार, ऋतु के अनुसार, संस्कार एवं त्यौहार के अनुसार अलग अलग समय पाया गया है। विभिन्न दाफा पुस्तक, दाफा संगीत के संगीतज्ञों के कथन के अनुसार हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कई मिलते-जुलते रागों का प्रयोग दाफा संगीत में किया जाता है, जिसके नाम कुछ इस प्रकार है-

1. भूपाली	2. रामकली	3. भैरव
4. पूर्वी	5. बिलावल	6. श्री
7. आशावरी	8. नट	9. पटमञ्जरी
10. मारवा	11. जय जयवन्ती	12. पहाड
13. मल्हार	14. बिहाग	15. यमन

परंतु नेवारी दाफा संगीत की विभिन्न पुस्तकों में एवं ग्वारा, चालि गीतों में इन्हीं रागों का नाम थोड़ा बहुत अलग करके लिखा गया है। विभिन्न पुस्तक जैसे लेखक मानदास तुलाधार की 'पुलांगू म्ये मुना', लेखक त्रिरत्न मानंधर द्वारा लिखित 'हांदे' पुस्तक तथा काठमांडू उपत्यका में उपलब्ध प्रायः दाफा ग्रंथों में अलग अलग तरीके से रागों के नाम लिखे गए हैं। इस विषय में विद्वानों के यह मत है कि प्राचीन समय से मौखिक रूप में प्रचलित नेवारी दाफा संगीत को विभिन्न समय में अलग-अलग गुरुओं द्वारा भिन्न-भिन्न

तरीकों से सिखाया गया होगा इसलिए एक ही राग के नाम उच्चारण में फर्क हुआ होगा अतः अर्वाचीन समय में रागों का अपभ्रंश स्वरूप सामने आया है।

विभिन्न पुस्तकों में से संभवित शुद्ध नाम और उनके वर्तमान में प्रचलित नाम कुछ इस प्रकार है:

रागों के संभावित शुद्ध नाम	**प्रचलित रागों के नाम**
1. बिहाग	व्या, व्याग, व्याहाग
2. यमन	इमन
3. बिलावल	बेलावत
4. मल्हार	मल्ला
5. रामकली	रामकरि
6. भुपाली	भुपारि, भुपार
7. नट	नठ, नाठ, नत
8. पहाडि	पहलिया, पहरिया, प: लिया, पहरे
9. मालश्री	मारसि, मालसिरि, मा:र्सि
10. जय जयवन्ती	जय जमंति, जेजमन्थि, जाजवन्ती, जाजिवती
11. भिमपलासी	भीम परास, भिम्फरास, भिमप्रास
12. पटमञ्जरी	प्रथमंजली, प्रथमाञ्जलि, पथमंदलि, पदमजनि, पटमंजली जली

दाफा संगीत में प्रयुक्त कुछ रागों के नाम इस प्रकार है जो हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत से बिल्कुल पृथक है:

1. सिन्हाज्या
2. विजय
3. घातु
4. व्यांचुली
5. आरती

नेवारी जाति के संपूर्ण दाफा संगीत समूह के गायन में विभिन्न राग एवं ताल का प्रयोग किया गया है। परंतु विभिन्न स्थान जैसे काठमांडू, ललितपुर, कीर्तिपुर आदि के दाफा गुरु तथा दाफा संगीत के शोधार्थियों के अनुसार कई दाफा समूह में एक ही धुन और लय में गाए जाने वाली रचना को उसमें उल्लेखित पुस्तकों में रागों के नाम मैं फर्क पाया गया है। रागों के आलाप करने के तरीके ग्वारा, चालि तथा भजन के शब्दों में अंतर पाया गया है। "उदाहरण के लिए 'नारायणजु गूँया सीसं' राग में निबद्ध रचना 'हांदे' पुस्तक में राग धनाश्री में उल्लेखित है, दूसरी 'झींगु भजन में' पुस्तक में राग भंगारी में

उल्लेखित है, तीसरी पांगा महाब्बो दाफा समूह में राग विजय में उल्लेखित है और वही रचना कीर्तिपुर स्थान के कुटी सागल दाफा समूह में राग केदार में उल्लेख किया गया है।"[1] इस प्रकार दाफा संगीत समूह में एक ही राग अपभ्रंश के स्वरूप में पाया जाता है और एक या भिन्न स्वर रचना होते हुए भी रागों के नाम में समानता कम पाई गई है। इस विषय में संगीतज्ञों का मानना है कि दक्ष गुरु की कमी के कारण सिखाने का तरीका भिन्न-भिन्न होने लगा। दाफा संगीत में लेखन से ज्यादा मौखिक रूप में सिखाने की प्राथमिकता दी जाती है, फल स्वरुप वर्तमान में प्राचीन समय के प्रचलित विभिन्न ग्वारा, चालि गीत लुप्त हो चुके हैं।

2:3:5 दाफा संगीत में प्रयुक्त ताल प्रकार

दाफा गायन में ताल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दाफा गायन की सुंदर विशेषता यह है कि एक रचना में विभिन्न तालों का मिश्रण सुनने को मिलता है। जिसको सुनने के बाद श्रोता एवं दर्शक मंत्रमुग्ध होते हैं। दाफा गायन के अंतर्गत खिं मुख्य ताल वाद्य है। इस वाद्य में विभिन्न ताल बजाइ जाती हैं जो भिन्न-भिन्न मात्रा में बनी होती हैं। नेवारी बस्ती के हर एक स्थानों में दाफा संगीत गाने की और बजाने की रूचि वर्तमान में भी बढ़ती रही है परंतु दाफा संगीत में बजाए जाने वाले एक ही ताल की मात्राएं तथा बोल, कई ताल में समान तो कई ताल में भिन्न-भिन्न पाया गया है। उदाहरण के लिए दाफा संगीत में प्रयोग होने वाले विभिन्न ताल और अलग-अलग स्थानों के संगीतकारों द्वारा उल्लेखित ताल की मात्राएं एवं बोल इस प्रकार है:

लेखक: राजेंद्र महर्जन **पुस्तक:** हाम्रो संस्कृतिक पहिचान तथा परंपरागत बाजाहरू
स्थान: ललितपुर **पृष्ठ संख्या:** 37

क्रम	ताल का नाम	मात्रा संख्या	क्रम	ताल का नाम	मात्रा संख्या
1.	चो/च्वः	8	10.	पंचताल	18
2.	जति	7	11.	खरगङ्गा	5
3.	प्रताल	7/14	12.	ब्रह्मताल	10
4.	पलिमा/पलेमां	6/12	13.	गह्र/गरह	-
5.	एकताल	6/12	14.	लंता	-
6.	अस्तरा	10	15.	गछ(गंध) ताल	-
7.	धरंजति	14	16.	थकताल	-
8.	लुपो	6/12	17.	झताल	-
9.	चौताल	12	18.	रूपताल	-

1. श्रेष्ठ, सुरेन्द्र/ लघु शोध निबंध-कीर्तिपुर पाँगा महाब्बो दाफा खलः मा मासिकरूप गाईने दाफा: एक अध्ययन/ गायन विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय/ वि. सं. 2075/ p-25

लेखक: त्रिरत्न मानन्धर **पुस्तक:** हाँदे
स्थान: काठमांडू **पृष्ठ संख्या:** 14-22

क्रम	**ताल का नाम**	**मात्रा संख्या**	**क्रम**	**ताल का नाम**	**मात्रा संख्या**
1.	चो/च्वः	4	10.	पंचताल	-
2.	जति	7	11.	खरगङ्गा	-
3.	प्रताल	7	12.	ब्रह्मताल	-
4.	पलिमा/पलेमां	6	13.	गह्र/गरह	14
5.	एकताल	-	14.	लंता	8
6.	अस्तरा	10	15.	गछ(गंध) ताल	-
7.	धरंजति	-	16.	थकताल	-
8.	लुपो	-	17.	झताल	-
9.	चौताल	-	18.	रूपताल	-

लेखक: यचु शाक्य **पुस्तक:** धा: बाजंया म्हसीका:
स्थान:काठमांडू **पृष्ठ संख्या:** 28

क्रम	**ताल का नाम**	**मात्रा संख्या**	**क्रम**	**ताल का नाम**	**मात्रा संख्या**
1.	चो/च्वः	4	10.	पंचताल	-
2.	जति	7	11.	खरगङ्गा	-
3.	प्रताल	7	12.	ब्रह्मताल	-
4.	पलिमा/पलेमां	6	13.	गह्र/गरह	-
5.	एकताल	-	14.	लंता	-
6.	अस्तरा	10	15.	गछ(गंध) ताल	-
7.	धरंजति	-	16.	थकताल	-
8.	लुपो	-	17.	झताल	-
9.	चौताल	-	18.	रूपताल	-

लेखक: सुरेन्द्र श्रेष्ठ **पुस्तक:** M.P.A. लघु शोधनिबंध
स्थान: काठमांडू **पृष्ठ संख्या:** 33-34

क्रम	ताल का नाम	मात्रा संख्या	क्रम	ताल का नाम	मात्रा संख्या
1.	चो/च्वः	4	10.	पंचताल	-
2.	जति	7	11.	खरगङ्गा	-
3.	प्रताल	7	12.	ब्रह्मताल	-
4.	पलिमा/पलेमां	6	13.	गह्र/गरह	-
5.	एकताल	6	14.	लंता	-
6.	अस्तरा	10	15.	गछ(गंध) ताल	14
7.	धरंजति	-	16.	थकताल	-
8.	लुपो	-	17.	झताल	-
9.	चौताल	-	18.	रूपताल	-

लेखक: सुभाषराम प्रजापति **पुस्तक:** पुलांगु नेपालभाषा नासक्या संगीत पक्ष
स्थान: थिमि भक्तपुर **पृष्ठ संख्या:** 39-43

क्रम	ताल का नाम	मात्रा संख्या	क्रम	ताल का नाम	मात्रा संख्या
1.	चो/च्वः	4	10.	पंचताल	18
2.	जति	7	11.	खरगङ्गा	-
3.	प्रताल	7	12.	ब्रह्मताल	-
4.	पलिमा/पलेमां	6	13.	गह्र/गरह	14
5.	एकताल	6	14.	लंता	8
6.	अस्तरा	10	15.	गछ(गंध) ताल	-
7.	धरंजति	-	16.	थकताल	7
8.	लुपो	-	17.	झताल	7
9.	चौताल	16	18.	रूपताल	16

वर्तमान में संगीतज्ञों ने नए नए ताल की भी रचना की है और उसका प्रयोग दाफा संगीत में किया है। परंतु पारंपरिक दाफा गायन में प्रयोग हुए ताल कुछ इस प्रकार है:

1. च्व:	2. लंता:	3. जति (षजति/षष्ति)
4. प्रताल (पर्ता:)	5. पलेमां (पलिमान/परिमान)	6. अस्त्रा (अस्तरा)
7. गह्न: / गछ (गन्ध)		

इन सात तालों की विस्तृत माहिती कुछ इस प्रकार है:

नोट: यहाँ तिं का सामान्य अर्थ ताली एवं छु का सामान्य अर्थ खाली से है।

1. च्वः

मात्रा : 4
विभाग : 2/4
ताली : 1 (पहली मात्रा पर)
खाली : 1 (तीसरी मात्रा पर)

मात्रा संख्या	1	2	3	4
ताल के बोल	**धिं**	**रधिं**	**-र**	**ताधें**
चिन्ह	तिं X		छु 0	

अथवा

मात्रा संख्या	1	2	3	4
ताल के बोल	**थिं**	**रथिं**	**-र**	**ताधें**
चिन्ह	तिं X		छु 0	

2. लंता

मात्रा : 8
विभाग : 8
ताली : 1 (पहली मात्रा पर)
खाली : 1 (पाँचवी मात्रा पर)

मात्रा संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8
ताल के बोल	**थिं**	**थिं**	**नां**	**घें**	**-**	**-**	**द्रिख**	**तिं**
चिन्ह	तिं X				छु 0			

3. जति

मात्रा : 7
विभाग : 3/7
ताली : 2 (पहली और चौथी मात्रा पर)
खाली : 1 (छठी मात्रा पर)

मात्रा संख्या	1	2	3	4	5	6	7
ताल के बोल	**खर्ग**	**तिं**	**दिं**	**नार**	**मना**	**खति**	**ना**
चिन्ह	तिं X			तिं 2		छु 0	

अथवा

मात्रा संख्या	1	2	3	4	5	6	7
ताल के बोल	-	**थिंर**	**घ्रां**	-	**थिंर**	**थिंर**	**घ्रां**
चिन्ह	तिं X			तिं 2		छु 0	

4. पलेमां

मात्रा : 7
विभाग : 7
ताली : 1 (चौथी मात्रा पर)
खाली : 1 (पहली मात्रा पर)

मात्रा संख्या	1	2	3	4	5	6	7
ताल के बोल	**घ्रां**	**घे**	**तिं**	**घें**	**तिं**	**नां**	-
चिन्ह	छु 0			तिं 1			

5. पलेमां

मात्रा : 6
विभाग : 3/6
ताली : 2 (पहली और तीसरी मात्रा पर)
खाली : 1 (पाँचवी मात्रा पर)

मात्रा संख्या	1	2	3	4	5	6
ताल के बोल	**घ्रां**	**घेंतिं**	**रघें**	**नां**	**रगदिग**	**नांघें**
चिन्ह	तिं X		तिं 2		छु 0	

6. अस्त्रा/अस्तरा

मात्रा : 10
विभाग : 10
ताली : 3 (पहली, पाँचवी और सातवी मात्रा पर)
खाली : 2 (तीसरी और नौ वीं मात्रा पर)

मात्रा संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ताल के बोल	**घ्रां**	**घेंतिं**	**रघें**	**नाघें**	**घ्रां**	**घेंतिं**	**रघें**	**ना**	**द्रखतिं-**	**नाघें**
चिन्ह	तिं X		छु 0		तिं 2		तिं 3		छु 0	

7. गह्ः / गछ (गन्ध)

मात्रा : 14
विभाग : 7/14
ताली : 4 (पहली, पाँचवी, नौवी और ग्यारहवीं मात्रा पर)
खाली : 3 (तीसरी, सातवी और तेरहवीं मात्रा पर)

मात्रा संख्या	1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12	13 14
ताल के बोल	**घ्रां घेंतिं**	**रघें नांघें**	**घ्रां घेंतिं**	**रघें नांघें**	**घेंतिं रघें**	**ना रग**	**दिग नाघें**
चिन्ह	तिं X	छु 0	तिं 2	छु 0	तिं 3	तिं 4	छु 0

अथवा

मात्रा संख्या	1	2	3	4	5	6	7
ताल के बोल	**घ्रां**	**घेंतिं**	**रघें**	**नांघें**	**घ्रां**	**घेंतिं**	**रघें**
चिन्ह	तिं X		छु 0		तिं 2		छु 0
मात्रा संख्या	8	9	10	11	12	13	4
ताल के बोल	**नांघें**	**घ्रां**	**घेंतिं**	**रघें**	**ना**	**रगदिग**	**नांघें**
चिन्ह		तिं 3		तिं 4		छु 0	

दाफा संगीत में उल्लेखित सात ताल प्राचीन से अर्वाचीन समय तक प्रचलन में रही है ऐसा माना जाता है। दाफा में सर्वप्रथम गाए जाने वाले ग्वारा में ज्यादातर अस्त्रा और गह्ः ताल का प्रयोग होता है। कुछ ताल को एक दूसरे का संयोजन स्वरूप माना गया है। जैसे-

अस्त्रा ताल (10 मात्रा)= च्वः ताल (4 मात्रा) + पलेमा ताल (6 मात्रा)

अस्त्रा ताल 10 मात्रा का ताल है। इसमें दो तालों का मिश्रण बताया है। अस्त्रा ताल 4 मात्रा के च्वः ताल का एक आवर्तन और 6 मात्रा के पलेमा ताल के एक आवर्तन का मिश्रण है।

गह्र: ताल (14 मात्रा)= च्वः ताल (4 मात्रा) (दो आवर्तन) + पलेमा ताल (6 मात्रा)

इसी प्रकार दूसरी ताल गह्र: में भी अन्य तालों का मिश्रण माना गया है। गह्र: ताल 14 मात्रा का ताल है। इसमें 4 मात्रा का च्व: ताल के दो आवर्तन और 6 मात्रा के पलेमा ताल का एक आवर्तन मिश्रित है।

प्रताल और जति दोनों ताल सात-सात मात्राओं है परंतु दोनों तालों में बोल, ताली और खाली का अंतर है। दोनों तालों में घन वाद्य बभू बजाने का तरीका भी अलग है। प्रताल में पहली मात्रा पर खाली है किंतु जति ताल में पहली मात्रा पर ताली है।

उपरोक्त तालों के वर्णन में समान मात्रा के ताल होते हुए भी ताल के बोलो में भिन्नता पाई गई है। इस प्रकार अन्य दाफा समूह में इससे भी अलग बोल होंगे ऐसा शोधार्थीनी का मानना है। इसीलिए दाफा संगीत में ता:/तिनछुक (घन वाद्य) का महत्व बहुत है, अतः प्रत्येक ताल की ताली में 'तिं' और खाली को दर्शाने के लिए 'छू' बजाया जाता है। इसे ताल के वर्णन में भी शोधार्थीनी ने दर्शाया है। **ताल की मात्रा, ताली, खाली का चिन्ह और विभाग को दर्शाने के लिए हिंदुस्तानी भातखंडे ताल पद्धति को अपनाया गया है। जैसे मात्रा को दर्शाने के लिए 1, 2, 3, 4 इत्यादि, सम को 'X', खाली पर '0' और बाकी की ताली को दर्शाने के लिए 2, 3, 4 इत्यादि संख्या लिखी जाती है।** किसी ताल में सभी मात्रा के बाद खंड दिखाया गया है अर्थात् प्रत्येक मात्रा के बाद खंड दर्शाया गया है परंतु ताली और खाली के चिन्ह को देखकर प्रत्येक मात्रा में विभाग की आवश्यकता नहीं है ऐसा शोधार्थीनी का मानना है।

वर्तमान में कई दाफा समूह के गुरुओं द्वारा ताल को लिपिबद्ध करके सिखाने का प्रचलन है। जिससे दाफा संगीत को भावी पीढ़ी तक पहुंचाने में मदद मिलेगी। इस कार्य से दाफा संगीत के इच्छुक विद्यार्थी आसानी से सीख रहे हैं और लाभान्वित हो रहे हैं।

2:3:6 विभिन्न प्रसंग में दाफा गायन

नेवारी संस्कृति में जन्म से लेकर मृत्यु तक संगीत को धार्मिक रूप में अथवा संस्कारगत रूप में अपनाया गया है। उपत्यका के विभिन्न दाफा गुरु तथा संगीतज्ञ के अनुसार दाफा संगीत को निम्न रूप से विभाजित किया जा सकता है:

- ➢ धार्मिक रूप में दाफा:
- नियमित एवं निश्चित महीने में दाफा
- विभिन्न त्योहारों तथा पर्वों में दाफा

➢ संस्कारगत रूप में दाफा:

- व्रतबंध, जंकु आदि शुभ कार्य में दाफा
- विवाह कार्य में दाफा
- मृत्यु संस्कार तथा श्राद्ध कार्य में दाफा

2:3:6:1 धार्मिक दाफा

धार्मिक दाफा में नेवारी संगीत की जो प्राचीन समय से दाफा भजन की परंपरा चली आ रही है, उनही को गाने की परम्परा है। इस गाने के अंतर्गत विभिन्न भगवान के दाफा भजन गाया तथा बजाया जाता है। धार्मिक दाफा को नियम अनुसार अलग अलग समय, त्यौहार, पर्व इत्यादि के अनुरूप गाने की परम्परा है।

2:3:6:1:1 नियमित एवं निश्चित महीने में दाफा

नियमित एवं निश्चित महीने में ऐसे वर्ष के तीन महीनों के प्रत्येक दिन सुबह और शाम को अपनी टोल(Society) की फल्चा/फलैचा(Open-air Rest House) में दाफा समूह बैठकर भगवान की आराधना करते हैं। यह तीन महीने नेवारी महीनों में से गुँला (अगस्त), ञला (सितंबर) और सिल्ला (जनवरी-फरवरी) होते हैं। सर्वप्रथम गुँला महीने से दाफा गायन शुरू किया जाता है। नेवारी परंपरा अनुसार गुँला महीने में भगवान बुद्ध की प्रार्थना करने की परंपरा है। प्राचीन काल से अधिकतर नेवारी जाति में बौद्ध धर्मियों का बाहुल्य रहा है। इसलिए प्रतिदिन सुबह श्रावण शुक्ल प्रतिपदा से भाद्र शुक्ल प्रतिपदा तक विशेष रूप से भगवान बुद्ध संबंधित दाफा गायन तथा वादन किया जाता है। **"**इस प्रकार प्रतिदिन दाफा भजन में तिथि, वार के अनुसार भी गाया जाता है। जैसे मंगलवार को गणेश भगवान, एकादशी में शिव भगवान, सङ्क्रातिं में करुणामई, गुरुवार को नाट्येश्वर भगवान का दाफा गायन किया जाता है।**"**[(1)]

दूसरे महीने के भाद्र शुक्ल प्रतिपदा से आश्विन शुक्ल नवमी तक ञला महीने का दाफा गायन/वादन शुरू किया जाता है। संगीतज्ञों के अनुसार गुँला महीने में अधिकतर दाफा समूह में सुबह गाया जाता है और ञला महीने में शाम को दाफा गायन गाने का प्रचलन ज्यादा है। इसलिए अधिकतर स्थानों में इसी नियम का पालन किया जाता है। ञला दाफा में भैरव, अष्टमातृका, नव दुर्गा की पूजा-विधि करके दाफा गायन किया जाता है। इस समय विभिन्न शक्तिपीठ में दर्शन करके भक्ति गीत गाने की प्रथा भी है।

1. श्रेष्ठ, सुरेन्द्र/ लघु शोध निबंध-कीर्तिपुर पाँगा महाब्बो दाफा खलः मा मासिकरूप गाईने दाफा: एक अध्ययन/ गायन विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय/ वि. सं. 2075/ p-16

इसी प्रकार सिल्ला महीना अर्थात् माघ महीने में परंपरागत रूप से सिल्ला दाफा गाया जाता है जिसमें विभिन्न दाफा ग्वारा तथा चालि भजन गाने की परंपरा है। माघ महीने में सुबह शिव भगवान के विभिन्न शिवालयों में दर्शन करने की परंपरा है और रात को श्री स्वस्थानी मां की कथा वाचन का श्रवण करने का प्रचलन है। इस महीने में दाफा समूह द्वारा भगवान शिव संबंधित विभिन्न दाफा भजन गाए जाते हैं। इसी महीने में सरस्वती माता की पूजा आराधना भी करते हैं जिससे बसंत का आगमन माना जाता है। इसलिए सिल्ला महीने में दाफा गायन विशेष रूप से राग बसंत में निबद्ध होता है तथा दाफा ग्वारा तथा चालिं भजन गाए जाते हैं।

2:3:6:1:2 विभिन्न त्यौहार तथा पर्व में दाफा:

संपूर्ण नेपाल की विभिन्न जातियों में से नेवार जाति को सबसे ज्यादा त्यौहार, पर्व तथा जात्रा परंपरा मनाने वाली जाति कहा गया है। उपत्यका की विभिन्न बस्तियों में जात्रा त्यौहार अलग अलग तरीके से मनाए जाते हैं। नेवारी लोग इन सभी त्यौहार, जात्रा पर्व को अपनी पहचान के रूप में संगीत उत्सव के साथ धूम धाम से मनाते हैं। इन त्यौहार पर्व में नेवारी जाति के मुख्य संगीत प्रकार दाफा समूह की मुख्य भूमिका रहती है।

अलग-अलग त्यौहार, जात्रा पर्व में भिन्न प्रकार का ग्वारा गायन होता है। जैसे नारायण भगवान की जात्रा में नारायण ग्वारा, गणपति भगवान की जात्रा में गणेश ग्वारा, मच्छिंद्रनाथ जात्रा में मच्छिंद्र ग्वारा, दशहरा में मालश्री ग्वारा, भैरव की जात्रा में भैरव ग्वारा, बुद्ध जयंती में भगवान ग्वारा इत्यादि गाया जाता है। इस प्रकार वर्ष में नियमित रूप से तीन महीने दाफा गायन/वादन की परंपरा चली आ रही है। इसके अलावा पूरे वर्ष भर में अलग-अलग स्थानों में अपने त्यौहार पर्व के अनुरूप दाफा संगीत की धुन गूंजती है। काठमांडू उपत्यका के दाफा समूह में प्रचलित कुछ ग्वारा तथा चालि भजन इस प्रकार है:

<u>**स्वयंभू भगवान ग्वारा**</u>

राग- पहलिया **, ताल-** गर:

स्वयंभू भगवान पशुपति नाथ
गुहेश्वरी देवी तलेजु ईश्वरी।
माता हारती रक्षा याव
नेपाल देशे अष्ट मात्रिका।।[1]

1. महर्जन, शेषनारायण/ परंपरागत प्रखुघाँ त्वाः या दापाम्ये/ p-36

चालि

राग- मालश्री ताल- जति

जय देव देवी जोगनिन्द्रा जोतिरूप ज्वालामुखी ।। धु।।
असुर सकल संहारे शंखर देवगण सव किरमुखी ।।
हे माई जयन्ति, अंबा अंबिके निलभक्ति अभिमंत्र दाने
कालिका कर खर्ग खपर धनुष शोभित पायनि ।।9।।
हे माई सिलस, ससिमुख, सुवर्ण कुण्डल सिहबाहिनी रूपिणी
मुंद्रमाला सुगंध शोभित आदिकरण शिव धनी ।।2।।
है माई तंत्र तोहे नृपसिंहे झाझुरी, ज्ञानरूप हराहरी
तोहे देव कौन विलंब धन जन पदम परम्पर माहेश्वरी ।।3।।[1]

2:3:6:2 संस्कारगत दाफा:

दाफा गायन/वादन को नेवारी समाज में अभिन्न अंग के रूप में मानते आए हैं इसलिए इस भक्ति रस प्रधान गायन /वादन को अपने जीवन के अमूल्य संस्कारगत कार्यों में भी इस परंपरा को शामिल की हुई प्राप्त होती है। नेवारी परम्परा अंतर्गत व्रतबंध, जंकु, विवाह, मृत्यु संस्कार तथा श्राद्ध इत्यादि मुख्य संस्कारगत कार्य माने गए है।

2:3:6:2:1 व्रतबंध, जंकू आदि शुभ कार्य में दाफा:

नेवारी परंपरा अनुसार 15 या 16 वर्ष की आयु के कुमारों को कर्मकार्य के रूप में व्रतबंध संस्कार किया जाता है और वृद्धावस्था में 77 वर्ष के बाद उनकी स्वस्थ एवं दीर्घायु के लिए किए जाने वाले कर्म को जंकू कहते हैं। इन संस्कारगत कार्यों में इच्छा अनुसार अपनी नज़दीक के दाफा समूह को घर में बुलाया जाता है और दाफा समूह द्वारा संगीत का वातावरण बनाया जाता है। इन संस्कार कार्यों को दाफा भजन में गणेश वंदना से शुरू कर मंगल शब्द से सुसज्जित भजन गाकर अंत में सुकन्दा(दिया) जलाकर आरती द्वारा संपन्न किया जाता है।[2] दाफा गायन समूह गाने से पहले जिसका संस्कार कार्य होता है वही व्यक्ति उनके परिवार के साथ नगर परिक्रमा में भी भाग लेता है। उसके बाद अपनी प्रस्तुति मंगल कामना के साथ प्रस्तुत करते हैं। इस प्रस्तुति के बाद आयोजक के घर से नगद तथा अन्न का दान दिया जाता हैं और दाफा समूह को भोज(खाना) खिलाकर उन्हें सम्मान पूर्वक विदा करते हैं।

1. ताम्रकार गोविंद/ दाफा भजनया म्यें मुना/ p-144
2. गुज्जे, मालाकार/ साक्षात्कार/ मिति- 14/09/2021

2:3:6:2:2 विवाह कार्य में दाफा

अन्य जातियों की तरह संगीत का उपयोग नेवारी जाति के विवाह प्रसंग में भी किया जाता है। वर जब वधु को लेने जाता है उस समय नेवारी समाज में दाफा समूह को संगीतमय वातावरण बनाने के लिए निमंत्रित किया जाता हैं। इसमें गायन के साथ वादन क्रिया में बांसुरी एवं खिं वाद्य बजाया जाता हैं जिसमें नेवारी संगीत के प्रचलित धुन तथा गीत गाएं बजाए जाते है। वधु के घर में पहुंचने के बाद दाफा समूह गणेश वंदना दाफा गीत से करते है। दाफा गीत के अलावा बाँसुरी में फिल्मी गीत बजाकर बाकी रिश्तेदारों को नृत्य करने वाला वातावरण बनाया जाता है। इस प्रकार विवाह में उपस्थित सारे परिवार जन दाफा संगीत की धुन में नृत्य करके हर्षोल्लास के साथ विवाह उत्सव मनाते है। प्रत्येक विधि विधान करने के बाद दुल्हन की विदाई के समय दाफा समूह छोटा सा विदाई गीत प्रस्तुत करते है। काठमांडू कीर्तिपुर में गाया जाने वाला विवाह दाफा गीत:

हसनापुरी नगरमें हे धनराज या पुत्र
महारानी मनोहरा-2 कन्यादान विल
हुनुनुनु हुंदल में हे बाजा लें सोया हाल
सिंदेरी जात्रा याना दरबारे विख्यात-2[1]

दुल्हन की विदाई के बाद दूल्हे के घर पुनः वाद्य वादन के साथ दोनों का स्वागत किया जाता है। इस प्रकार दूल्हे के घर दाफा समूह पहुंचने के बाद खाने पीने की व्यवस्था की जाती है और दान दक्षिणा देकर दाफा समूह को विदा करते है। वर्तमान में विवाह में अन्य जातियों के प्रभाव के कारण बैंड बाजा को भी शामिल किया जाने लगा है एवं विवाह में अपने मनपसंद संगीत समूह को बुलाने की परंपरा शुरू हो चुकी है।

2:3:6:2:3 मृत्यु संस्कार एवं श्राद्ध कार्य में दाफा:

नेवारी जाति में दाफा संगीत की भूमिका शुभ कार्यों से शुरू कर मृत्यु तक के शोकाकुल परिस्थितियों में भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। कीर्तिपुर के दाफा गुरु ज्ञानेश्वर निभा के अनुसार दाफा समूह के दाफा गुरुओं का मृत्यु होती है तब दाफा समूह गायन तथा वादन करके आर्यघाट तक ले जाते है। उस समय दाफा गायन में शुभ, मंगल गीत और धुन बजाई जाती है। मृत्यु संस्कार की अन्य विधियों में तथा श्राद्ध कार्यों में भी दाफा समूह को घर पर निमंत्रित कर दाफा गायन वादन कराने की परंपरा वर्तमान में भी

1. श्रेष्ठ, सुरेन्द्र/ लघु शोध निबंध-कीर्तिपुर पाँगा महाब्बो दाफा खलः मा मासिकरूप गाईने दाफा: एक अध्ययन/ गायन विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय/ वि. सं. 2075/ p-20

प्रचलन में है। इस तरह के कार्यों में घर में शांतिमय वातावरण की भावना रख तिथि, वार, पर्व के अनुरूप भजन, गीत प्रस्तुत करा जाता है।

2:3:7 दाफा संगीत में प्रचलित विभिन्न ग्वारा तथा चालि गीत

संपूर्ण नेवारी जाति के अपने अपने विस्तार में दाफा संगीत प्रचलित है। यह दाफा समूह अपने विचार एवं तरीके से दाफा गायन प्रस्तुत करते है। दाफा गायक एवं वादक तिथि, वार, ऋतु, जात्रा आदि पर्वों के अनुरूप दाफा में ग्वारा, चालि तथा भजन गाते है। कीर्तिपुर सागल त्वाः दाफा गुरु ज्ञानेश्वर महर्जन के मतानुसार दाफा गायन को कुछ इस प्रकार विभाजित किया गया है:

रविवार: कुमारी, भीमसेन भगवान के दाफा भजन गाए जाते है।

सोमवार: महादेव (भगवान शिव) के दाफा भजन गाए जाते है।

मंगलवार: भगवान गणेश के दाफा भजन गाए जाते है।

बुधवार: भगवान बुद्ध तथा करुणामय मच्छिन्द्रनाथ के दाफा भजन गाए जाते है।

गुरुवार: नाट्येश्वर तथा भगवती माता के दाफा भजन गाए जाते है।

शुक्रवार: नारायण, कृष्ण इत्यादि भगवान के दाफा भजन गाए जाते है।

शनिवार: इस दिन दाफा भजन समूह में भगवती, भैल द्यः अर्थात् भीमसेन भगवान के दाफा भजन गाए जाते है और यह परंपरा प्रायः सभी नेवारी दाफा समूह में प्रचलित है।

परापूर्व काल से चली आ रही इस परंपरा में प्रत्येक स्थान के अनुसार गाने तथा बजाने का तरीका थोड़ा बहुत अलग पाया गया है अर्थात परिवर्तित स्वरूप पाया गया है। परंतु प्रत्येक दाफा समूह में ग्वारा तथा चालि गीत अवश्य ही गाया जाता है। भिन्न-भिन्न स्थानों के कुछ प्रचलित ग्वारा-चालि गीत कुछ इस प्रकार है:

2:3:7:1 भगवान ग्वारा

भगवान, हांदे
मामकी, लोचनी, पद्‌मनी, तारा हांदे
चतुर्दिग, भगवान, मोक्षदाता,
त्रिलोक्य, ईश्वर, महाः बुद्ध हाँहांदे
धर्म धातु ॥

भावार्थ: यह भगवान बुद्ध का ग्वारा गीत है, जिसमें बुद्ध की शक्तियों के बारे में बखान किए हैं। इस गीत में राग के नाम का उल्लेख नहीं किया गया है परंतु ग्वारा की प्रत्येक पंक्ति को क्रमशः चो, पलेमा, अस्त्रा, जति तथा प्रताल में निबद्ध किया हुआ है। दाफा संगीत में बुद्ध भगवान का ग्वारा मुख्यतया वैशाख महीने तथा गुंला महीने में गाया जाता है। और अगर वार के अनुसार देखा जाए तो प्रत्येक बुधवार को गाने की परंपरा है। इस ग्वारा गीत की स्वरलिपि इस प्रकार है(1):

1. शाक्य, यचु/ धाः बाजा म्हसीका/ p-111

नोट: इस पूरे शोध में शोधार्थिनी द्वारा संकलित सभी स्वरलिपियाँ एवं ताल चिन्ह, हिंदुस्तानी भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति के अनुसार किए गए हैं।

ताल नाम	**मात्रा संख्या**									
	1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**
चो	**प** भ **म** वा	**सां** ग **रे** -	**नि** - **रे** -	**सांनि** - **सानि** -	**प** - **सा** न	**म** - - -	**प** हां **रे** - **नि** हां	**म** दे **पम** - **सांरें** दे		
पलेमा	**रें** मा **रें** लो **प** प **प** ता	- - **नि** - **म** द् **म** -	**रें** म **सां** च **प** म **रे** रा	- - - - - - - -	**रें** - **सांनिसांरे** - **पध** - **रे** हां	**सां** की **सां** नी **<u>नि</u>ध** नी **रे** दे				
अस्त्रा	**रे** च **रे** भ **प** मो	- - - - **प** ऽ	**रेम** तु **रेम** ग **म** क्ष	**पम** र् **पम** - **प** -	**रे** दि **रे** वा **नि** दा	**रे** - **रे** - **नि** -	**सा** ग **सा** न **सां** ता	- - - - - -	- - - - **प** हां	- - - - **निसां** दे
जति	**रें** त्रि **रें** ई **प** म **प** बु	**रें** - **नि** - **प** - **प** -	- - **नि** - **म** - **म** -	**रें** लो **सां** श्व **प** हा **रे** द्ध	- - - - - - - -	**रें** क **सांनिसांरे** - **पध** - **रे** हां	**सा** - **सां** र **<u>नि</u>ध** - **पम** हांदे			
प्रताल	ध र्म आ	- - -	- - -	- - -	- धा तु	- - -	- - -			

2:3:7:2 नृत्यनाथ ग्वारा

हाँदे नृत्यनाथ हरष वरस यानव
हाँदे नन्दी भन्दी बेताल सहित म्हितुम्ह
हाँदे वहे नाथ ननिः स बास यानाव
सेवकया उपरस दया तवम्ह ॥

भावार्थ: यह दाफा ग्वारा गीत नृत्यनाथ भगवान शिव का है। प्रस्तुत दाफा ग्वारा गीत को नेवारी दाफा संगीत का गुरु भगवान मानते हैं। सभी के ऊपर दया बरसाने वाले भगवान शिव के गुणगान का उल्लेख है। इस ग्वारा गीत में भी एक से अधिक तालों का प्रयोग किया गया है जैसे पलेमा, चो, अस्त्रा और जति। इस गीत में दोनों निषाद का प्रयोग किया है परंतु राग के नाम का उल्लेख नहीं प्राप्त होता है। दाफा गायन की परंपरा अनुसार नृत्यनाथ ग्वारा को कभी भी गा सकते हैं और चिला अर्थात माघ(शिव साधना) महीने में विशेष रुप से गाने का प्रचलन होगा ऐसा शोधार्थीनी का मानना है। नृत्यनाथ ग्वारा की स्वरलिपि निम्नलिखित है[1]:

ताल नाम	**मात्रा संख्या**									
	1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**
पलेमा	**प** नि **रें** ह	**पधसां** त्य **सांनि** S	**सां** ना **ध** र	**-** S **प** S	**प** हां **सां** S **पधनि** S	**प** दे **सां** थ **ध** S				
चो	**प** ष **प** या	**म** S **मग** S	**ग** व **रे** S	**रे** S **मग** S	**ग** र **रे** नव	**गम** S **सा** S	**प** स **सा** हां	**निध** S **सा** दे		
अस्त्रा	**सा** न **सां** बे	**-** न् **S** S	**रे** दी **सां** S	**ग** S **निध** S	**म** भ **प** ता	**ग** न् **पध** S	**म** दि **म** ल	**-** S **S** S	**गम** S **ग** S	**-** S **रे** S
जति	**ग** स **ग** म्हि	**ग** S **रे** S	**रे** S **मग** तु	**ग** हि **रे** म्ह	**गम** S **-** S	**पधप** S **सा** हां	**म** त **-** दे			

1. शाक्य, यचु/ धाः बाजा म्हसीका/ p-111

2:3:7:3 जय करुणामय मच्छिन्दरनाथ चालि

राग- राज विजय **ताल-** च्व:

जय करुणामय मच्छिन्दरनाथ[(1)] ।।धु।।

बालख सुरज उन शरीरया शोभा नं लुँया मटुक नं पुयाव।

गजमोति मणिमय, क्रखा नं गलसं ल्वव तेज नं मदत व समान ।।१।। धु

करुणा नं तव खसे अति मन रस दसे तल स्वंगुलि लोक हिलाव।

द्वलछि म्हुतुया गुण, जुल शेषनाग नं फइव छु याये व बखान ।।२।। धु

ब्रह्मादि देवगणं भगति नं तनमन खनाव छि पुरुष पुराण।

मुनि नर नाग नं, भजलप्ये छि चरण प्यता पद लाक वरदान ।।३।। धु

देवी चन्द्रलक्ष्मी नं ल्हानादिल थ्व वचन दया दसे ङन भगवान।

धनी ललितपुरया, कामना विष्णु मल्लया पूरण याहुने कृपा नं ।।४।। धु

भावार्थ: जय करुणामय मच्छिन्दरनाथ चालि गीत नेवारी भाषा में लिखा गया है। नेवारी संस्कृति में मच्छिन्दरनाथ भगवान को रोग, पीड़ा, दुःख को दूर करने वाले एवं वर्षा ऋतु के देवता माना जाता है। नेवार जाति एक कृषि प्रधान जाति है इसलिए वे मच्छिन्दरनाथ भगवान की पूजा अर्चना ज्यादा करते है। प्रत्येक दाफा समूह में गायक अलग अलग रागों में निबद्ध रचनाओं को अपने विचार से गाते है। मच्छिन्दरनाथ ग्वारा या चालि को बैशाख महीने में अधिक मात्रा में गाया जाता है। प्रस्तुत रचना में जय करुणामय मच्छिन्दरनाथ भगवान के गुणगान गाएं है। यह रचना राग राज विजय एवं चो/च्वः ताल में निबद्ध है। इस चालि गीत के लेखक का नाम उपलब्ध नहीं है किंतु शोधार्थिनी का यह मानना है कि इसकी रचना मल्ल शासनकाल के विष्णु मल्ल के समय में हुई होगी। जय करुणामय मच्छिन्दरनाथ चालि गीत की स्वरलिपि निम्नलिखित है:

1. मानन्धर, त्रिरत्न/ हांदे/ p-39, 40

ताल नाम	मात्रा संख्या							
	तिं	२	छु	४	तिं	२	छु	४
धुवा		**सासा**	**सा**	**नी़**	**सा**	**प**	**प**	**प**
		जय	क	रू	णा	ऽ	म	य
	पध	**पप**	**मग**	**म**	**ग**	**-रे**	**सानी़**	**सा**
	ऽऽ	मच्छिन्	दऽ	र	ना	ऽऽ	ऽऽ	थ

ताल नाम	मात्रा संख्या							
	तिं	२	छु	४	तिं	२	छु	४
न्ह्यत्वाः			**सा**	**सा**		**सासा**	**सा**	**नी़**
			हां	दे	ऽ	बाल	ख	सु
	सा	**प**	**प**	**प**	**पध**	**पप**	**मग**	**म**
	र	ज	उ	न	ऽऽ	शरी	रऽ	या
	ग	**रे**	**सानी़**	**सा**	**-०**	**मम**	**मप**	**प**
	शो	ऽऽ	भाऽ	नं	ऽ०	लुँया	मऽ	टु
	ध	**पध**	**पम**	**म**	**-०**	**सां**	**-**	**सां**
	क	ऽऽ	नंऽ	पु	ऽ०	या	ऽ	ऽ
	सां	**नीध**	**पध**	**पम**	**म**	**-०**		
	व	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ०		

ताल नाम	मात्रा संख्या							
	तिं	२	छु	४	तिं	२	छु	४
लित्वाः			**म**	**म**		**मम**	**म**	**म**
			हां	दे	ऽ	गज	मो	ति
	म	**म**	**ग**	**गरे**	**सा०**	**सांसां**	**सांरें**	**गंरें**
	म	णि	म	यऽ	ऽ०	क्वखा	नऽ	गऽ
	सां	**नीध**	**प**	**प**	**पध**	**पप**	**मग**	**म**
	ल	सऽ	लो	व	ऽऽ	तेज	नंऽ	गऽ
	ग	**गरे**	**सानी़**	**सा**	**-०**	**सां**	-	**सां**
	द	तऽ	वऽ	स	ऽ०	मा	ऽ	ऽ
	सां	**-**	**सांरें**	**गंरें**	**सां**	**नी**	**नीसां**	**नीध**
	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	**ऽ**	**ऽ**	ऽऽ	ऽऽ
	प	**-म**	**म**	**म**	**-०**			
	ऽ	ऽऽ	ऽ	न				

2:3:7:4 जयंती मंगला काली[1] (मालश्री ग्वारा)

राग- मालश्री **ताल-** अस्त्रा

हांदे जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी हांदे।

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥

भावार्थ: नेवारी दाफा संगीत में मालश्री राग ञला(सितंबर) महीने में दशहरा उत्सव के समय गाने का प्रचलन रहा है। इस महीने में विभिन्न शक्तिपीठ में विराजमान माता के गीत गाए जाते हैं। उपरोक्त रचना में भी माता के विभिन्न शक्ति स्वरूप का वर्णन किया गया है। यह ग्वारा मालश्री राग दश मात्रिक ताल अस्त्रा में निबद्ध है।

तिं	२	छु	४	तिं	६	तिं	८	छु	१०
ध	**धसां**	**सां**	**नी**	**ध**	**पमं**	**प**	**-**	**-**	**-**
ज	SS	S	S	**य**	Sन्	ती	S	S	S
रे	**रेम**	**म**	**ग**	**रे**	**रेसा**	**सा**	**-**	**-**	**-०**
मं	SS	ग	ला	का	SS	ली	S	S	S०
रे	**मंमं**	**प**	**ध**	**प**	**म**	**ग**	**रे**	**-**	**-**
भ	SS	द्र	S	का	S	ली	S	S	S
सा	-क	**रेग**	**रेरे**	**सा**	**नी़**	**ध़**	**-०**	**सा**	**सा**
S		पाS	SS	लि	S	नी	S०	हां	दे
सा	**-**	**सा**	**रे**	**ग**	**रेसा**	**सा**	**-**	**-**	**-**
दु	र्	गा	S	क्ष	SS	मा	S	S	S
प	**-**	**प**	**मं**	**प**	**मं**	**प**	**-**	**-**	**-०**
शि	S	वा	S	धा	S	त्री	S	S	S०
रे	**रेम**	**म**	**ग**	**रे**	**रेसा**	**सा**	**-**	**सारे**	**सानी़**
स्वा	SS	हा	S	स्व	SS	धा	S	SS	SS
ध़	**ध़सा**	**सा**	**नी़**	**ध़**	**प़मं़**	**प़**	**-०**	**ध**	**ध**
न	SS	मो	Sस्	तु	SS	ते	S०	हां	दे

1. मानन्धर, त्रिरत्न/ हांदे/ p-70

2:3:7:5 हे शिव पशुपति (चालि)

राग- भैरव **ताल-** जति

शिव पशुपति छि पालि विमति।।
जाजुले लया वान विभुतिया जोती:
कपालस छुस्य तया: चंद्रमा वाकुती ।।धु।।१।।
चोने मुसा नस अति भूत नाप हेति:
जता न हास्य क्ल: गंगा जुया फुती: शिव: ।।धु।।२।।
वछला गृहेश्वरी आदि संगति:
दधुन न्ह्यास्य वल: वध्म बागमती: हे शिव: ।।धु।।३।।

भावार्थ: नेवारी कैलेंडर के अनुसार सिला(माघ) महीने में श्री स्वस्थानी परमेश्वरी का व्रत आरंभ होता है, जिसमें भगवान शिव की दैनिक आराधना की जाती है। इस महीने में हरेक दाफा संगीत समूह भगवान शिव के ग्वारा तथा चालि गीत गाते हैं। उपरोक्त चालि गीत राग भैरव तथा जति ताल में निबद्ध है, जिस में शिव की महिमा का वर्णन किया हुआ है। हे शिव पशुपति (चालिं) की स्वरलिपि निम्नलिखित है[1]:

1 2 3 तिं	4 5 तिं	6 7 छु	1 2 3 तिं	4 5 तिं	6 7 छु
प - - हे S S	**प -** हे S	**प प** शि व	**ध - प** प S शु	**म ग** प S	**रे ग** S ति
ध - ध छि S पा	**ध नि** ली S	**सां नि** S वि	**ध - निध** म S SS	**ध -** ति S	**म -** S S
सां - रें जा S S	**गं -** जु S	**रें -** ले S	**सां नि सां** वा S S	**ध -** न S	**नि -** S S
सां मं मं वि S भु	**मं गं** ति S	**सां नि** S या	**ध - नि** ज्यो S S	**प -** ती S	**म -** S S

यहां उल्लेखित दाफा भजन राग भैरव में निबद्ध है परंतु स्वरलिपि के अनुसार यह गीत राग भैरव की स्वरलिपि का अनुसरण नहीं कर रहा। शास्त्रीय संगीत में रागों के नियम अनुसार राग भैरव में 'रे' और 'ध' कोमल होना चाहिए परंतु इस गीत में यह कोमल स्वर प्राप्त नहीं होते। शोधार्थीनी का मानना है कि सम्भव: केवल राग के नाम को दर्शाने के लिए राग भैरव लिखा होगा।

1. श्रेष्ठ, सुरेन्द्र/ लघु शोध निबंध-कीर्तिपुर पाँगा महाब्बो दाफा खलः मा मासिकरूप गाईने दाफा: एक अध्ययन/ गायन विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय/ वि. सं. 2075/ p-94

2:3:7:6 विद्या धारी (चालि)

राग- वसंत **ताल-** जति

विद्या धारी श्री मञ्जुश्वरी
ज्या सयका व विव ।धु।
हे राम इदेश या भलीं मचा
थाज्या सालं हि न्हिज्या मतु
कपाय् धानी वानी वः छि मतु
इका पका लेके वियाँ
सुन्थ व: छि मतु भलिंचा
छिमी मानं वा धया हल ।।१।।
हे राम, नाम मदु बुवा मदु
सुना न वा धाल
चाया चछि वने थासं मदु
माम मदु बुवा मदु हल
सुना नं वा धया हल ।।२।।

भावार्थ: यह रचना राग वसंत में लिपिबद्ध है। प्रायः वसंत ऋतु अर्थात फागुन एवं चैत्र महीने में यह रचना गाई जाती है। संगीतज्ञों के अनुसार इस ऋतुकाल में गाई तथा बजायी जाने वाली प्रत्येक रचनाओं में वसंत ऋतु का वर्णन, राधा कृष्ण का वर्णन, सरस्वती मां का वर्णन तथा सास बहू की कथा एवं उनकी व्यथाओं का वर्णन प्राप्त होता है। ऊपर उल्लेखित दाफा गीत में सास और बहू के बीच की अनबन की चर्चा की गई है। सांस के व्यवहार से परेशान बहू के मन में प्रकट हो रहे क्षोभ का उल्लेख किया गया है। इस गीत को राग वसंत एवं सात मात्रा के जति ताल में निबद्ध किया गया है। परंतु शोधार्थीनी के मत अनुसार प्रस्तुत गीत की स्वरलिपि वसंत राग की स्वरलिपि के नियमों का अनुसरण नहीं करती है। गीत की स्वरलिपि में रे, ग और नि स्वर कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध है। शास्त्रीय राग वसंत में रे तथा ध कोमल होता है और म तीव्र होता है। इसलिए शोधार्थीनी का मानना है कि यह रचना भैरवी राग में निबद्ध हैं। विद्या धारी (चालि) की स्वरलिपि[1] निम्न है।

1. श्रेष्ठ, सुरेन्द्र/ लघु शोध निबंध-कीर्तिपुर पाँगा महाब्बो दाफा खलः मा मासिकरूप गाईने दाफा: एक अध्ययन/ गायन विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय/ वि. सं. 2075/ p-100

1 तिं	2	3	4 तिं	5	6 छु	7	1 तिं	2	3	4 तिं	5	6 छु	7
			नि वि	**सा** ऽ	**ग** द्या	**म** ऽ	**ध** धा	**-** ऽ	**-** ऽ	**सां** री	**-** ऽ	**रें** ऽ	**-** ऽ
सां श्री	**-** ऽ	**रेंसां** ऽऽ	**नि** म	**सांनि** ऽऽ	**ध** ऽ	**निध** ञ्जु	**प** श्व	**-** ऽ	**-** ऽ	**म** री	**-** ऽ	**म** ऽ	**पम** ऽऽ
ग ऽ	**-** ऽ	**-** ऽ	**ग** ज्या	**म** ऽ	**ध** स	**-** य	**प** का	**म** ऽ	**-** ऽ	**ग** ऽ	**-** ऽ	**प** ऽ	**म** व
ग वि	**-** ऽ	**रे** ऽ	**सा** व	**नि** ऽ	**सा** ऽ	**-** ऽ	**-** ऽ	**-** ऽ	**-** ऽ				
धीमी लय (Slow Tempo):													
			सां हे	**गरें** ऽऽ	**सां** रा	**नि** म	**सां** इ	**गं** दे	**-** ऽ	**गंमं** शऽ	**पं** ऽ	**पं** या	**-** ऽ
मं भ	**गं** लीं	**-** ऽ	**गं** म	**-** ऽ	**रें** चा	**-** ऽ	**नि** था	**सां** ज्या	**-** ऽ	**गं** सा	**-** ऽ	**गं** लं	**मंगं** ऽऽ
रें न्हि	**सां** ज्या	**-** ऽ	**नि** म	**सांनि** ऽऽ	**ध** तु	**-** ऽ	**नि** क	**ध** पा	**प** य्	**म** धा	**पम** ऽऽ	**ग** ऽ	**म** नि
ध वा	**ध** नी	**-** ऽ	**सां** वः	**रेंसां** ऽऽ	**नि** ऽ	**सां** छि	**सां** म	**गं** ऽ	**-** ऽ	**रें** तु	**-** ऽ	**सां** ऽ	**-** ऽ

तेज़ लय (Fast Tempo):					
1 2 3 तिं	4 5 तिं	6 7 छु	1 2 3 तिं	4 5 तिं	6 7 छु
	सां सां इ का	**सां सां** प का	**सां रें -** ले के S	**नि -** वि S	**सां -** याँ S
गं गं - सुन् थ S	**गं -** वः S	**गं -** छि S	**रें सां -** म तु S	**नि -** भलिं S	**ध -** चा S
सां सां - छि मी S	**रें -** मा S	**नि -** न S	**सां - -** वा S S	**नि -** ध S	**ध निध** या SS
प - - ह S S	**म पम** ल SS	**ग -** S S	**- - -** S S S		

2:3:7:7 नारायण जू (चालि)

राग- समलस **ताल-** जति

जय नारायण जू, गुँया सिसं रसनं विज्याक।

शिरसं नागया मणी न्हससं कुंदल वाण।।

राम गलः सं कोखासे तल तुलसीया माला प्रभुजु ।।१।।

न्हिन्हि छिया स्वता उन अतिनं सुंदर ख्वाल।

राम दना वया दरसन विव जित

नारायण जू गुँया सिसं रसनं बिज्याक जय नारायण ।।२।।

लहाकम्हया विनति खें दया दये माल प्रभुज।

जवं न चक्र जोस्ये खवंन शंख ज्वंसे

गुँया सिसं रसनं बिज्याक जय नारायण ।।३।।

नेपालया छत्रपति श्री जय भास्कर मल्ल।

राम चउखण्ड राज्य लाए फयेकाव नारायण जू

गुँया सिसं रसनं बिज्याक जय नारायण ।।४।।[1]

भावार्थ: दाफा संगीत में नारायण भगवान के गीत विशेष रूप से कार्तिक महीने में गाए जाते हैं। वार के आधार पर देखा जाए तो शुक्रवार के दिन नारायण भगवान के गीत गाए जाते हैं। कार्तिक महीने में विभिन्न नारायण मंदिर जैसे चाँगू नारायण, बुढानीलकंठ तथा काठमांडू हाडीगांव में जात्रा पर्व मनाया जाता है। इस पूरे महीने में नारायण भगवान की आराधना की जाती है। ऊपर उल्लेखित दाफा भजन में

1. मानत्वा दाफा भजन खलः/ p-39

नारायण भगवान के रूप और उनके आभूषण के बारे में चर्चा की गई है। नेवारी भाषा में लिखित इस दाफा गीत के रचनाकार का नाम अंतिम चरण में उल्लेखित है। अतः इसकी रचना मल्ल शासन काल के 'राजा भास्कर मल्ल' ने की होगी ऐसा शोधार्थीनी का अनुमान है।

प्रस्तुत दाफा गीत नारायण जू कीर्तिपुर मानत्वा: दाफा समूह से लिया हुआ गीत है। नारायण जू दाफा गीत प्रायः उपत्यका के सभी स्थानों में गाया जाता है, किंतु अलग-अलग स्थानों में अपने अपने तरीके से इस गीत को गाया जाता है। जैसे काठमांडू हाडीगांव दाफा समूह में इस गीत को राग विजय, कीर्तिपुर मानत्वा: दाफा समूह में समलस, हाँदे पुस्तक में राग धनाश्री में निबद्ध किया हुआ है। परंतु प्रत्येक स्थानों एवं पुस्तक में इस गीत को ताल जति में ही गाया जाता है। इस प्रकार दाफा संगीत में पाई गई विभिन्नता को हम देख सकते हैं। **मानत्वा: दाफा संगीत समूह** में उपलब्ध नारायण जू दाफा गीत को इस प्रकार गाया है:

1. गीत गाने से पहले राग में निबद्ध स्वरों में पहले हा, ना, ना, नाई शब्दों की सहायता से आलाप लिया गया है।
2. उसके बाद वाद्य में छोटा टुकड़ा बजाया जाता है। जिसमें खिं वाद्य, ताः और ख्वालमली बजाया जाता है।
3. वाद्य बजाने के बाद चरण की पहली पंक्ति को दो बार समान लय में गायी जाती है।
4. पहली पंक्ति को दो बार गाने के बाद ताल वाद्य में छोटा सा टुकड़ा बजाया जाता है।
5. तत्पश्चात दूसरी पंक्ति को दो बार गाने के बाद समान पंक्ति के अंतिम भाग को दो बार गाया जाता है।
6. दूसरी पंक्ति खत्म होने के बाद पुनः वाद्य पर एक छोटा टुकड़ा बजता है और उसके बाद तीसरी पंक्ति एक बार गाई जाती है। इस तीसरी पंक्ति में पहली पंक्ति के अंतिम भाग को जोड़ा जाता है।
7. तत्पश्चात ताल वाद्य दुगुन लय में बजाया जाता है और गायन में भी तीसरी पंक्ति और मुखड़े को दुगुन लय में कुल तीन बार गाया जाता है।
8. उसके बाद पहली पंक्ति को दो बार गाने के बाद पुनः गायन तथा वादन समान लय में वापस बजाए जाते हैं।

इसी प्रकार दाफा गीत के शेष चरण गाए जाते है।

आलापः **(Scale: G#)**

म	**-**	**म**	**प**	**म**	**ग ,**	**म**	**-**	**म**	**-**	**म**	**-**
हा	-	-	-	-	- ,	ना	-	ना	-	ना	-
म	**(मपमम)**	**ग**	**रे**	**सा**	**ऩि**	**ध़**	**प़**	**म़**			
ना	-	-	-	-	-	-	-	-			
म़	**-**	**म़**	**-**	**म़**	**- ,**	**म़**	**-**	**-**	**प़ध़ध़**	**प़**	**म़**
रे	-	नाइ	-	नाइ	- ,	हां	-	-	-	-	-

1 तिं	2	3	4 तिं	5	6 छु	7	1 तिं	2	3	4 तिं	5	6 छु	7
सा ज	**सा** य	**-** S	**सा** ना	**-** S	**सा** रा	**ऩि** S	**सा** य	**रे** न	**-** S	**रे** जू	**-** S	**-** S	**-** S
रे गुं	**रे** या	**-** S	**म** सि	**-** S	**ग** S	**रे** सं	**रे** र	**सा** स	**-** S	**ऩि** न	**ध़** S	**प़** S	**म़** बि
प़ध़ ज्या	**ऩि** S	**ध़** S	**प़** क	**-** S	**-** S	**-** S							
Music (त्वाल्हायेगु)													
सा शि	**-** र	**-** S	**सा** सं	**-** S	**ऩि** ना	**-** S	**सा** ग	**प** या	**-** S	**प** म	**-** S	**प** नि	**-** S
सां ह	**-** स	**-नि** S	**ध** सं	**-** S	**प** कुं	**मं** S	**प** द	**-** S	**पनि** ल	**ध** वा	**-** S	**प** ण	**-** S

Music (त्वाल्हायेगु)														
6 छु	7	1 तिं	2	3	4 तिं	5	6 छु	7	1 तिं	2	3	4 तिं	5	
प रा	**प** म	**प** ग	**-** लः	**-** ऽ	**म** सं	**ग** ऽ	**रे** ऽ	**सा** को	**रे** खा	**प** ऽ	**-** ऽ	**प** से	**प** ऽ	
प त	**प** ल	**<u>नि</u>** तू	**-** ऽ	**ध** ल	**प** सी	**-** ऽ	**म** या	**-** ऽ	**ग** मा	**-** ऽ	**सा** ला	**रे** प्र	**प** भु	
प जु	**-** ऽ													

2:3:7:8 गोपुक्षे पर पर्वत (चालि)

राग- व्याग   **ताल-** चो

गोपुक्षे पर पर्वत सं स्वयंभू विज्या नाव
सुर नर मुनि जन, पूजा यासे वी जाक अन
आनंदन रसन बीज्याक श्री भगवन ।।१।।
काली दया दया दथुसं प्रभु वीज्यानाव
अनेग देव गण स्वभादय काव वीजाक
आनंदन रसनवी ज्याक श्री भगवान ।।२।।
वीदो लंया दया दथुसं पंचरत्न या हाल
हेलाया केसरी सुवर्णया केसरी जोती रूप वीजात अन ।।३।।
ल्हाकाय अनाठया ल्हायमफू आव
चर नस रन तीव क्षीवा लीनी पाया कोस आनंदन ।।४।।(1)

भावार्थ: नेवारी दाफा संगीत में भगवान बुद्ध के गीत प्रति बुधवार को गाए जाते हैं और जेष्ठ महीने में बुद्ध पूर्णिमा तथा गुँला महीने में विशेष रुप से गाने का प्रचलन है। राग व्याग में निबद्ध यह चालि गीत में भगवान बुद्ध के अवतरण की बात की है। भगवान बुद्ध के अवतरण से संपूर्ण देवलोक, मानव आदि को आनंद हुआ है और भगवान बुद्ध को सभी नमन कर रहे हैं। इस रचना को चार मात्रा के ताल चो में गाया है। नेवारी संगीतज्ञों के अनुसार राग व्याग अर्थात् बिहाग को अनुमान किया है। यदि इस रचना की स्वरलिपि को देखा जाए तो राग बिहाग के चलन से मेल नहीं होता है। इस रचना में कोमल गंधार, दोनों निषाद और शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग किया गया है जो राग बिहाग में प्रयोग नहीं किया जाता है।

1. कुटुसागल दाफा भजन खलः/ p-02

1	2	3	4	1	2	3	4
तिं		छु		तिं		छु	
प	**-**	**नि**	**-**	**सां**	**-**	**-**	**-**
गो	S	पु	S	क्षे	S	S	S
-	**रें**	**रें**	**सां**	**नि**	**नि**	**सां**	**सां**
S	प	र	S	ब	त	सं	S
-	**सारे**	**म**	**मग**	**रे**	**-**	**सा**	**ऩि**
S	स्व	यम्	भूS	वी	S	ज्या	S
-	**रे**	**-**	**ऩि**	**सा**	**-**	**-**	**-**
S	ना	S	S	व	S	S	S
Music (त्वाल्हायेगु)							
-	**सां**	**सां**	**सां**	**-**	**रें**	**सां**	**नि**
S	सु	र	न	S	मु	S	नी
प	**-**	**प**	**म**	**प**	**नि**	**सां**	**सां**
ज	S	न	S	सु	र	न	र
-	**रें**	**सां**	**नि**	**प**	**-**	**प**	**म**
S	मु	S	नी	ज	S	न	S
-	**नि**	**ध**	**प**	**म**	**-**	**ग**	**रे**
S	पु	S	जा	या	S	से	वी
-	**म**	**-**	**म**	**ग**	**-**	**रे**	**सा**
S	जा	S	क	अ	S	न	S
Music (त्वाल्हायेगु)							
-	**रे**	**-**	**म**	**ग**	**-**	**रे**	**सा**
S	आ	S	नं	द	S	न	S
-	**-**	**रे**	**म**	**प**	**नि**	**ध**	**प**
S	S	र	स	न	S	वी	S
-	**म**	**-**	**म**	**ग**	**-**	**रे**	**-**
S	ज्या	S	क	श्री	S	भ	ग
सा	**-**	**-**	**-**				
वा	न	S	S				

2:3:7:9 राम या नाम(चालि)

राग- प्रथमञ्जलि **ताल-** जति

हा हा दे राम या नाम कया व, जरम हने स्व व ।।
हे माया मोह पाप जा "SS ल, तो S ल ता व छो व रे, राम या ।।१।।
हा हा दे जर्म व उताल याय धरम जोन्याव ।।
लाउली जतन थनी," हरी गुन ला व रे, राम या नाम ।।२।।
हा हा दे पंले लासं चोन लखं फुती उती जिव़ तुं ताल ।।
हे तिरथ धरम दने," हतासं चाया व़ रे, राम या नाम ।।३।।
हा हा दे केवरन संसाल नसियमाल शिव ।।
हे थुलिया हुलिनं हाय," धन भिन पि व रे, राम या नाम ।।४।।
हा हा दे परलोक भिन गति भगतिन ला व़ ।।
हे श्री जय प्रकाश या" सुवचन नेना व़ रे, ।।५।।
राम या नाम कया व़, जरम हने स्व व़ ।।धु।।

भावार्थ: राम या नाम चालि दाफा गीत काठमांडू जिला के हाडीगांव कोटा त्वा: दाफा खल: (समूह) से लिया हुआ दाफा गीत है। यह गीत राग प्रथमञ्जलि और ताल जति में सीमित है। दाफा समय अनुसार भगवान राम के भजन दशहरा के समय और चैत्र नवरात्रि के समय अधिक मात्रा में गाने का प्रचलन रहा है। प्रस्तुत चालि गीत के अनुसार राम के नाम जपने से हमारा जीवन अच्छे से व्यतीत होगा और इस भवसागर को पार करने में हमें आसानी रहेगी। इस तरह राम की महिमा का वर्णन किया है। इस गीत में मल्ल काल के राजा जयप्रकाश मल्ल के नाम का उल्लेख प्राप्त होता है, जिससे यह पता चलता है कि इसकी रचना का समय जयप्रकाश मल्ल के शासन काल के दौरान रहा होगा।

2:3:7:10 मञ्जुश्री ग्वारा

राग- सोरथ **ताल-** सातमां

धलंजति- जयैं महा चीन वासी, हादे।।
पलेमां- केसिनी उपकेसिनी साथे जे।।
एकताल- श्री गुरु महा मंजुश्री हादे।।
जति- नेपाल देश उद्धार कियो हे।।
अष्टरा- चंद्रहास खडग लिए, उत्पल पुस्तक धारे।।

चो- नाग-हद छेदन करिके, ज्योति रूप प्रकाशे।।

प्रताल- मंजुपतन देश धर्माकर राजा

प्रजापति पाल कि यो हे।।

भावार्थ: राग सोरथ में निबद्ध प्रस्तुत मञ्जुश्री ग्वारा में चीन देश से आए हुए मंजुश्री ऋषि के बारे में चर्चा की है। उन्होंने किस प्रकार नेपाल उपत्यका को एक सुंदर स्वरूप दिया एवं रहने लायक भूमि का निर्माण किया इस विषय में वर्णन किया है। पानी से भरे हुए नेपाल उपत्यका को अपने शक्तिशाली खड़ग के प्रहार से रहने लायक भूमि बनाई इसलिए उनकी जय-जयकार की है। इस रचना के साथ ताल सातमां बजाया गया है, जिसका अर्थ कुल सात ताल (धलंजति, पलेमां, एकताल, जति, अष्टरा, चो और प्रताल) बजाई जाएगी। मञ्जुश्री ग्वारा की स्वरलिपि उपलब्ध नहीं है परंतु रचना के शब्दों को हरेक ताल में उचित तरीके से लिखने का प्रयास रहा है जो इस प्रकार[1] है:

1. झीगु बाजा झीगु संस्कृति/ p-44

ताल	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धलंजति	ज	-	य	-	-	-	म	-	-	-	-	-	हा	-		
	ची	-	न	-	-	-	बा	-	-	-	सी	-	हा	दे		
पलेमा	के	-	सि	-	-	नि	उ	प	के	-	सि	नी				
	सा	-	-	-	-	-	थे	-	जे	-	-	-				
एकताल	सि	-	रि	-	गु	-	-	रू	-	म	-	हा				
	मं	-	-	-	जु	-	-	-	श्री	-	हा	दे				
जति	ने	-	-	पा	-	-	ल	दे	-	-	श	-	-	उ		
	द्धा	-	-	र	-	-	कि	यो	-	-	हे	-	-	-		
अस्तरा	च	-	न्द्र	-	हा	-	स	-	-	-						
	ख	ड	ग	-	लि	-	ये	-	-	-						
	उ	त्	प	-	ल	-	पु	-	स्त	क						
	धा	-	-	-	-	-	रे	-	-	-						
चो	ना	-	ग	-	-ह	-	द	-	छे	-	द	न	क	रि	के	-
	ज्यो	-	-	ति	रू	-	प	स्व	यं	-	भु	प्र	का	-	से	-
प्रताल	मं	-	-	जु	प	-	-	त	न	-	दे	-	शे	-		
	ध	र्मा	-	क	-	र	-	रा	-	-	जा	-	-	-		
	प्र	जा	-	प्र	-	-	ति	पा	-	-	ल	-	-	कि		
	यो	-	-	-	-	-	-	हे	-	-	-	-	-	-		

2:3:8 नेवारी दाफा भजनों में तिथि का विशेष संदर्भ

प्राचीन काल से नेवारी संगीत में अनेकानेक दाफा भजन तथा अन्य साधारण भजन एवं गीतों का भरपूर भंडार रहा है। उन भजनों में कवि, गीतकार, रचनाकार तिथि एवं कौन से राजा का राज्यकाल चल रहा था उसका प्रमाण प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त होता है। परंतु कुछ भजनों और गीतों में अप्रत्यक्ष रूप में संकेतों का उपयोग कर उन कृतियों का रचनाकाल और राजा का नाम लिखा हुआ होता है। विभिन्न समय के कुछ भजन एवं रचनाओं का वर्णन निम्नलिखित है जिसमें अप्रत्यक्ष रूप से तिथि का उल्लेख प्राप्त होता है[(1)]-

1. नयन पंच प्वाल नेपालमा वर्ष हना नरपति श्री राजेंद्र देव

2. नरपति श्री राजेंद्र विक्रम शाह सरगत पंचद्वार पोषया थ्वक दिन

3. कुम्हा ख्वाल मि दुवाल बरख नेपाल लाया पौष मिला हाकु तिथि दंडधारी

4. नाग राजा पना हया दहनस बास विया स्वयंभूया दरसन याना ।।
   प्यंग्वल सिलया ख्वाल रंग ग्र सहकाल श्री राजेंद्र भूपति धाया ।।

5. ल्हाकम्ह जि अज्ञानीन सल किसि रंग मुना बरखास थुगुलि खा कना ।।

प्रस्तुत रचनाओं में से प्रथम रचना 'नयन पंच प्वाल' तिथि दर्शाती है कि नयन अर्थात 'आंख'। क्योंकि दो आंखें होती है इसलिए नयन का अर्थ '2' है। पंच का अर्थ '5' और प्वाल का अर्थ है छेद, जिसकी संख्या '9' मानी गई है। नेवारी रचना में तिथि को उल्टा करके लिखने का चलन है। इसलिए प्रथम रचना का रचनाकाल नेपाल संवत् (नेवारी संवत्) 952 है।

दूसरे रचना 'सरगत पंचद्वार' में तिथि दर्शाई गई है। सरगत का अर्थ है आकाश जिसको '0' माना गया है। पंच अर्थात् '5' और द्वार को '9' संख्या से जोड़ा गया है। इस आधार पर दूसरी रचना की तिथि 950 नेपाल संवत् रही होगी।

तीसरी रचना में 'कुम्हा ख्वाल मि दुवाल' तिथि का विवरण है। कुम्हा ख्वाल को '6' अंक माना गया है। मि(मिखा) अर्थात् '2' और दुवाल को '9' अंक माना गया है। जिससे तीसरी रचना की तिथि नेपाल संवत 926 पता चलती है।

इसी तरह चौथी रचना 'प्यंगक्ल सिलया ख्वाल' तिथि को दर्शाता है। प्यंगक्ल का अर्थ है '4' और सिल अर्थात पंचशील जिसे '5' अंक से दर्शाया जाएगा। ख्वाल अर्थात् चेहरा और चेहरा चौमुख आकर का

1. महर्जन, राजेंद्र/ हाम्रो सांस्कृतिक पहिचान तथा परंपरागत बाजाहरू/ p-161-162

होता है इसलिए इसको '4' से जोड़ा जाएगा। इस आधार पर चौथी रचना की तिथि नेपाल संवत् 454 होती है।

पांचवी रचना में 'सल किसि रंग' को तिथि मानी गई है। सल को '7', किसि अर्थात हाथि जिसको '8' और रंग को '5' माना गया है। इस आधार पर पांचवी रचना का समय नेपाल संवत् 587 है।

इस प्रकार राजेंद्र मर्हजन जी ने अपनी पुस्तक 'हाम्रो संस्कृतिक पहिचान तथा परंपरागत बाजाहरू' में नेवारी तिथि का वर्णन किया है। प्राचीन नेवारी रचनाओं में इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से तिथि का समावेश करने का कारण उस समय की राजनीतिक अवस्था या अद्वितीय तरीके से प्रस्तुतिकरण रहा होगा ऐसा शोधार्थीनी का अनुमान है।

2:4 नेवारी संगीत के अन्य प्रकार

संपूर्ण नेपाल में प्रचलित विभिन्न संगीत में नेवारी संगीत एक अद्वितीय संगीत प्रकार है। नेवारी संगीत में प्राचीन समय से मुख्य दाफा संगीत का प्रचलन रहा है किंतु इसके अतिरिक्त अन्य संगीत प्रकार के गीतों से एक संपूर्ण माला बनी हुई है। नेवारी संगीत में विभिन्न जात्रा पर्व, त्यौहार, ऋतु, वार के आधार पर, अलग-अलग महीनों इत्यादि में अलग-अलग गीत प्रकार होने से इस संगीत को सुंदर बनाने में सफल रहे हैं। नेवारी संगीत में दाफा संगीत प्रकार के अलावा अन्य प्रचलित संगीत प्रकार इस प्रकार है:

2:4:1 नेवारी भजन

2:4:2 चर्या गीत

2:4:3 तुतः गीत

2:4:4 बारहमासे गीत

2:4:5 सामाजिक गीत

2:4:1 नेवारी भजन

नेवारी संगीत प्रकार में भजन एवं कीर्तन भी एक मुख्य प्रकार है। नेवारी संगीत में दाफा संगीत के बाद भजन का स्थान मुख्य है। नेवारी संगीत की धरोहर को बचाए रखने में नेवारी भजन का मुख्य स्थान रहा है। नेवारी संस्कृति अपने रीति रिवाज और परंपराओं के कारण विशेष स्थान पर अवस्थित है। नेवारी संस्कृति विभिन्न धार्मिक मठ मंदिर, तीर्थ, स्थान एवं प्रभु से हमेशा से जुड़ी हुई है। प्राचीन काल से इन सभी पक्षों के साथ जुड़ने के कारण नेवारी लोगों के मन में ईश्वर के प्रति भक्ति भावना अधिक मात्रा में पाई गई है। इसी परंपरा को कायम रखने के लिए और अपने ईश्वर के प्रति प्रगाढ़ भक्ति प्रेम के कारण प्रतिदिन मंदिरों की पूजा, अर्चना और परिक्रमा के साथ उनके गुणगान के भजन भी गाए जाते हैं। प्रत्येक प्राचीन नेवारी बस्तियों में विभिन्न मठ मंदिर, चैत्य, गुंबा आदि अवस्थित होते हैं। उन सभी मुख्य धार्मिक स्थानों में प्रतिदिन सुबह और साँय भजन कीर्तन गाया एवं बजाया जाता है। इन अमूल्य परंपराओं को केवल नेवारी लोग ही नहीं किंतु विदेशी अनुसंधानकर्ताओं ने भी विभिन्न नेवारी संस्कृति, परंपरा एवं संगीत आदि शोध पद्धति के विषय में अपनी पुस्तकों में प्रकाशन किया है जो नेपाल देश के लिए गर्व की बात है। इन प्रकाशनों से नेपाल की नेवारी संगीत परंपरा को विदेशों में भी प्रचार प्रसार करने में मदद मिली है।

नेवारी भजन को प्रस्तुत करने का एक अपना ही अलग तरीका है, जो प्राचीन समय से चला आ रहा है। अपनी ही भाषा एवं बोली द्वारा इन गीतों को प्रस्तुत किया जाता है। नेपाली 'ब्रूहद शब्दकोश' में भजन

अर्थात् भगवान की आराधना कीर्तन व्यक्त किया गया है। भजन को समूह में गाया जाता है और उन समूह को 'भजनीया' या 'भजन मंडल' कहते हैं। नेवारी भाषा में भजन को 'खल:' कहा जाता है। विभिन्न धर्म शास्त्रों के अनुसार ईश्वर या मोक्ष प्राप्ति के लिए कलयुग में तपस्या, यज्ञ, होम, दान, व्रत और पूजा में से प्रथम, भजन कीर्तन को प्राथमिकता दी गई है और ऐसा धार्मिक विश्वास है कि भजन की सहायता से धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं।[1]

पुरातन काल से चलती आई हुई इस संगीत परंपरा में नेवारी बस्ती के अनुसार थोड़ी बहुत भिन्नता हो सकती है, जैसे शब्द संरचनाएं, गाने की स्वरसंरचनाएं, लय में परिवर्तन, वाद्य वादन इत्यादि। परंतु जो मुख्य गाने का क्रम है वह प्रत्येक भजन समूह में एक जैसा ही पाया जाता है। भजन प्रस्तुत करने के लिए सबसे पहले कलाकारों का समूह होना जरूरी है। तत्पश्चात बेठने के लिए उचित स्थान की आवश्यकता होती है। भजन करने के लिए ऐसा कोई बंधन नहीं है कि मंदिर के प्रांगण में ही होना चाहिए, कहीं भी खुले मैदान, पाटी पौवा(Open air seating place) या घर के कोई भी कक्ष में भी गाने की परंपरा रही है। भजन के समय और स्थान के बाद वाद्य वादन की जरूरत होती है, जिसमें मुख्य रुप से हारमोनियम, तबला, खिं, बाँसुरी, झ्याली, ताई नाई, नगाड़ा इत्यादि वाद्य बजाए जाते हैं। विशेषतः भजन गाने के लिए स्वर वाद्य और ताल वाद्य का होना अनिवार्य है बाकी के वाद्य यदि नहीं प्राप्त है तो भी भजन कीर्तन किया जा सकता है। सभी सामग्रियों के बाद भजन समूह अपनी नित्य भजन क्रिया प्रारंभ करते हैं। भजन में दाफा संगीत की तरह ऋतु, प्रमाण, दिन, महीने, वार, त्यौहार, जात्रा पर्व अनुसार रचना निबद्ध कर के भजन गाने की परंपरा रही है।

नेवारी संगीतज्ञों के अनुसार नेवारी भजनों की स्वर रचना कुछ मिश्रित होती है तो कुछ दाफा भजन की तरह विभिन्न राग और ताल में निबद्ध होती हैं। नेवारी भजन के कुछ प्रचलित राग और तालों के नाम निम्नलिखित है:

भजन में प्रयुक्त रागों के नाम:

राग जयश्री	राग अस्तुती	राग रास	राग केदार
राग गुर्जर	राग विहाग	राग सोरथ	राग वसन्त
राग काफी	राग वल्लारी	राग वंगलि	राग धनाश्री
राग पर्ज	राग कल्याण	राग सिन्हाज्या	राग गाली
राग वेलावल	राग सारंग	राग मालश्री	राग धातु
राग आशावारी	राग निर्गुण	राग भथ्यारी	राग बारहमास

1. श्रेष्ठ, प्रद्युम्न/ झीगु भजन म्ये/ p-27

भजन में प्रयुक्त तालों के नाम:

ताल चो	ताल प्रताल	ताल आढ
ताल प्रतिमथ	ताल एकताल	ताल जति

नेपाल मंडल(काठमांडू, ललितपुर, भक्तपुर) तथा अन्य नेवारी बस्तियों में निम्न प्रकार से भजन की पद्धति को आधार मानकर प्रस्तुत किया जाता है।

2:4:1:1 भजन करने की सामान्य पद्धति

1. सर्वप्रथम भजन करने के स्थान (फल्चा, बहा:, बही, देगः) की साफ सफाई करवा के सुकूल(हाथ से बनाई गई विशेष प्रकार की चटाई), सतरंजी, राढि इत्यादि बिछाई जाती है।
2. उसके बाद भजन सामग्री जैसे भजन सफू(पुस्तक), वाद्यों में हारमोनियम, तबला, मृदंग, खिं, नगारा इ्याली, भुस्या, ता, शंख इत्यादि रखा जाता है।
3. तत्पश्चात ईश्वर की आरती के लिए दीया, अगरबत्ती, धूपबत्ती जलाई जाती है।
4. उसके बाद द्योल्हायेगु(ईश्वर की प्रार्थना) में शंख तथा अन्य वाद्यों को बजाकर ईश्वर का आवाहन किया जाता है।
5. द्योल्हायेगु के बाद परबना यायेगु(प्रत्येक मान्य ईश्वर के नाम क्रमशः लेकर गाया जाने वाला भजन) गाया जाता है। कहीं-कहीं इस भजन को पंचभजन भी कहा जाता है। परबना के स्थान पर कई जगहों में आरती के बाद गीत गोविंद, गणेद्यः, नास: द्य: भगवती माई आदि भगवानों की स्तुति गीत गाए जाते हैं। भजन खल:(समूह) की परंपरा अनुसार कोई भजन गणेश भगवान के गीत गाकर शुरू करते हैं तो कोई नास: द्य: (नाट्येश्वर) के गीत गाकर शुरू करते हैं।
6. परबना गाने के बाद थोड़ा सा विश्राम करके अपने मनपसंद भजन गाए जाते है जिसे फर्मास म्ये:(गीत) कहते हैं। फर्मास गीत के अंतर्गत उस दिन अगर कोई त्यौहार, पर्व तथा जात्रा हो तो उन्हीं के अनुरूप भजन गाया जाता है।
7. फर्मास गीत गाने के बाद विभिन्न ऋतुकालीन गीत गाए जाते हैं जो हर महीने में भिन्न-भिन्न प्रकार से गाए जाते हैं। यह ऋतुकालीन गीत इस प्रकार[(1)] है:
   - सोरथ, मल्लार- वैशाख, जेठ
   - सिन्हाज्या- सिथिनखा: - गथांमुग तक (जेठ, असार)
   - सिलु म्ये- गुंला लछि (श्रावण)

1. श्रेष्ठ, प्रद्युम्न/ झीगु भजन म्ये/ p-29

- मालश्री- कायाष्टमी - कति पुन्हि न्हयर्खुन्हु तक (भाद्र, असार)
- भथ्यारी, धनाश्री- कति पुन्हि – सकिमनापुन्हि (कार्तिक)
- बारहमास- मंसिर, पुस
- स्वस्थानी- पौष शुक्ल पुन्हि से माघ शुक्ल पुन्हि तक
- वसन्त- श्री पंचमी से पाहाँचन्हे तक (माघ, फागुन)
- फागु (गालि) (होरी)- फागु पुर्णिमा के आसपास (फागुन)
- धातु म्यें (गीत)- चैत्र माह

8. ऋतुकालीन गीत भजन गाने के बाद अंत में आरती गीत गाकर भजन को समाप्त करते हैं। आरती गीत में भी विभिन्न तिथियों अनुसार, वार अनुसार, महीना, जात्रा पर्व अनुसार अलग-अलग गीत गाए जाते हैं।

वार की दृष्टि से अगर चर्चा करें तो जैसे दाफा संगीत में रविवार के दिन कुमारी, भिन्धों, सोमवार के दिन महादेव, मंगलवार के दिन गणेश, बुधवार के दिन भगवान बुद्ध और करुणामय, गुरुवार के दिन नासः द्यः और भगवती, शुक्रवार के दिन नारायण, कृष्ण, राम तथा शनिवार के दिन भगवती, भैलः द्य, भिन्धों भगवान के गीत गाए जाते हैं उसी प्रकार भजन समूह में भी इस क्रम के अनुसार भजन आरती गाई जाती है। इसी प्रकार तिथि, महीने, तथा जात्रा पर्व के आधार पर इस प्रकार आरती गाई जाती है:

- **तिथि के आधार पर:**
  - अष्टमी- भगवान बुद्ध, करूणामय
  - एकादशी- नारायण, कृष्ण, महादेव
  - चः ह्रे (चतुर्दशी)- भगवती
  - पूर्णिमा- चंद्रमा, करूणामय, बुद्ध भगवान, नारायण भगवान
  - संल्हू (महिने का प्रथम दिन)- करूणामय, नारायण
- **महिने के आधार पर:**
  - ञँला (भाद्र)- भगवती, भैलः द्यो, भिन्धो
  - कार्तिक- तुलसी, नारायण, कृष्ण, करूणामय
  - माघ- महादेव
  - गुंला- भगवान बुद्ध

- **नेवारी जात्रा, पर्वों के आधार पर:**
    - बुद्ध जयंती- भगवान बुद्ध
    - गुंला पारू- भगवान बुद्ध, करूणामय
    - अक्षय तृतीया, शिवरात्रि- महादेव
    - ञेन्या, कुमारी जात्रा- कुमारी
    - बुँग भगवान जात्रा- बुँग भगवान गीत
    - भिंद्यो जात्रा- भिंद्यो गीत
    - स्थानीय जात्रा- संबन्धित भगवानों के गीत

इस प्रकार आरती गीत में भिन्न-भिन्न प्रकार के गीत गाए जाते हैं। कई आरती के साथ दोहा भी गाए जाते हैं। इस प्रकार भजन गायन को समाप्त किया जाता है। आरती करते समय दिया और धूपबत्ती जलाई जाती है और शंख बजाया जाता है। भजन गाना समाप्त होने के बाद प्रत्येक श्रोताओं को प्रसाद बांटा जाता है और उसके बाद भजन सामग्रियों को पुनः अपने स्थान पर रख के सुरक्षित किया जाता है। भजन समापन के पश्चात अपने गुरु को प्रणाम करके सभी लोग अपने अपने घर जाते है।

वर्तमान में गाए जाने वाला एक बुद्ध भजन[(1)] इस प्रकार है।

स्थायी (**ताल-** दादरा)

दुर्गुण त्वता सद् गुण कायेत
शीलया पालन् अनिवार्य खव न्हां
करुणा दयाया धुकू छंगु नुगल
गुलि छंपि कायेफु उलिछंगु थव न्हां

अंतरा

जन दुःख व्याधिं गौतमया नुगलय्
करुणाया गोफय् तः धकं हल न्हां
थः फुक त्वता सद ज्ञान माला
जग हित यायत सकसितत इन न्हां

भावार्थ: इस गीत में लेखक ने कहा है कि सद्गुण और ज्ञान को धारण करने के लिए करुणा भाव होना चाहिए तथापि जितना अधिक मात्रा में इस भाव को मन में रखेंगे उतना ही सत्य मार्ग में जाने में सफल होंगे। नेवारी संगीत के भजन संगीत में यदि देखा जाए तो अधिकतर भजन भगवान बुद्ध के गाने की

1. श्रेष्ठ हरि बोल/ म्ये मुना छपुचः/ p-80

परंपरा है। प्रस्तुत गीत में भी भगवान बुद्ध के गुणों की चर्चा की हैं। जिसमें गौतम बुद्ध ने अपनी प्रजा के लिए ज्ञान का मार्ग अपनाकर लोगों के दुःख को हरने की बात बताई है।

स्थायी

|प सां -ग |गप म - |रेरेरे -रे |ऩिरे सा - |
|दु र्गु ऽण|त्वऽ ता ऽ |सद गु ऽण|काये त ऽ |

|साग ग ग |ग-मग रे - |मंमं मं -मं |गम प - |
|शीऽ ल या |पाऽऽऽ लन् ऽ |अनि वा ऽर्य |खव न्हां ऽ |

|पप सां -ग |गप म -म| रे रे -रे |ऩिरे सा - |
|करु णा ऽद |याऽ या ऽधु| कू छं ऽगु |नुग ल ऽ |

|साग ग -ग |ग-मग रे - |मंमं मं -मं| गम प - |
|गुलि छं ऽपि |काऽयेऽ फु ऽ |उलि छं ऽगु| थव न्हां ऽ |

|प सां -ग | गप म - |रेरेरे -रे |ऩिरे सा - |
|दु र्गु ऽण | त्वऽ ता ऽ |सदगु ऽण| काये ते ऽ |

अंतरा:

|गप प -प |प प -|मं मंग रेरे |गम ग -|
|जन दुः ऽख |व्या घिं ऽ|गौ तम ऽया|नृग लय् ऽ|

|गग नि -नि|नि नि - |नि ध -नि|सांसां सां -ग|
|करू णा ऽक्क|गो फय् ऽ|तः धं ऽक|ह्ल न्हां ऽऽ|

|सागं गं -गं| गं रें -|रेंग रेंसां -सां|सां सां -|
|थःऽ फू ऽक्क|त्व ता ऽ|सदु ज्ञा ऽन |मा ला ऽ|

|निनि नि रेंसां |निध प -|पप मं रेंरें|गम ग -|
|जग हि तऽ |याय् त ऽ|सक सि ऽत|इन न्हां ऽ|

|पसां सां -ग|गप म -म|रे रे -रे|ऩिरे सा -|
|करु णा ऽद|याऽ या ऽधु|कू छं ऽगु|नुग ल ऽ|

|साग ग -ग|ग-मग रे -|मंमं मं -मं|गम प -|
|गुलि छं ऽपि|काऽयेऽ फु ऽ|उलि छं ऽगु|थव न्हां ऽ|

|प सां -ग|गप म -|रेरे रे -रे|ऩिरे सा -|
|दु र्गु ऽण|त्वऽ ता ऽ|सदु गु ऽण|काये त ऽ|

2:4:2 चर्या गीत

अन्य नेवारी संगीत के अंतर्गत चर्या गीत का भी विशेष महत्व है। चर्या गीत विशेषतः नेवारी जाति के बौद्ध धर्मावलंबी बज्राचार्य, शाक्य और उराय जाति द्वारा गाए जाते हैं। यह जाति आगम पूजा के क्रियाकलापों में विशेष चर्या गीत गाती है। बौद्ध धर्मावलंबी वज्रयान अंतर्गत चर्यातंत्रअनुसार चर्या गीत और चर्या नृत्य का भी संचालन होता है। वज्रयानीयों ने चर्या गीत को चचा: म्ये, आगम वेद ऐसा नामकरण भी किया है। वज्रयान के आचार्य गुरु गुह्य पूजा के समय घण्टा(गं) बजाकर पूजा करते हैं और चचा: पाः ने पूजा अनुसार तिं छु(ताल वाद्य) बजाकर समूह गीत के रूप में चर्या गीत प्रस्तुत करते हैं। चर्या गीत के शुभारंभ में और समापन में आचार्य गुरु द्वारा डमरू बजाकर राग आलाप किया जाता है। चर्या गीत को विशेषतः खास अवसर में जैसे आगम पूजा, दिसि पूजा, सीगू(मृत्यु पश्चात करने वाली पूजा), लोकेश्वर श्राद्ध आदि के समय विभिन्न गुठी संगठन गाते हैं। चर्या गीत को केवल पुरुष द्वारा ही गाने की परंपरा है। चर्या गीत गाने के लिए विशेष नियमों का पालन करके गाना पड़ता है। इस गीत को गाने के समय कमरे के सभी खिड़की एवं दरवाजों को बंद करके परदे लगा दिए जाते हैं। चर्या नीति के नियमानुसार चर्या गीत बाहर वाले लोगों को सुनाई नहीं देना चाहिए। इसलिए कहीं भी चर्या गीत को गाते समय इस नियम का पालन करना पड़ता है। चर्या गीत राग में निबद्ध गीत है, जिसके साथ डमरू बजाया जाता है। चर्या गीत की पुस्तकें विशेष प्रकार के मोटे पत्रों से बनी होती है। चर्या गीत, प्रचलित नेवारी भाषा लिपि द्वारा लिखा जाता है। नियमानुसार बज्राचार्य जाति विभिन्न स्थानों में जाकर चर्या गीत गाते हैं परंतु शाक्य और उराय जाति केवल अपने ही स्थान के आसपास रहकर चर्या गीत गाते हैं।

चर्या गीत के इतिहास के विषय में लेखक चंद्रमान मुनिकार(चर्या नृत्य गुरु) ने अपनी पुस्तक 'चर्या गीत र नृत्यको घनिष्ठ संबंध' में यह उल्लेख किया है कि वैशाख पूर्णिमा के शुभ दिन पर भगवान गौतम बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्ति के बाद विभिन्न स्थानों में धर्म उपदेश की शुरुआत की। तत्पश्चात कुछ समय के बाद सिद्धार्थ गौतम बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ। उसके बाद बौद्ध धर्म में स्थविर वाद और महायान बौद्ध मार्ग ऐसे दो समूह विभाजित हुए। स्थविर वाद में भगवान बुद्ध की पाली भाषा को निरंतरता दी गई और महायान बौद्ध मार्ग के समूह में शास्त्रीय संस्कृत भाषा को निरंतरता दी गई। इसके पश्चात नेपाल मंडल में विभिन्न स्थानों में चैत्य तथा महाचैत्य के साथ-साथ छोटे छोटे चैत्यों की भी स्थापना की शुरुआत हुई। इस प्रकार प्रत्येक छोटे चौक, माहोल्य(बही, बहाल) में निर्माण हुए। चैत्य में व्रजयानी चूड़ाकर्म किया गया। भारत में भी आठवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक बौद्ध धर्म वज्रयान का प्रचार प्रसार अधिक मात्रा में हुआ है। इसका प्रभाव यह हुआ कि भारत में बढ़ते बढ़ते 84 सिद्ध(महापुरुषों) बौद्ध विद्वानों का उदय हुआ। इन्हीं महापुरुषों ने संस्कृत भाषा और अपभ्रंश भाषा में दोहा और चर्या गीतों की रचना की ऐसा माना गया है।

भारत में मुसलमानों के आक्रमण में प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय नष्ट होने के पश्चात बौद्ध विद्वानों ने बौद्ध ग्रंथ नेपाल में लाकर वज्रयान का प्रचार प्रसार किया। इसके पश्चात भारत में विद्वानों ने चर्या गीतों की रचना की थी उनके स्त्रोत से नेपाल के प्रसिद्ध तांत्रिक वज्रयान ब्रजाचार्य गुरु ज्यूयो ने भी विभिन्न चर्या गीत की रचना की। इस चर्या गीत की परंपरा को उस समय के महासिद्ध जैसे- वाक् वज्र, सुरतव्रज, गणेशराज, पंडित वै. आकाश आशाकाजी बज्राचार्य, पंडित बद्रीरत्न बज्राचार्य, पंडित रत्नाकाजी बज्राचार्य आदि विद्वानों ने इस परम्परा को निरंतरता प्रदान की।

भारत में ई.स. 633 से 550 तक चौरासी महापुरुषों ने अपभ्रंश भाषा में चर्या गीत की रचना की और यह रचना करने के पश्चात अलग-अलग जगहों पर वज्रगीत का प्रचार प्रसार किया गया। इसी मध्य एक प्रसिद्ध बौद्ध दोहा सरहपा सिद्धा की रचना इस प्रकार है-

'सरह भणई जंग वाहिप्य आलें।
णिछ सहावन लाकेख अ वालें।।'

कुछ अन्य प्रसिद्ध चर्या गीतों के नाम[1] इस प्रकार है-

1. सरपहा 2. कन्ह्या 3. कर्णपा 4. नारोपा 5. लिल्लिपा
6. तलोपा 7. दारिकापा 8. जालंधरपा 9. नागार्जूनपा 10. गोदारी

नेपाल में चर्या गीत की रचना विभिन्न महापुरुषों द्वारा की गई है जैसे: वाकवज्र बज्राचार्य, लीलावज्र बज्राचार्य, सुरतवज्र बज्राचार्य, रत्नवज्र बज्राचार्य, ओंकारवज्र बज्राचार्य, हुंकारवज्र बज्राचार्य, शाश्वतवज्र बज्राचार्य, परमादिव्रज बज्राचार्य, अमोघवज्र बज्राचार्य इत्यादि। इन सभी चर्या गीतों के रचनाकार में से सिद्ध महापुरुष वाकवज्र बज्राचार्य द्वारा रचित प्राचीन चर्या गीत इस प्रकार है:

नमामी नमामी जिन धर्म धातु स्वयम्भू- 2
त्रिभुवन अनुत्तर धर्मधातु वागिश्वर- 1
धर्म श्रीमित ज्ञानेश्वरी मित्रम- 2
नेपालमण्डल माझे, सुरा स्वरूपी- 1

श्री लोकेश्वर मण्डल महारसुख राया- 2
राजाधिराज श्री नरेन्द्र मल्ल देवं- 1

1. मुनिकर, चंद्रमान/ चर्या गीत र नृत्यको घनिष्ठ संबंध/ p-75

श्री बज्राचार्य बन्धुदत्त आचार्य- 2

भन यी वाकवज्र गीत चरिता- 1[1]

नेवारी संगीत में बौद्ध धर्मावलंबियों के चर्या (चच:) गीत के साथ-साथ चर्या नृत्य भी उतना ही प्रसिद्ध माना गया है। बौद्ध धर्म को विशेष तीन यानीयों में मानते हैं- 1. थेर यानी 2. महा यानी (हिन यानी) और 3. बज्रयानी। इनमें से बज्रयानी लोग विभिन्न देव देवियों का वर्णन करके तिञ्चु, डबडब(डमरू) बजाकर स्तुति गायन करते हैं और इसी चर्या गीत में संबंधित देवी देवताओं के वेश धारण करके विभिन्न मुद्रा में अभिनय करके नृत्य करते हैं जिसको चर्या या चच: नृत्य कहते हैं।[2] चर्या नृत्य के अंतर्गत विभिन्न देव देवियों के नृत्य आते हैं जैसे मंजूश्री, वज्रयोगिनी, पंचबुद्ध, कुमारी, यार्यतारा, योगिनी, मंडला, वसुंधरा श्वेत रक्त गणेश, भैरव काली आदि। चर्या गुरुओं का मानना है कि चर्या नृत्य केवल श्रेष्ठ गुरु के पास ही सीख सकते हैं तथा सीखने के बाद नृत्य प्रस्तुति केवल निश्चित स्थानों में ही कर सकते हैं। यह प्रस्तुति अन्य कोई जगह पर नहीं हो सकती या कोई भी समय में नृत्य प्रस्तुत करना चर्या नृत्य नियम के खिलाफ मानते हैं। इसीलिए चर्या नृत्य सीखने और प्रस्तुति करने के लिए कठोर नियमों का पालन करना पड़ता है। लोक संगीतार्पण पुस्तक में उपलब्ध एक चर्या गीत स्वरलिपि के साथ है वह इस प्रकार है:

मञ्जुश्री[3] (चर्या)

राग: नट **ताल:** जति

आलाप

साऽऽऽ | --- गमप- ---, धपम- धपम-धपम-, ग रे सा-, गरेसा गरेसा गरेसा,
होऽऽऽ | ऽऽऽ हेऽऽ ऽऽऽ, हाऽऽऽ हाऽऽऽ हाऽऽऽ, आऽऽ ओऽऽ आऽऽ, हाऽऽ हाऽऽऽ हाऽऽ,

प--- | धपम प---, | निसांरें गरेंसां गरेंसां | गरेंसां गं-- रें-- नी--,
आऽऽ | हाऽऽ हाऽऽऽ, | आऽऽ हाऽऽ हाऽऽ | हाऽऽ हाऽऽ हाऽऽ हाऽऽ,

धनिसां निधप मपध | पमरे गरेसा गरेसा सा-- गमप धमप, ग-- रे-- सा--, गरेसा गरेसा
आऽऽ आऽऽ आऽऽ,| आऽऽ आऽऽ आऽऽ, आऽऽ आऽऽ आऽऽ, हाऽऽ हाऽऽ हाऽऽ, हाऽऽ हाऽऽ

बोल

१	२	३	|	४	५	६	७	|	१	२	३	|	४	५	६	७	|
३	३	३	|	सा	गमप	प	प	|	प	धपम	रे	|	रे	प	नि	प	|
ऽ	ऽ	ऽ	|	आ	हाऽऽ	या	हा	|	श्री	ऽऽऽ	ऽ	|	मा	ऽ	हा	ऽ	|

सा	-	गमप	|	प	प	रें	रें	|	सां	सां	निधप	|	प	-	नि	प |
म	ऽ	ऽऽन	|	जु	ऽ	श्री	ऽ	|	म	हा	ऽऽऽ	|	ची	ऽ	ऽ	न |

1. मुनिकार, चंद्रमान/ चर्या गीत र नृत्यको घनिष्ठ संबंध/ p-78
2. महर्जन, राजेन्द्र/ हाम्रो सांस्कृतिक पहिचान तथा परंपरागत बाजाहरू/ p-85
3. (लोहिनी) तिवारी, शोभा/ लोकसंगीतार्पण/ p-90

म रे गरेसा | सा – रें रें | रे गरेंसा सां | निप – सां सां |
वि ज SSS | या S आ हा | ने पाSS S | लS S मन् डल् |

सां निसां निसारें | रें – रेंसां सां | नि धनिसां निधप | प – सां सां |
मा SS SSS | भ्के S पद म | गि SSS SSS | री S नि वी |

निप पध पम | रे – म प | म प – | सांनि – ध प |
सिS SS SS | ता S आ हा | न मा S | मी S S न |

म रे – | सा – रें रें | रे गरेंसा सां | निप – सां सां |
घो S S | ष S आ हा | कुं SSS S | कुंS S S म |

सां निसां निसारें | रें – रेंसां सां | नि धनिसां निधप | प – सां सां |
ब णीS SSS | दे S आS हा | ए काSS SSS | स्य S च तु |

निप पध पम | रे – म प | म प – | सांनि – ध प |
भुS SS SS | जा S आ हा | न मा S | मी S S न |

म रे – | प – नि प | सा सा प | पनि – ध प |
मा S S | मी S श्री S | म हा S | म S न जु |

म रे – | सा – सा गमप |
घो S S | ष S आ हाSS |

चर्या गीत की विभिन्न रचनाएं आज भी विभिन्न पुस्तकालय में सुरक्षित पाई गई है- जैसे आशासफु पुस्तकालय में नेपाल भाषा (नेवारी लिपि), देवनागरी लिपि, संस्कृत लिपि, मैथिली लिपि और बंगाली भाषा में लिखित चर्या गीति पुस्तक उपलब्ध है। इन पुस्तक को ताड़ पत्र एवं नेपाली कागज में लिखा हुआ है। इन पुस्तकों को अलग-अलग प्रकार से खोलने का तरीका है। किसी पुस्तक में सभी पन्ने अलग-अलग है तो कोई पुस्तक मैं एक ही लंबे कागज को तह(Fold) करके रखा गया है। विद्वानों का मानना है कि नेपाल में सर्वप्रथम चर्या गीत ताड़ पत्र में लिखे गए थे फिर नेपाली कागज जो कि विशेष प्रकार से बना हुआ था उसमें लिखे गए।

चर्या पुस्तक में चर्या गीत के साथ-साथ विभिन्न रागों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अलग-अलग चर्या गीत अलग-अलग रागों में निबद्ध किए गए हैं। चर्या गीत में एक राग का नाम लिखते हुए भी गीत के मध्य में अन्य रागों का मिश्रण शोधार्थिनी ने पाया है। चर्या गीत में घंटी, डमरु बजाकर आराध्य देव देवियों की आराधना करके साधना की जाती है। अलग-अलग देव देवियों के लिए अलग-अलग चर्या गीत गाए जाते हैं और नृत्य भी किया जाता हैं। संपूर्ण दृष्टिकोण से यह कह सकते हैं कि चर्या गीत पूर्ण रूप से शास्त्रीय संगीत पर आधारित है। चर्या गीत के रागों का नाम देखे तो हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत

से मिलता जुलता प्राप्त होता है। नेपाल में नेवारी समाज में प्रचलित विभिन्न देवी-देवताओं के ऊपर रचित चर्या गीत और उनमें प्रयुक्त रागों का नाम[1] इस प्रकार है-

1. मुनिकार, चंद्रमान/ चर्या गीत र नृत्यको घनिष्ठ संबंध/ p-85

क्र.	राग	चर्या गीत	देवीदेवता	क्र.	राग	चर्या गीत	देवीदेवता
1	विभास	उदिता	वज्रबाराही	2	गन्धाभैरवी	विविहंवि	चक्रसंवर
3	गन्धाभैरवी	नीलवर्ण	आकाश भैरव	4	भैरवी	अकारसंजार	मातृका-पूजा
5	भैरवी	जयजय	संहार	6	भैरवी	निर्माणादि	वज्रदेवी
7	भैरवी	नमामिश्रीक	हेरुक	8	भैरवी	नमामिश्री-मञ्जुवज्र	मञ्जुश्री
9	भैरवी	हुंजात	भैरव	10	कामोद	प्रज्वलितहुंकार	प्रचण्डवीर
11	भैरवी	अवनि-निहित	चन्द्रमहा-रोषण	12	कामोद	हुविजसम्भव	बुद्धवर
13	कामोद	पूर्वदिगांचन	अष्टमातृका	14	कामोद	हुंबीजसंभवरुद्र	नृत्यनाथ
15	कामोद	अनिनील-वर्ण	पचलीभैरव	16	कामोद	वरणीमण्डल	वज्रबाराही
17	मधुमत	समिरस	कालचक्र	18	मधुमत	वज्रधर	पञ्चबुद्ध
19	मधुमत	अगनित	गणेश	20	ललित	अनुत्तर	कलशपूजा
21	ललित	हरितब्रम्हा	नामसंगिती	22	ललित	द्वादशभूज	महासंवर
23	ललित	पूर्वदिग-स्थित	पञ्चरक्षा	24	नट	चारिचर	हेवज्रनै-रात्मा
25	श‍ृङ्गार	मालश्री विश्वरोह	उग्रतारा	26	धनाश्री	षट्भुज	वसुंधरा
27	धनाश्री	त्रिवरसंजर	नैरात्मा	28	धनाश्री	गजमुख	गणपति
29	तोडी	कोलायी	पञ्चधारा	30	तोडी	प्रणाम्पपादप	भगवती
31	तोडी	हुंकारसंजार	महाकाल	32	वसन्त	कृष्णवर्ण	संवर
33	वसन्त	जिनवरजननी	प्रज्ञापारमिता	34	मारवा	वज्रीधोरी	योगाम्बर
35	कर्णादि	उद्वेगजान	वज्रयोगिनी	36	मारवा	स्फटिक वर्ण	वज्रसत्व
37	ललित	अवजासत	बुंगमदेव	38	कर्णादी	प्रत्यालिंध	महाकाल
39	गुञ्जली	एकरसंजार	चत्तुरतारा	40	खड्गी	द्वविनी	मूलनृत्य
41	बलादि	शतशत	स्वयम्भू	42	मगरश्री	जिनधातु	धर्मधातु
43	मल्हार	विश्वसरोरुह	उग्रतारा	44	मल्हार	पोतकानगल	करुणामय
45	मल्हार	कच्छपर्वत	करुणामय	46	रामकरी	सरोजपत्र	दिपंकर
47	भास	त्रिदलकमल	नैरात्मा	48	भास	सहस्रदल	धर्मधातु
49	बरादी	त्रिदल-सरोरुह	वज्रदेवी	50	मल्हार	अहुहार्थ	विरेश्वर

चर्या गीत गाने के साथ भिन्न-भिन्न वाद्य एवं ताल बजाए जाते हैं। बज्राचार्य द्वारा संपन्न होने वाली विभिन्न प्रकार की पूजा विधियों में चर्या गीत की प्रस्तुति करने के लिए पंचताल(पंय्ताः) वाद्य बजाया जाता है। पंचताल वाद्य में अवनद्ध वाद्य दो प्रकार के होते हैं, जिसमें एक खिं वाद्य बडे आकार का और दूसरा छोटा आकार का होता है। तत्पश्चात सुषिर वाद्य पंय्ताः की एक जोड़ी और घन वाद्य ताः(तिं छु) और बबू(भ्याली) वाद्य बजाया जाता है। इन पंचताल वाद्यों में चर्या गीत अनुरूप अलग-अलग ताल बजाए जाते हैं जैसे- भ्रमरा ताल, मंगल ताल, मूद्यो ल्हायेगु ताल, उक ताल, झपताल, भाक ताल, दुर्जमान ताल, त्रिद्दरा ताल, शनि ताल, षटङ्कार ताल, चस्तपति ताल, छायन ताल।

2:4:3 तुतः गीत

नेवारी संगीत में तुतः गीत को स्तुति गान के रूप में गाया जाता है। देव भाषा संस्कृत में स्तुति और स्तोत्र का सामान्य अर्थ है भगवान की प्रार्थना या आराधना करना। नेवारी जाति के आदिवासियों ने उसी स्तुति और स्तोत्र को 'तुतः' के रूप में अपनाया होगा अथवा अपभ्रंश होकर 'तुतः' गान प्रचलन में रहा होगा ऐसा विद्वानों का मानना है।

'तुतः' गान में जयदेव कृत 'गीत गोविंद' में उल्लेखित बहुत से गान को गाने की परंपरा है। वर्तमान में भी इस गान की परंपरा कम अधिक रूप में कायम है। नेवारी संगीत में गाया जाने वाले कुछ प्रचलित 'तुतः' इस प्रकार है:

"प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम्
विहितवहित्र चरित्र मखेदम्
केशव धृतमीनशरीर जय जयरीश हरे।

वसंत ऋतु में सरस्वती पूजा के दिन गाया जाने वाला तुतः गीत इस प्रकार है:

ललित लवङ्गाल तापरिशीलन कोमल मलय समीरे
मधुकर निकरकरं वित कोकिल कूजित कुञ्जकुटीरे
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते नृत्यति युवातिजनेन सम
सखि विरहिजनस्य दुरंते।।

भगवान विष्णु के लिए लिच्छवि काल के राजा मानदेव के समय में एक अज्ञात कवि द्वारा संस्कृत भाषा में रचित तुतः गीत इस प्रकार है। इस तुतः गीत को ऐतिहासिक तथा अर्थ पूर्ण माना है:

मातुः श्री राज्यवत्या हितकृत मनसः
सर्व्वदा पुण्यवृद्धयै
राजा श्री मानदेवः शुभ विमलमति
पात्रदानाम्बुवर्षी
लक्ष्मीवत्कारयित्वा भवनमिहशुभं
स्थापयामास सम्यक्
विष्णुविकान्तमूर्ति सुरमुनिमहितं
सर्वलोकैकनाथम्।"[1]

2:4:4 बारहमासे गीत

नेवारी संगीत में अति प्रचलित 'बारहमासे गीत' में पूरे वर्ष भर में हरेक महीने अलग-अलग रचना गाई जाती है। दाफा संगीत में भी महीना और ऋतु के आधार पर दाफा गीत गाए जाते हैं। परंतु बारहमासे गीत में शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय धुनों का मिश्रित रूप प्रस्तुत किया जाता है और उसे गाया जाता है। बारहमासे गीत की धुन एक ही होती है परंतु स्थान अनुसार नेवारी बस्ती में शब्द अलग अलग होते हैं। जिसमें प्रेम के प्रसंग, सामाजिक अवस्था, राजनीतिक व्यंग्य, समाज में परिवर्तित स्वरूप, ऋतुकालीन वर्णन इत्यादि विषयों को ध्यान में रखकर रचना की जाती है। इसीलिए बारहमासे गीत का जन्म समाज अर्थात् लोक, मानव एवं ऋतुओं से माना गया है।

नेवारी संगीतज्ञों के अनुसार बारहमासे गीत को महीने और छह ऋतु में इस प्रकार विभाजित किया गया है[2]:

	महिना	राग/ धुन का नाम
1.	वैशाख	धनाश्री
2.	जेष्ठ	देवगिरि
3.	असार	व्यांचुली
4.	श्रावण	मालश्री
5.	भाद्र	सोरथ
6.	आश्विन	केदार
7.	कार्तिक	कौला

1. श्रेष्ठ प्रद्युम्न /झिगु भजन म्ये / p-39,40
2. कारंजित, मंगला/ ऋतु में बाह्रमासे मेंया अध्ययन/ p-21

8. मंसीर — विभास
9. पौष — सौरंग
10. माघ — वसंन्त
11. फागुन — पथमंजुली
12. चैत्र — चैती

ऋतु के अंतर्गत इस प्रकार है:

	ऋतु का नाम	**राग/ धुन का नाम**
1.	वसंत	होली
2.	ग्रीष्म	घाटु
3.	वर्षा	सिनाज्या (मेघ मल्लार)
4.	शरद	मालश्री
5.	हेमन्त	यः मह्नि पुन्हिया व्यः छिंत्यः
6.	शिशिर	शिलाचह्ने हालेगु

नेवारी संगीत में प्रचलित बारह महिनों में गाए जाने वाले गीत तथा स्वरलिपि निम्न प्रकार है, जो काठमांडू कीर्तिपुर निवासी गायक तथा संगीतकार गुज्जे मालाकार द्वारा प्रत्यक्ष अंतरवार्ता में उपलब्ध हुए है:

बैशाख महीने के गीत:

धिंता मै गीत (मात्रा- 8)

स्थायी

म	-	म	म|	प	-	म	-|	ग	रे	म	गरे|	सा	-	ऩि	-|
-	प़	ऩि	ऩि|	सा	-	रेग	सारे|	-	प	म	ग|	रे	ग	सा	ऩि|

अंतरा

\- प -प प | पध नि नि ध | - निनि -सा -रे | सां - नि - |
ध - प - | म - ग रे | - म ग रे | सा - ऩि - |
\- प़ ऩि ऩि | सा - रेग सारे | - प म ग | रे ग सा ऩि |
सा - - - |

जेष्ठ/ असार महिने के व्यांचुलि गीत:

स्थायी

असार या वा हे मवः
नुगः पिपि च्यात रे
दछि तक द्याहां लाइगु
मति वल रे

अंतरा

ल मदु ध मदु
ज्यापु या भाग्य मदु
नुग जक खुलुलु न्हां

अंतरा

बुं दकः छपिया वा पुसा फछिंया
च्यामः झिमः जाहान यात गथे नकेगु
ज्या न दुगु मखु धेबा न दुगु मखु
गधे याना म्वाना च्वने न्हां

भावार्थ: नेवारी संगीत के बारहमासा गीत के अंतर्गत जेष्ठ/ आषाढ़ महीने में व्यांचुली गीत गाया जाता है, जो दाफा संगीत में प्रातः समय में व्यांचुली राग में निबद्ध होता है। व्यांचुली धुन में कई सारे नेवारी गीत गाए जाते हैं। जिसमें से ऊपर उल्लेखित गीत एक किसान की वेदना के विषय से संबंधित है। इस गीत में 8 मात्रा का ताल बजाया जाएगा। किसान की वेदना यह है कि आषाढ़ के समय बारिश नहीं हो

रही है, इसलिए वो चिंतित है कि अब मैं पूरे साल अपने परिवार को कैसे खाना दे पाऊंगा, पैसा कमाने के लिए कोई काम भी नहीं। यह सोच कर अपनी दुःख भरी भावना व्यक्त कर रहा है।

व्यांचुली धुन (मात्रा- 8)

स्थायी

-	ग	ग	रे	|	सा	-	ऩि	-	|	-	सारे	रे	सा	|	ऩि	ऩि	सा	-	|
-	सारे	म	म	|	म	-	प	म	|	-	गग	-सा	-रे	|	ग	-	गम	प	|

अंतरा

-	पप	-प	-प	|	पध	नि	नि	ध	|	-	निनि	-सां	-रें	|	सां	-	नि	ध	|
-	निनि	-सां	-रें	|	सां	-	नि	-	|	ध	-	प	-	|	म	-	ग	-	|
-	म	-	म	|	म	-	म	ग	|	-	म	प	म	|	ग	ग	म	-	|
-	ध	ध	ध	|	ध	-	प	म	|	-	ग	-सा	-रे	|	ग	-	गम	प	|

श्रावण महीने के टुका ज्या गीत (मात्रा- 8):

प	पध	सां	-	|	सांरे	सांनि	ध	प
म	ग	रे	ग	|	ध	सांनि	ध	प
म	ग	सारे	मग	|	रे	-	सा	-
सारे	साऩि	धऩि	पध़	|	सा	-	-	रे
ग	प	ध	-	|	पध	पमं	ग	प
म	ग	सारे	मग	|	रे	-	सा	-

भाद्र महिने का गीत:

स्थायी

जय नमः श्री बुद्ध भगवान

लुम्बिनि बन सं विज्याक

अंतरा

महादेव डमरू थाएका

नारायण शंख पुएका

ब्रम्हा देव नं बंपुएका

व लसं नं विज्याक

भावार्थ: नेवारी संगीत परंपरा के अनुसार श्रावण एवं भाद्र महीने में गुंला महीना आता है। इस महीने में अधिकतर भगवान बुद्ध के गुणगान गाए जाते हैं। इसलिए बारहमासे गीत के भाद्र महीने में बुद्ध भगवान के गीत गाए जाते हैं। विभिन्न स्थानों में प्रचलित उल्लेखित गीत में बुद्ध भगवान के लुंबिनी से आने की बात की है। स्वयं ब्रम्हा, विष्णु और महेश्वर ने उनका स्वागत किया ऐसा वर्णन किया गया है।

स्थायी (मात्रा- 7)

ध	ध |	ध	नि |	प	-	ध |
ज	य |	न	म |	श्री	S	S |
सां	सां |	सारें	सांनि |	धनि	प	- |
बु	S |	SS	द्धS |	भS	ग	S |
म	ग |	रे	ग |	सा	सा	ध |
वा	S |	S	न |	लू	म्बि	नि |
सा	रे |	गमं	पमं |	ग	रे	- |
ब	न |	संS	Sवि |	ज्या	S	S |
सारे	ग |	रे	रे |	-	सा	- |
SS	S |	S	S |	क	S	S |

अंतरा

ग	ग |	प	ध |	सां	गं	गं |
म	हा |	दे	व |	ड	म	रू |
रें	रें |	सां	- |	सां	सां	रें |
था	ए |	का	S |	ना	S	रा |
गं	- |	रें	सां |	रें	-	सांनि |
य	S |	ण	S |	शं	S	SS |
ध	ध |	प	- |	सां	-	सां |
पु	ए |	का	S |	ब्रम्	S	हा |
सारें	सांनि |	ध	प |	प	-	म |
देS	SS |	व	नं |	बं	S	पु |
ग	- |	रे	ग |	सा	सा	ध़ |
ए	S |	का	व |	ल	सं	नं |
सा	रे |	गमं	पमं |	ग	रे	- |
वि	S |	ज्या	SS |	S	S	S |
सारे	ग |	रे	रे |	-	सा	- |
SS	S |	S	S |	क	S	S |

आश्विन महीने का गीत:

शब्द: दुर्गालाल श्रेष्ठ

हाइ रे ज्यापुनी तला गुलि हिसि दु रे छला
जवह ह्लातिं कलः ज्वनाः देके वने त्यनाला ।।धु।।
सतवत छथूचा ल्वेक ह्यांगु सचिका
पिचुसे च्वंगु छ्यनय नः लास्वान निपुचा
नः लास्वान नः लि थें छ नं साप नः लिचा
छन्त स्वस्वं मोह जुल मोहनि जकं यानाला ।।१।।
ख्वाः छंगु चनालू, नेपाली बांलू

सामाज्याया वामा थें छ्यों भचा क्वकछु
ख्वाः भचा हाकुख्वाः कपालय् आहा
पुन्हि सिया तिमिलाथें सिन्हः चाकमकलः ।।२।।
लंया बुट्टा स्वांफो लू, थ्वय्ला थ्वय्ला धैथें जू
फिरिफर संगु गाचां, सः तूथे च्वनीगु
पर्सि नं थानापर्सि, अग्नं गुलि सालुगु
गुलि बांलाः थाज्या छंगु जितः नं स्यना व्यु ।।३।।[1]

भावार्थ: हिंदू धर्म के पर्वों में से एक दशहरा, जिसे नेवारी में मोहिनी नखः कहते हैं। मोहिनी नखः आश्विन महीने में मनाया जाता है। यह पर्व नेवारी जाति का विशेष पर्व है। जिसमें मालश्री की धुन बजाई और गाई जाती है। प्रत्येक स्थानों में एक ही धुन सुनने को मिलती है। इसी समय गाए जाने वाला उल्लेखित गीत जनकवि दुर्गालाल श्रेष्ठ द्वारा लिखा गया प्रचलित गीत है। इस गीत में मोहिनी नखः (दशहरा) में मंदिर में पूजा कर ने गई हुई एक लड़की की सुंदरता का वर्णन किया गया है।

मालश्री धुन (मात्रा: 8)

-	पप	प	सां	सां	नि	ध	प	-	रेम	पध	प	म	ग	रे	सा
सा	रे	ऩि	सा	ग	म	प	ग	-	रेम	गरे	सा	सा	-	-	-
-	रें	रें	रें	गं	-	रें	सां	-	सां	रें	सां	नि	नि	सां	-
-	प	ध	म	प	नि	सां	रें	नि	-	धसां	निध	प	-	-	-
-	म	म	म	म	प	ग	म	-	प	प	ध	नि	नि	सां	-
-	सांरें	गं	रें	सां	नि	ध	प	-	म	पध	प	म	ग	रे	सा

1. नेवाः सांस्कृतिक पुचः/ नेवाः म्ये/ p-14

कार्तिक महीने का गीत:

करूणामय धुन (मात्रा- 7)

स्थायी

प -	प -	म पध निध	प -	प पध	धप म ग
सा रे	- प	- म म	ग ग	-रे सा	- सा रे
रेग मग	रे ग	ग रे रे	सा -	- -	- - -

अंतरा

प प	ध नि	सां रें -	सां नि	सां -	सां - -
सां सां	सां नि	ध नि -	ध -	प -	- - -
नि नि	सां रें	सां नि नि	ध ध	प -म	पध नि ध
पध धप	म ग	सा रे -			

मंसीर महीने का गीत:

खयाली गीत (कीर्तिपुर) (मात्रा- 7)

सा रे -	रे म	म -	प ध -	धनि -	ध प
प ध -	ध सां	सां -	सां नि -	ध नि	प -
- ग -	प -	प -	ध नि -	ध नि	प म
- - -	सां सां	सां नि	ध नि -	ध नि	प म
ध सां -	सां सां	सां -	नि - सां	नि -	ध -
प - म	म ग	- -	- - -	सा रे	रे ग
ग रे -	ग -	रे -	सा - -	- -	- -

पौष महिने का गीत:

सुथे दनि कसी वनी

त्वयिक च्वापु खनी

वः च्वापु खसां निसे

मन हारे जुल

जुजु दखं फुनावने न्हाः

भावार्थ: पौष महीने में नेपाल उपत्यका के काठमांडू में अत्यधिक ठंडी और बर्फ वर्षा होती है। ऊपर उल्लेखित गीत में नायिका का पति पैसे कमाने हेतु दूर देश गया है। नायिका सुबह उठकर उस बर्फ वर्षा की ठंडी को देखकर अपने पति को याद करती है। पैसे कमाने के कारण इतनी ठंडी में भी पति

को मेहनत करनी पड़ी उस दुःख की भावना को प्रस्तुत गीत की रचना द्वारा व्यक्त किया है। यह गीत सात मात्रा में निबद्ध है।

ऩि	सा	रे	ग	रे	ग	-	रे	-	ग	-	-	-	-
सु	थे	द	नि	क	सी	ऽ	व	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	-ध	प	-मं	ग	रे	-	ऩि	-	सा	-	-	-	-
त्व	ऽ	थि	ऽक	च्वा	पु	ऽ	ख	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	नि	नि	सां	नि	-	प	-	नि	-	सां	नि	-
व:	ऽ	च्वा	पू	ख	सां	ऽ	नि	ऽ	से	ऽ	म	न	ऽ
ध	-	प	-म	ग	-	-	ग	म	ध	-	प	-	म
हा	ऽ	रे	ऽजु	ल	ऽ	ऽ	जु	ऽ	जु	ऽ	दु	खं	ऽ
ग	रे	सा	ऩि	सा	-	-							
फू	ना	व	ने	न्हा:	ऽ	ऽ							

माघ महीने का गीत:

वसंत गीत

सिरिसिरि फसं जित कुचुकुच नकल
जोवन मुसुमुसु काल
वाउँ घाय्या लासाय् द्यना मन जिगु वाउँल
मुखू व्यनाः होः गु स्वांन जितः न्हिकल
नागबेली गुँया लपुं जितः न्याकूं काय्कल
इवालं स्यना छम छम चाल

लहरानं हितुहिनाः स्यन माया याग्यु
नस्वालनं स्यन जितः मन व्यग्यु
झँगलया सलं जिगु रसं जाः गु नुगल
म्ये जुयाः म्हुतु भय बिल(1)

भावार्थ: माघ महीने में वसंत ऋतु का आगमन होता है। नेवारी संगीत में वसंत के गीत गाए जाते हैं। दाफा संगीत तथा अन्य गीत प्रकारों में वसंत की धुनों पर आधारित गीत गाए जाते हैं। इस गीत को वसंत गीत या वसंत राग भी कहा जाता है, परंतु वसंत राग के नियम अनुसार स्वरों का प्रयोग नहीं किया गया। प्रस्तुत गीत में वसंत ऋतु आने से नायिका अपनी खुशी व्यक्त कर रही है। वसंत ऋतु का

1. जंगम दीपक, रावल बेनी/ संगीत सुरभी/ p-147

परिवर्तित स्वरूप देख कर खुद में भी बदलाव आने लगा और यह बदलाव तथा परिवर्तन देख कर नायिका खुशी से झूम रही है, और इस प्रकार अपने मन की खुशी व्यक्त कर रही है।

वसंत गीत (मात्रा- 8)

स्थायी

-	ऩिसा	ग	म	|	ध	-	धनि	सांरे	|	सां	सां	नि	ध	|	पध	पध	म	ग	|
ऽ	सिरि	सि	रि	|	फ	सं	जिऽ	तऽ	|	कु	चु	कु	चु	|	नऽ	कऽ	ल	ऽ	|
-	गप	मं	प	|	गम	गरे	सा	रे	|	ऩि	सा	-	-	|					
ऽ	जोऽ	व	न	|	मुऽ	सुऽ	मु	सु	|	का	ल	ऽ	ऽ	|					

अंतरा

-	धध	ध-	नि	|	सां	रें	नि	सा	|	-	निनि	सां	रें	|	सां	निसां	नि	ध	|
ऽ	वाउँ	धाँय्	या	|	ला	साय्	द्य	ना	|	ऽ	मन	जि	गु	|	वा	ऽउँ	ल	ऽ	|
-	निनि	सां	रें	|	सां	सां	नि	ध	|	प	मंप	ग	म	|	ध	-प	मग	रेसा	|
ऽ	मुखु	व्य	ना	|	हो	गु	स्वां	नं	|	जि	तऽ	न्हि	क	|	ल	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	|
-	ऩिसा	ग	म	|	ध	-	धनि	सांरें	|										
ऽ	नाग	बे	ली	|	गुँ	या	लँऽ	पुँऽ	|										

नोट: अन्य अंतरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

फागुन महीने का गीतः

स्थायी

होलिया मेला मय्जु मस्युला
अबिर भचा सां तय् न्हांला
अहो सा छाय् ल्याः थथिन मछालाः
सुलाः सुला बिस्यु वने माः ला
आसे रे आसे ह्यागुं स्वांन छुयेथें
पिचु छयँलय् अबीरया रङ्ग बाँलाः

म यो जितः ला सहयाय् मखुन्हा
म यो धासेनि छिगु कर ला
स्वांन छुयेथें बाँलाके नं मय्
जिपिं अथें हे बाँलाः नि

भावार्थ: नेवारी परंपरा अनुसार फागुन महीने का होली पर्व धूमधाम से रंगों से खेल कर मनाया जाता है। होली खेलने के साथ-साथ गाना बजाना भी होता है। जिसमें होली के ही रंग बिरंगे, प्रेम प्रसंग की बात, राधा कृष्ण की चर्चा, समाज का व्यंगात्मक वर्णन इत्यादि का समावेश किया जाता है। संपूर्ण नेवारी समाज के विभिन्न होली गीत में से ऊपर उल्लेखित होली गीत अति प्रचलित गीत है। इस गीत में नायक - नायिका दोनों मिलकर होली खेलते हैं एवं एक दूसरे को रंग लगाने की बात की गई है।

होली गीत[1] (मात्रा- 8)

-	म	म	म	प	-	म	-	ग	रे	म	गरे	सा	-	ऩि	-
ऽ	हो	लि	या	मे	ऽ	ला	ऽ	म	य्	जु	मऽ	स्यु	ऽ	ला	ऽ
-	ऩिसा	रे	रे	रे	म	ग	रे	सा	रे	सा	ऩि	सा	-	-	-
ऽ	अऽ	बि	र	भ	चा	सां	ऽ	त	य्	न्हां	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ
प़	प़	ऩि	ऩि	सा	सा	रे	-	म	म	रे	रे	सा	सा	रे	-
अ	ऽ	हो	सा	छा	य्	ल्या	ऽ	थ	थि	न	म	छा	ऽ	ला	ऽ
-	प	प	प	प	प	म	प	ध	प	म	ग	रे	-	-	-
ऽ	सु	ला	सु	ला	ऽ	बि	स्यु	व	ने	मा	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ

1. (लोहिनी) तिवारी, शोभा/ लोकसंगीतार्पण/ p-67

चैत्र महीने का गीत:

पाहाँ चरे गीत (घाटु गीत) (मात्रा- 7)

स्थायी

ऩि	सा	रे	ग	|	रे	ग	-	|	प	-	म	-	|	ग	-	रे	|
सा	-	ऩि	-	|	-	-	-	|	ऩि	सा	रेग	मग	|	रे	-	-	|
ऩि	सा	रेग	मग	|	रे	सा	ऩि	|	-	ध़	ऩि	सा	|	-	-	-	|

अंतरा

रे	रे	म	म	|	पप	नि	-	|	ध	-	प	-	|	-	-	-	|
सां	सां	सां	-नि	|	ध	प	-	|	म	ग	मग	रे	|	-	-	-	|
ऩि	सा	रे	रे	|	रे	ग॒	-	|	रे	सा	रे	-	|	-	-	-	|
ऩि	सा	रेग	मग	|	रे	ग॒	-रे	|	सा	-	ऩि	-	|	-	-	-	|
ऩि	सा	रेग	गरे	|	सा	ऩि	-	|	ध़	ऩि	सा	-	|	-	-	-	|

घाटु गीत (ताल- पलेमा)

थथी जागु रस बस त्वलताव

राम छि गन झाया

पूर्वस निभा लुया गन मावनी प्रभुयान

छि झायाल परदेश गन वनी प्रभुयात

राम छि गन झाया

भावार्थ: विक्रम संवत् के अंतर्गत चैत्र महीने में नेवारी संगीत में विशेष 'पाहाँ चरे गीत' (घाटु गीत) गाने की परंपरा है। नेवारी बस्ती के अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग जात्रा पर्व को इस माह में मनाया जाता है। इसी समय घाटु गीत/ धुन गाई तथा बजाई जाती है। यह एक विरह प्रधान गीत है। ऊपर उल्लेखित घाटु गीत में भगवान राम के गुणगान गाए है जिसमें भगवान राम के भक्तजन उनको पुकार रहे हैं।

घाटु गीत[1] (ताल- पलेमा) (मात्रा- 7)

ऩि	सा	रे	|	-ग	रे	प	-	|	प	-	म	|	-	ग	ग	रे	|
थ	थि	जा	|	Sगु	र	स	S	|	ब	S	स	|	S	त्व	ल	S	|
सा	-	ऩि	|	-	-	-	-	|	ऩि	सा	रेग	|	मग	रे	-	-	|
ता	S	व	|	S	S	S	S	|	रा	S	SS	|	SS	S	S	S	|

1. (लोहिनी) तिवारी, शोभा/ लोकसंगीतार्पण/ p-117

ऩि	सा	रेग	-रे	सा	ऩि	-	सा	-	-	-	-	-	-
छिं	ऽ	गऽ	ऽन	झा	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	रे	म	-म	प	पध	नि	ध	-प	प	-	-	-	-
पु	र	व	ऽस	नि	भाऽ	ऽ	लु	ऽऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	सां	सां	-नि	ध	प	-	म	ग	म	-ग	रे	-	-
ग	न	मा	ऽऽ	व	नी	ऽ	प्र	भु	या	ऽऽ	त	ऽ	ऽ
ऩि	सा	रे	-रे	रे	ग	-ग	रे	सा	रे	सा	ऩि	-	-
छि	ऽ	झा	ऽल	प	र	ऽऽ	दे	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ऩि	सा	रेसा	मम	ग	ग	रे	ऩि	सा	रेग	-रे	सा	ऩि	-
ग	न	माऽ	वऽ	ऽ	नी	ऽ	छि	ऽ	गऽ	ऽन	झा	या	ऽ

ऊपर उल्लिखित दोनों घाटु गीत को देखा जाए तो दोनों की स्वरलिपि में सभी स्वर शुद्ध स्वरों का प्रयोग किया गया है। दोनों सात मात्रा में निबद्ध हैं और दोनों में विरह भाव देखने को मिलता है। इस प्रकार नेवारी मुख्य विस्तार काठमांडू के साथ-साथ ललितपुर, भक्तपुर तथा अन्य नेवारी स्थानों में संपूर्ण बारहमासे गीत के अंतर्गत इन्हीं धुनों की सहायता लेकर अलग-अलग शब्दों से रचना बनाई जाती है तथा उसे गाया और बजाया जाता है। स्थान अनुसार स्वर रचना में थोड़ा बहुत अंतर देखने को मिलता है परंतु रस भाव एक ही होगा ऐसा शोधार्थिनी का अनुमान है।

2:4:5 सामाजिक गीत

नेवारी संगीत प्रकारों में से सामाजिक गीत प्रकार समय को मध्यनज़र रखते हुए समाज में होने वाली विशेष घटनाएँ जैसे कि मेला, पर्व, राजनैतिक परिवर्तन इत्यादि विषयों का समावेश किया जा सकता है। सामाजिक गीत के अंतर्गत इन प्रकारों का समन्वय किया जा सकता है:

2:4:5:1 मेला पर्व गीत

2:4:5:2 ध्याचु मे(गीत)

2:4:5:3 स्वच्छन्द गीत

2:4:5:1 मेला पर्व गीत

नेवारी मेला पर्व के गीतों में 'सिलु म्ये' एक अत्यंत प्रचलित गीत प्रकार है। सिलु गीत एक सामाजिक गीत प्रकार है। नेवारी संस्कृति में तीर्थ स्थलों का भ्रमण करने की धार्मिक आस्था है। इसी परंपरा के अंतर्गत प्राचीन समय से चली आ रही श्रावण पूर्णिमा के दिन काठमांडौ उपत्यका के उत्तरी स्थान में स्थित रसुवा जिला के 'गोसाईकुंड' में स्नान करने का प्रचलन वर्तमान में भी पवित्र माना जाता है।

इसलिए हर साल युवा युवती ही नहीं किंतु बुजुर्ग व्यक्ति तथा बाल बालिकाएं भी कथित यात्रा करके स्नान करने हेतु गोसाईकुंड जाते हैं। इस तीर्थ यात्रा को सिलु तीर्थ कहा जाता है। गोसाईकुंड तीर्थ स्थान पर जाने के क्रम में गाया हुआ एवं बना हुआ गीत 'सिलु म्ये' कहा गया।[(1)] विद्वानों के मतानुसार सिलु गीत की रचना मल्ल काल में हुई है। वर्तमान में सिलु तीर्थ यात्रा की पांच गीती कथाएं प्राप्त हुई है, जिसमें से तीन प्रकार की कथा का वर्णन अधिक मात्रा में समान देखने को मिलता है और बाकी की दो प्रकार की कथा एक जैसी है जिसमें धार्मिक यात्रा के गुणगान गाए हैं। अति प्राचीन रचना 'आसा सफू कुथि' में कथित और डॉ. जनकलाल वैद्य के 'नेपालभाषाया प्राचीन काव्य सिर्जना' पुस्तक में प्रकाशित 'सिलु तिस' का सार एक ही है। नेवारी लोकगीतों के संकलनकर्ता मानदास और ठाकुरलाल द्वारा प्रकाशित 'सिलु तीर्थ गीत' और प्रेमबहादुर शाह द्वारा संकलित और संपादित 'हाय हाय प्रभु स्वामी छि गन भ्काया' गीत में कुछ पाठ भेद के अलावा बाकी सब समान रूप से पाया गया है। अन्य थिमि स्थान में छत्रबहादुर कायस्थ द्वारा संकलित सिलु गीत 'जय नीलकंठ महादेव' मूलतः धार्मिक यात्रा वृतांत पर आधारित है।[(2)]

सिलु गीत के संबंध में अभी भी अध्ययन और लेखन क्रम चल रहा है। कुछ विद्वानों का मानना है कि सिलु गीत चिनिया संगीत के साथ मिलता जुलता हैं किंतु इसका कोई ठोस प्रमाण प्राप्त नहीं होता। इसी कारण कुछ अन्य विद्वान अनेक वर्षों से चली आ रही आंतर्देशीय कारोबार और आवत-जावत संबंध के कारण ऐसा अनुमान लगाया होगा ऐसा उनका मानना है। अध्येता योगेंद्र राजकर्णिकर ने 'सिलु म्ये'(वि.सं. 2065) के संगीत पक्षों का अध्ययन करके नेवारी संगीत में 'सिलु म्ये' का समय निर्धारण किया है। इसी लोकगाथा के आधार पर साहित्यकार रामशेखर ने सिलु नामक कॉमिक्स लिखा था जिसमें कथावस्तु को वियोगांत बनाया और इस कथावस्तु के ऊपर पहली बार वि.सं. 2044 में नेवारी फिल्म सिलु का निर्माण किया गया था। इस फिल्म का निर्देशन प्रेम रिमाल ने किया था। इस फिल्म में यदि श्रीमान-श्रीमती साथ में गोसाईकुंड तीर्थाटन में गए तो अवश्य ही वियोग होगा यह विश्वास को लेकर मुख्य कथावस्तु बनाई गई है। इस फिल्म के निर्माण के कारण सिलु गीत का अधिक मात्रा में प्रचार-प्रसार होने लगा। मल्लकाल के प्रसिद्ध 'सिलु गीत' के कुछ संकलन गीत इस प्रकार है:

1. तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपाल भाषा साहित्यको इतिहास/ p-63
2. महर्जन, राजेन्द्र/ सिलु म्ये र सामाजिक प्रतिरोध/ p-144

सिलु तिस[1]

सिलु मे - 1

सिलु तिस ओन्य धका अति रस जुल
अय माम अय बुबा सिलु तिस ओन्य ।।
सिलु तिस मोल ल्हुय अति पुण्य लाक ।।१।।
कांतिपुरिं दना ओना धमाथुलि वास ।।२।।
धमाथुलिं दना ओना ।। न्यागमानि वास ।३।।
न्यागमानिं दना ओना ।। रानि पौवा वास ।।४।।
रानि पौवां दना ओना ।। गांचोस वास ।।५।।
गाचोसं दना ओना । धैंबु व्यासि बास ।।६।।
धैंबु व्यासिं दना ओना । धुंच्या पौवा वास ।।७।।
धुंच्या पौवां दना ओना ।। चंद्र सिलु वास ।।८।।
चंद्र सिलुं दना ओना ।। सिलु तिस वास ।।९।।
यिता छिना थिता थ्यन जुजुं गंके हल ।
गना गन्य मज्यु मिसा हथि जुया फुत ।।१०।।
धाल्यमाया कोसं चोना खिचा ख्वस्यं हल ।
खिचा खोल मखु जुजु प्रभु खोस्य दिल ।।११।।
दुलि दन्य मनं मिसा शुपालस (सुपालसं) दन ।।
शुपालसं दना स्वया प्रभु खोस्य दिल ।।१२।।
खोय मते प्रभु जिति ग्यंम्ह लायि ।।
छति ग्यंम्ह लाक्ययात तपस्या निं याय ।।१३।।
जुजुं बिया तारिस्वान प्रभु छुके मानि ।।
जुजु बियां तारिस्वान प्रभु छुके धुन ।।१४।।
निम्ह तिपु सिलु ओन्य शुयां (सुया) मतेओ ।।
निम्ह तिपु सिलु ओना ओया कथं बायि ।।१५।।
नेपालया छत्रपति श्रीजयप्रकास मल (मल्ल)
प्रजायात प्रतिपाल यानाओ बिज्याक ।।१६।।

1. महर्जन, राजेन्द्र/ सिलु म्ये र सामाजिक प्रतिरोध/ p-148

भावार्थ: प्रस्तुत सिलु गीत में सिलु(गोसाईकुंड) तीर्थ जाने के लिए सर्वप्रथम अपने मातापिता से कह रहे है की तीर्थ स्थल पर जाने से अत्याधिक पुण्य मिलता है इसलिए तीर्थ स्थल पर जाने के लिए आज्ञा लेते है। अपने परिवार जनों से विदा लेते हुए तीर्थ स्थल के लिए प्रस्थान करने के बाद रात्रि विश्राम करने हेतु विश्राम स्थल के नामों का भी इस गीत में उल्लेख किया है। तीर्थ स्थल पहुंचने के बाद सभी स्थानों में स्नान एवं दर्शन करते है। इस प्रकार सब दर्शन स्नान खत्म होने के बाद अपनी पत्नी को राजा की सेना ले जाती है। अपनी पत्नी के साथ अलग होने के बाद विरह भाव में भगवान से प्रार्थना करते है और ऐसी कहावत मानने लगते है की सिलु तीर्थ पर दाम्पत्य को मिलकर नहीं आना चाहिए। लेखक ने प्रस्तुत गीत में स्वयं के नाम का उल्लेख ना कर मल्लकालीन राजा श्री जयप्रकाश मल्ल का उल्लेख किया है। इस गीत को भक्ति और विरह रसप्रधान मान सकते है।

सिलु मे – 2

सिलु तीर्थ[1] ताल: पलिमां

हाय हाय प्रभु स्वामि छि गन भ्काये,
धन्दा काये मत मिसा ज्याख याना चोव।
छि व जि व चोना प्रभु सल्हा साहुति मदु,
गन झाये तेना प्रभु गन वने तेना।
सिलु तीर्थ मोल ल्हुय अति पुण्य लाइ,
सिलु तीर्थ वनेयात पासा माल वना।
पासा माले मते प्रभु छि व जि व वने,
निम्हतेपू सिलु वने अति पुण्य लाइ।
छ व जि व वनेयात जोसी केने मानि,
जोतिस् केना स्वया जिन बाय माली धाल।
जोतिस् केने छाय प्रभु छि व जि व वने,
छि व जि व मोल ल्हुय अनि पुण्य लाइ।

हथ्या बिय मते मिसा छ व जि व बाइ,
बुझे याना बुझे मजू अवश्यन बाइ।
थव छँन दना वना धमाथुसि बाइ।
धमाथुली थ्यंका स्वया तिरि लिसे वल।

1. https://youtu.be/0a22v5T4_ds/ Dt: 24/12/2021

वय धाय मते मिसा छँस लिहाँ हुँनि,
हथ्या बिये मते मिसा छि व जि व बाइ।

भावार्थ: प्रस्तुति सिलु गीत में सिलु तीर्थ स्थल जाने के लिए दो दांपत्य के बीच के संवाद को लेखक ने गीत का स्वरूप दिया है। इस सिलु गीत में लेखक का नाम और रचना समय प्राप्त नहीं होता। गीत में सर्वप्रथम श्रीमती अपने श्रीमान को पूछती है कि वे कहां जा रहे है। फिर श्रीमान अपनी श्रीमती को कहता है कि सिलु तीर्थ जाने के लिए दोस्तों का समूह बना रहा हूं। क्योंकि यह तीर्थ जाने से अत्यंत पुण्य प्राप्त होता है। इस बात को सुनकर श्रीमती भी साथ में जाने के लिए जिद करती है परंतु श्रीमान बोलता है कि ज्योतिष ने कहा है कि इस स्थान में दो दांपत्य का साथ में जाने से बिछड़ना पड़ता है। परंतु श्रीमती अत्यंत जिद करती है इसलिए श्रीमान उनको साथ ले जाते हैं। तीर्थ स्थान पर पहुंच कर सभी कार्य खत्म होने के बाद जैसा ज्योतिष ने कहा था वैसी ही परिस्थिति सामने आई, ऐसा वर्णन किया गया है। दोनों दांपत्यों ने पुनः मिलन के लिए बहुत सारी कठिनाइयां पार कर के अंत में मिलन होता है और इस मिलन का हर्ष भाव देखने को मिलता है।

इस गीत को नेवारी फिल्म 'सिलु' में स्थान प्राप्त हुआ है। मल्ल काल से प्रचलित नेवारी सिलु गीत वर्तमान में भी अत्यंत प्रचलित है। जिसको साउन/भाद्र के समय में दाफा भजनों में गाने तथा बजाने का चलन कायम है। इस गीत को स्थाई के समान ही प्रत्येक अंतरा एक ही धुन में पाए जाते हैं। त्रिरत्न मानंधर के हांदे पुस्तक के अनुसार पलेमां ताल छः मात्रा का है। परंतु शोधार्थिनी ने पाया कि उक्त गीत आठ मात्रा की ताल में निवद्ध है| इस गीत की स्वरलिपि इस प्रकार है:

सिलु म्ये (गीत) (मात्रा- 8)

स्थायी

नायिका:	प	पध	सां	-	|	सांरें	सांनि	ध	प	|
	हा	याऽ	ऽ	ऽ	|	हाऽ	यऽ	प्र	भु	|
	म	ग	रे	ग	|	ध	सांनि	ध	प	|
	स्वा	ऽ	ऽ	मि	|	छि	गन	झा	ऽ	|
	म	ग	सारे	मग	|	रे	-	सा	-	|
	ऽ	ऽ	ऽऽ	येऽ	|	त	ऽ	ना	ऽ	|
नायक:	सारे	साऩि	धऩि	प़ध़	|	सा	-	-	रे	|
	धन्	दाऽ	काऽ	ऽऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ये	|
	ग	प	ध	-	|	पध	पमं	ग	प	|
	म	ते	मि	ऽ	|	ऽऽ	साऽ	ज्या	ख	|

	म	ग	सारे	मग	|	रे	-	सा	-	|
	या	ऽ	ऽऽ	नाऽ	|	चो	ऽ	व	ऽ	|
नायिका:	प	पध	सां	-	|	सांरें	सांनि	ध	प	|
	छि	वऽ	जि	ऽ	|	ऽऽ	वऽ	चो	ना	|
	म	ग	रे	ग	|	ध	सांनि	ध	प	|
	प्र	ऽ	ऽ	भु	|	सल्	हाऽ	सा	ऽ	|
	म	ग	सारे	मग	|	रे	-	सा	-	|
	ऽ	ऽ	हुऽ	तिऽ	|	म	ऽ	दु	ऽ	|
	सारे	सा़नि	ध़नि	प़ध़	|	सा	-	-	रे	|
	गऽ	नऽ	झाऽ	ऽऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ये	|
	ग	प	ध	-	|	पध	पमं	ग	प	|
	ते	ना	प्र	ऽ	|	ऽऽ	भुऽ	ग	न	|
	म	ग	सारे	मग	|	रे	-	सा	-	|
	व	ऽ	ऽऽ	नेऽ	|	ते	ऽ	ना	ऽ	|

नोट: अन्य अंतरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

सिलु मे – 3

थिमि सिलु गीत

जय निलकंठ महादेव छीगुली सरन दुका रे ।।धु।।

चषु तृथ द्वीमा चोस सुमेरीन्या चलषुनी सिफा गाम

अलायेनीजु अभव वन सीफष रे ।।

कुण्डस मोल ल्हुय मसिलेतु सियकाव

तलेजु भयीरव दरसन याये रे ।।१।।

काठगुं लुचु देव ईनारया कात्रीथ

कातृका देव नगा लइना थेन रे ।

इलि माजुं मुस्या च्याकी बाटा वाराही सीयेकाव

कोठा दुनया आचाजु देव दरसन यायेरे ।।२।।

नाला देश भगवती चासल सांगा देस

लगसंको देवन धलि चोस थेन रे ।।

याका भैरव माहारुद्र पनवति मोल ल्हुरे

नामुबुद्ध सियेकाव दरसन याये रे ।।३।।

तृथ पनी वागेश्वरि नारायण जगुमाहा
मालिनिका येल तृर्थ थेन रे ।।
सिपुचोया माहारुद्र गोकर्णया माहारुद्र
वागमति स्नान याङा पशुपति नमस्कार याये रे ।।४।।
गुज्येश्वरी षाशो तिर्थ भुजगय विश्वनाथ
सपन तीर्थ मोल ल्हुल वया रे ।।
विजेश्वरी सितल माई सिंगु बुद्ध सियेकाव
मंजुश्रीजु सियेकाव दरसन याये रे ।।५।।
लोहकुमार जल्हाव देव बाटाबु बुंगा देव
धालाछेंया देवजु सिलकु वया रे ।।
क्वाथछें बुलुछेंया वलषुपनि चपालया
भीमस्येनजु याके दरसन याये रे ।।६।।
ग्वरागुरी मंजुश्वरी त्याङा कोरुवाल
फनपीया नारायणजु दरसन याये रे ।।
मातातीर्थ दह चोस कोनति तीरथया
माहारुद्रजु याके दरसन याये रे ।।७।।
कृष्णपुरी वाघदेव मतुक पंचरीन्या
भैरव ताम भ्येलु थेन रे ।।
लुंमारु देवजु मसिलेतु सियेकाव
ग्वाल देसया जे वागेश्वरि दरसन याये रे ।।८।।
तमनात पुरीया वाला षुसि सियेकाव
मालिनी थापीया नारां थेन रे ।।
अजुदह भेलुदह मसिलेतु सियेकाव
सिलु दहं सियेकाव मोल ल्हुल वया रे ।।९।।
वने तेल लिहाँ नुयो तत्र वास थाहा नुयो
चन्द्रसी वासनं भागुयात थेन रे ।।
धुंच्यया पाकोस कपिलासया नाटेश्वरि
सरस्वति गणपति पशुपति स्वान छाल वया रे ।।१०।।
विसंगुंया नारायणजु ईचागुंया नारायणजु

थाथुमारिया विनायक कोसी इना दरसन याये रे ।।
गाचाइना चोरेइना कोकिइना दिगु भैरब
इनालाछीया नारायणजु दरसन याये रे ।।११।।
वासुछेंया गणपति विश्वनाथ विसंभाव
दथु त्वारया गणपति सिलकु वया रे ।।
लोकेश्वर धर्मधातु थास्वा गणेश
कोमचादेव ननिस बिज्याकम्ह अजीघ्न दरसन याये ।।१२।।
मध्यपुरया पिथु गाम पीथ गणेश
क्वाथक्षें सुकंगाल थेन रे ।।
सीचाकोजु इनाकोजु नर देसया गणपति
भागुली माहालक्ष्मी दरसन याये रे ।।१३।।
क्वाकदेव परसीकोदेव भानासीको भार
इनागाल माहादेव सियेकाव
कोलाषुद्यो नमस्कार याये रे
श्री न्यासि इन्द्र मोहल मोहल
षप देसया थाकुरजीके स्यवा धाल वया रे ।।१४।।

'सिलु म्ये र सामाजिक प्रतिरोध' पुस्तक के लेखक राजेंद्र महर्जन की पुस्तक में प्राप्त उल्लेख अनुसार प्रस्तुत सिलु गीत, थिमि देश(स्थान) के इष्टदेवी बालकुमारी में स्थित पाटी(फलैचा) में प्रतिदिन गाया जाने वाले 'हरिभक्त पुस्तक' से ली गई है। प्रस्तुत गीत के लेखक का नाम प्राप्त नहीं होता परंतु उस समय के शासक का नाम वर्णन प्राप्त होता है, यह नाम श्री न्यासी इन्द्र मोहल' जो भक्तपुर के राजा भूपतीन्द्र मल्ल थे जिनका राज्यकाल ने. सं. 816-842(ई.स. 1696-1722) था। इस सिलु गीत में विभिन्न नेवारी वस्ती में अवस्थित तीर्थ स्थलों का भ्रमण करने की बात उल्लेख की गई हैं। इसलिए यह सिलु गीत केवल भक्ति रस प्रधान माना जा सकता है।

2:4:5:2 ध्याचू मे(गीत) (Satire Song)

ध्याचू शब्द मानव समाज के व्यवहार को दर्शाता है। किसी भी बात को सीधा ना कह कर उसी बात को घुमा फिरा कर कहने की भी एक कला है, चाहे वह बोली हो या गीत। ध्याचू के रूप में प्रस्तुत करने के लिए उस व्यक्ति में कला और ज्ञान की जरूरत पड़ती है, अन्यथा इससे सीधा आरोप के रूप में माना जा सकता है। ध्याचू शब्द का प्रयोग नेवारी जनजीवन में सदियों से प्रयोग होता आ रहा है। विशेषतः मल्लकाल को नेवारी भाषा की कृतियों का स्वर्णकाल माना जाता है। इसी काल में विभिन्न 'ध्याचू मे' का संकलन पाया गया है। मल्ल काल में नेवारी पर्व सापारु(गाईजात्रा) पर्व की शुरुआत हुई थी। यह पर्व विशेष रूप से स्वर्गस्थ लोगों की याद में मनाया जाता है। मल्ल काल में इस पर्व में शोक में डूबे हुए परिजनों को हंसाने के लिए एवं खुशी का वातावरण बनाने के लिए हास्यव्यंग नाटक एवं गीत आदि का प्रदर्शन करने की परंपरा प्रारंभ हुई थी। इस हास्य व्यंग नाटक तथा गीतों में ध्याचू मे भी सम्मिलित था। ध्याचू मे में अपने राज्य की व्यवस्था, राजनीतिक उथल-पुथल, आर्थिक एवं सामाजिक अवस्था को प्रत्यक्ष रूप में ना कहकर उसी बात को हास्यव्यंग तथा अप्रत्यक्ष रूप में समझाई जाती है। नेवारी गीत परंपरा में ध्याचू मे विभिन्न प्रकार के माने गए हैं जैसे कि- राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक ध्याचू मे आदि। इन विभिन्न ध्याचू गीतों को अलग-अलग पर्व, त्योहार तथा श्रमकार्य करते समय अपने विचार से प्रस्तुत किया गया पाया गया है। नेवारी जाति में प्रचलित विभिन्न ध्याचू गीत में से कुछ प्रचलित ध्याचू गीत इस प्रकार है:

2:4:5:2:1 राजनैतिक ध्याचू मे

नेवारी भाषा में ध्याचू गीत का विकास संपूर्ण नेवारी वस्तियों, नगरों एवं जिलों में पाया गया है, जैसे यें, चल, ख्वप, किपू, पांगा, थिमि इत्यादि। राजनैतिक ध्याचू मे में प्राचिन काल से ही देश तथा राज्यों की परिस्थिति का वर्णन किया है। सर्वसाधारण से लेकर दरबार के राजाओं ने भी राजनैतिक ध्याचू मे लिखने का प्रयास किया है। मल्ल काल में लिखे हुए इस गीत को वर्तमान में दाफा संगीत समूह में भी गाया जाता है। नेपाल भाषा के प्रथम लेखक राजा महेन्द्र मल्ल(ने. सं. 680-694) के बहुत सारे नेवारी गीत तथा अन्य लेखों का प्रमाण मिलता है। उनके द्वारा लिखा हुआ एक राजनीतिक ध्याचू मे इस प्रकार है:

मेव मदु जित (रागः ईमन)[1]

मेव मदु जित छि सरन जि क्या ।।धु।।
तवगाल सिमा खनाव वनस जि दुविनाव रे।
निभालया किपा देव थें दया दयमाल ।।१।।
थ्व म्हस मि दनाव, खुसिस जि दुविनाव रे।
लखन घेल जुसे फचित हवाल ।।२।।
विन तोया विखुलिथें वनाव जित तल रे।
गु चोका थेन निभाल थे बुलुसे जि वन ।।३।।
गिन वने गिन च्वने थास मदु रे।
महेन्द्र मल्ल नं ल्हासे तथा विपति हवाल ।।४।।

भावार्थ: इस गीत में महेन्द्र मल्ल राजा ने विभिन्न राजनीतिक अवस्थाओं को व्यक्त किया है। उस स्थिति से खुद का साथ देने वाला कोई नहीं है और अकेला महसूस करके भगवान की शरण में विनंती कर रहे हैं। उस समय में काठमांडू भक्तपुर- ललितपुर के बीच द्वंद मचा हुआ था। प्रत्येक बात में एक दूसरे के खिलाफ षडयंत्र होता था। इसलिए इस जीवन का भरोसा नहीं रहा। किस जगह जाए किसका भरोसा करें इस प्रकार अपने भारद्वाजों एवं निकट के लोगों को व्यंग्य रूप में अपने मन के भाव को व्यक्त किया है, ऐसा शोधार्थिनी का मानना है।

राजनैतिक ध्याचू गीत को दरबार के लोक से लेकर प्रजा ने भी अपनी मन की बात एवं भावना गीत द्वारा प्रस्तुत की है। प्रस्तुत गीत शाहकाल में प्रजा द्वारा लिखा हुआ है। बहुत सारे राजनैतिक ध्याचू गीतों में से प्रस्तुत गीत वर्तमान में भी लोगों में प्रचलित है, जो इस प्रकार है:

सितला माजु[2]

रागः कटुकोला, **तालः** परताल

सितलामाजु स्वहने परजाया गथिन हवाल ।।धु।।
न्यता मदु खना मदु कचिमचा तय मदु
महाराजया हुकुम जुल ।।१।।
नायखिन बाजन थावका सिपाहीत घेरे याका

1. शाक्या, सृजना/ नेवाः सामाजय् ध्याचू मे/ p-48
2. Siegfried Lienhard/ Song of Nepal/ p-203

कचिमन्चा पितिनाव छोत ।।२।।
नसा बजि ब्यकुंच्यासे कचिमचा लुकुंछिसे
वनेमाल तामाखुसि पारि ।।३।।
छम्ह मचा लुकुंछिसे चने छम्ह मचा व्यकुंच्यासे
छम्ह मचा लुतुलुसे यने।।४।।
यँ देशं दनाः वना खोप देशे बास जुल
तलेजु माजु दरसन याये ।।५।।
खोप देशं दना वना बदेपास बास जुल
चण्डेश्वरी दरसन याये ।।६।।
वनेपान दना वना पलांचोस बास जुल
भगवती दरसन याये ।।७।।
दोलाघातं दना वना तामाखुसि पारि थ्यन
महादेव दरसन याये ।।१०।।
नय यात नसा मदु तिय यात वस मदु
चोने यात बास जित मदु ।।११।।
लखि मखु पसि मखु न्हांकप्वाचं दाया हल
सिपाहीत घेरेयाना हल ।।१२।।
कइ बीम्ह कछला माजु लख जायकीम्ह सितला माजु
यनकीम्ह बछला माजुयाके फोने ।।१३।।
थ्व हे मया रहे जूसा जोलिंजोल क्खुन बोयके
लुँयागु ओयागु द्वाफो स्वान छाय ।।१४।।
सुरज कोमजो थास चिकुं पुना मचा सित
माम बुबां नुत्रः नाया खोल ।।१५।।
सीम्ह मचा उयमदु मचा गाले थुनमेदु
परजाया गथि हवाल ।।१६।।
बाम्ह मचा मामं जाँसे बाम्ह मचा बुबां जोंसे
तामाखुसि कुतकाव छात ।।१७।।
स्वामि जुजुया धर्म मदया कचिमचा वाके छोत
वनेमाल तामाखुसि पारि ।।१८।।

नेपालया छत्रपति श्री रणबहादुर
परजान अति दुःख सिल ।।१९।।
मतेमते सितलामाजु सहस्र विनति छिके
याहुने, लोक उधार ।।२०।।

भावार्थ: यह ध्याचू गीत राजा रणबहादुर शाह के शासनकाल का गीत है। प्रस्तुत गीत जनसाधारण ने राजा की आलोचना करते हुए लिखा होगा ऐसा शोधार्थिनी का अनुमान है। उस समय एक महामारी तःकै(chicken pox) फैल गया था। जिसके कारण राजा का हुक्म था कि जो भी इस रोग से पीड़ित है वह सब देश से बाहर चले जाए और अपना उपचार खुद करवाएं। इसी बात को लेकर लेखक ने अपने दुःख को एवं देश निकाल के बाद अपने छोटे बच्चों सहित पूरे परिवार को लेकर जाने का क्रम व्यक्त किया है। इस गीत में राजा का वर्णन नहीं उनकी सीधी आलोचना की गई है। अपनी जनता के प्रति बिल्कुल भी प्यार और सद्भाव रहित राजा के रूप को बताया गया है।

2:4:5:2:2 सिन्हाज्या या ध्याचू मे

नेवारी जाति के लोगों का मुख्य पेशा व्यापार एवं कृषि है। कृषि कार्य में अधिकतर ज्यापू लोग संलग्न होते हैं। वर्षा ऋतु के समय में ज्यापू जाति पूरे साल भर के लिए धान की खेती करती है। जिसे नेवारी में सिन्हाज्या कहते हैं। सिन्हाज्या(Plantation) कार्य को दोनों पुरुष एवं महिला शामिल होकर उसे समाप्त करते है। उस कार्य को करने में ज्यादा थकान महसूस ना हो इसलिए खेतों में हंसी-मजाक एवं भिन्न भिन्न प्रकार के गीत गाकर एवं वाद्य वादन करके कार्य को संपन्न किया जाता है। सिन्हाज्या में गाने की परंपरा कब से शुरू हुई यह कहना तो मुश्किल है किंतु जब से इस श्रम कार्य का प्रारंभ हुआ होगा तब विभिन्न प्रकार के गाने बजाना भी शुरू हुआ होगा ऐसा शोधार्थिनी का अनुमान है। उस गाने की परंपरा में धीरे-धीरे व्यंग्य को भी स्थान मिलता गया। इसीलिए लेखकों ने सिन्हाज्या ध्याचू गीत लिखना शुरू किया होगा। सिन्हाज्या ध्याचू गीत विभिन्न विषय पर लिखा जाता हैं। जैसे कि मेघराजा का वर्णन ताकि अपनी खेती अच्छे से संपन्न हो तथा खेती करने के समय दोनों स्त्री एवं पुरुष एक-दूसरे को व्यंग्य कर के हंसी मजाक के विषय में भी लिखा हुआ पाया गया है। अन्य विषयों में किसानों पर हुए अन्याय, अत्याचार एवं उनके व्यवहार को लेकर व्यंग्य प्रहार करते हुए गीत भी लेखकों ने प्रस्तुत किए हैं। एक सिन्हाज्या गीत इस प्रकार है:

सिन्हाज्या गीत[1]

लेखक- दुर्गालाल श्रेष्ठ

असारया सिन्हाज्या, भुलुभुलु ससिवा
सिलि सिलि फसं दायाः मन चङगाः
ज्यापुया कायमचा न्हिया न्हिछिं बुँया ज्या
पासा वया कू व मुगः चा ।।धु।।
वा फय् निभाः , प्वँ लिखे ल्वानाः
कुलिं बुँया चा तछ्यानाः
बुँ माथं वंकाः अले पुवाचा पिनाः
त्यानुल धाय्वं चः ति हुयाः झासु लनी
इलय् ब्यलय् स्वंमा ह्वनाः ।।१।।
हिसिबम्ह मैचा वल न्याकूं कयाः स्वंमा ज्वनाः
ल्याय्मम्ह ज्यापुं वैत केले स्वत न्हाँ
ज्यापुनं म्ये हाल, मैचानं प्याखं हुल
गुलि रसं जाःगु सिन्हाज्या ।।२।।
वाउँसेच्वंगु पुवाचा , बुँया योग तिसाया
थ्वहे तिसां तियेकीपिं झी हे ज्यापुचा
ज्यापुया कायमचा लोकया लिधंसा
तर तलसिंया न्हावः सा ।।३।।

भावार्थ: प्रस्तुत सिन्हाज्या गीत जनकवि दुर्गालाल श्रेष्ठ द्वारा लिखा गया है। इस गीत में ज्यापु(नेवारी में एक प्रकार की जाति) के जीवन की दिनचर्या का वर्णन किया है। ज्यापु लोग खेतों में काम करने वाली जाति है। जिसका जीवन निर्वाह खेती से होता है। प्रस्तुत गीत में आषाढ़ का समय है और बारिश के साथ जूझते हुए ज्यापु अपना कार्य कर रहे हैं, थकान मिटाने के लिए खेत में आई हुई महिला साथी के साथ नाच गान कर रहे हैं ऐसा वर्णन है। अन्त्य में उच्च वर्गों द्वारा होने वाले शोषण का व्यंग्य किया है। उच्च वर्ग ज्यापू को अपने खिलौने समझते हैं और उनके काम की कद्र नहीं कर रहे ऐसा वर्णन किया गया है।

1. नेवाः सांस्कृतिक पुचः/ नेवाः म्ये/ p-10

2:4:5:2:3 सामाजिक ध्याचू मे

समाजिक ध्याचू गीत के अंतर्गत लेखकों ने समकालीन में हुए चरित्र व्यवहार एवं समाज में देखने को मिलती हुई विकृति, कमजोरी तथा द्वंद को मुख्य आकर्षक बनाकर गीतों की रचना की है। उन लेखकों का उद्देश्य है कि समाज में फैले हुए कुसंस्कार, कुनीति, बुराई इत्यादि को व्यवहार में लोग समझे और अपने आप को सही रास्ते पर ले कर आए तथा अपनी गलती स्वीकार करके भविष्य में उन कुसंस्कार को ना दोहराएं ऐसा व्यंग्य किया है। लेखकों ने समाज के सुधार एवं उन्नति के लिए महिलाओं का सबसे अधिक योगदान है ऐसा माना है। इसलिए स्त्रियों पर भी विभिन्न व्यंग्य गीत लिखे गए हैं। सामाजिक ध्याचू गीतों के संकलनकर्ता 'रामकृष्ण दुवाल(पांगा)' द्वारा संकलन किया हुआ गीत इस प्रकार है:

मिसा: वा सालेगु खुँइचा यो दाइ कें ताय्गु कुइँचा यो दाइ न्हेगामय् जाहेर जुम्ह कला मदुम्ह वेंचा यो दाई, खला मखुला।

मिजं: तिर्थया काशी यो मैं, खँ गुलि भ्वासि यो मैं नेना न्यना कुतिसलं धिमे थाना जुल यो मैं

मिसा: म्हुतु क्वसं मन्चा यो दाई, पाली च्वसं गौचा यो दाई म्हेगामं सुना मस्यु कुतिवाइम्ह साहुचा यो दाई, खुला मखुला मिजं: कर्काया पर्सि यो मैं भुलायखिया गाया यो मैं यत्थे नका पुंकातय् जिं थौं कन्हय् धांचा यो मैं छु खँ ल्हामागु

मिसा: म हाय्गु हासा यो दाई खँ धासा गुलि खासा म्हे तः सा बँय्तय् मदुम्ह मदु छंगु आशा यो दाई छु खँ ल्हामागु

मिजं: सपया जाति यो मैं मह्तुया लाली यो मैं ख्वा छंगु हिसि दुसां भच्चा फस्वः पाली यो मैं, खः ला मखुला

मिसा: खोनाया सिरिकाली न्येतया स्वेतकाली जिनंला फंपिया दक्षिणकाली माई यो दाई, स्यूला मस्यूला

मिजं: नक्काया नक्काः भैलः वादेया व्याङला भैल जिनंला किपुयाम्ह आजु वाघ भैल यो मैं, ताः ला मताः ला

मिसा: थक्काया माहालक्ष्मी, पलांचोया भगवती केगु नाप जा नय् में का सवा मदु छतिं यो दाई, थुला मथुला

मिजं: तुती तय्गु अलः यो मैं, दू धंके हल यो मैं ह्वयोज्ञा धेन्ती बाजं थाका का वय् तेल छन्त यो मैं, ज़्यूला मज्यूला

मिसा: धाय् गुली अःपु यो दाई, धर ग्वारा तपु यो दाई बुरि कन्या धाय्के माःसा छंके वय् हे मखु यो दाई, छु खुँ ल्यानागु

मिजं: लँ काप भ्कीर्का यो मैं फिके मखु पर्का यो मैं जिनंला हि मदुसा हींमाला नस्वाम्ह यो मैं, थुला मथुला

मिसा: क्वने दुने कीगः मदु सिन्ह तीगु छुचुं मदु असं धुकू रुमाल भनि छंके क्या खैला यो दाई, छु खँ ल्हानागु।[1]

भावार्थ: गीतकार ने इस युगल गीत के जरिए समाज में होने वाले स्त्री और पुरुष के प्रति सोच की धारणा का बहुत ही रोमांचक तरीके से व्यंग्य किया है। सर्वप्रथम इस गीत में दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं का प्रयोग, विभिन्न तीर्थ स्थानों के देवताओं का नाम लिया है। मुख्यतः इस गाने में अविवाहित पुरुष एक स्त्री को मनाने का प्रयास कर रहा है। उसी क्रम में एक दूसरे का सामाजिक व्यंग्य भी कर रहे हैं। जैसे की धन संपत्ति होने से ही वैवाहिक जीवन सुखमय होगा ऐसी मान्यता गलत ठहराई है। पुरुषों के चरित्र व्यवहार पर भी प्रश्न किया है। पुरुषों को स्वावलंबी होने की आवश्यकता बताई गई है। समाज में अगर लड़की की शादी समय पर ना हो तो उसे 'बुढ़िकन्या' ऐसे शब्द प्रयोग की आलोचना भी की है। इस प्रकार गीतकार ने समाज में होने वाले छोटे-मोटे कुव्यवहार, विचारों को इस युगल गीत के जरिए गहरा व्यंग्य किया है।

2:4:5:3 स्वच्छन्द गीत

स्वच्छन्द गीत अर्थात् स्वतंत्र रूप में कोई भी गीत को समझा सकते हैं, जैसे खेल गीत, देशभक्ति गीत, प्रेम गीत, लोरी गीत इत्यादि। यह गीत मेला पर्व, जात्रा, ऋतु से संबंधित ना होते हुए किसी भी समय में स्वच्छन्द रूप में गाए जाने वाला गीत है। खेल गीत के अंतर्गत बच्चे अपने मनोरंजन के लिए खुले मैदान में समूह में खेलते हैं, उसी प्रकार कई सारे खेल में नेवारी गीत गाए जाते हैं। खेल में ही नहीं किंतु बच्चों को अभिभावक लोरी से लेकर बच्चों को मनाने के लिए भी बहुत सारे गीत गाए जाते हैं। नेवारी संगीत में प्रचलित खेल गीत इस प्रकार है:

वा माया वा वा जिमिथाय् लाछी वा
जीवन खुसिचाय् चाः चाः हिले वा ।।धु।।
बखुंकासा म्हिताः ब्वया जुये वा
तेलकासा म्हिता आजु काये वा

1. शाक्या, सृजना/ नेवाः सामाजय् ध्याचू मे/ p-111

वा हेरा वा वा जिमिथाय् लाछी वा
झी फुकं छपे जुयाः कुलि चिने वा
ताहाकासा म्हिताः खुसी क्ने वा
यकंधाला म्हिताः दंफो काये ओ वा
वा माया वा वा जिमिथा लाछी वा
घः कासा म्हिताः तुति ल्वाके वा
तिसाकासा म्हिताः मिखा पीके वा
सुलाकासा म्हिताः सतबत ज्वने वा
वा हेरा वा वा जिमिथाय् लाछी वा
घ्वाँई कासा म्हिताः बइगः थ्यंके वा
कानकानपिच म्हिताः पिइया धाये वा
दांगदु गकासा म्हिताः न्हाइपु छचाये वा ।।४।।(1)

स्थायी:

ऩि	**सा**	**रेग**	**रे**	**|**	**सा**	**-**	**ऩि**	**ध़प़**	**|**
वा	S	माS	या	|	वा	S	वा	SS	|
ऩि	**सा**	**रेग**	**गरे**	**|**	**रे**	**-**	**-**	**-**	**|**
जिमि	थाय्	लाS	छीS	**|**	वा	S	S	S	|
रे	**रे**	**प**	**प**	**|**	**म**	**मग**	**रे**	**सारे**	**|**
जी	S	व	न	|	खु	सिS	चाय्	SS	|
ग	**गरे**	**सा**	**ऩि**	**|**	**सा**	**-**	**-**	**-**	**|**
चाः	चाःS	हि	ले	|	वा	S	S	S	|

अंतरा:

रे	**रे**	**म**	**म**	**|**	**प**	**-**	**-**	**-**	**|**
ब	खुं	का	सा	|	म्हि	ताः	S	S	|
म	**प**	**ध<u>नि</u>**	**ध**	**|**	**प**	**-**	**-**	**-**	**|**
व्य	या	जुS	ये	|	वा	S	S	S	|

1. नेवाः सांस्कृतिक पुचः/ नेवा म्ये/ p-57

रे	**रे**	**प**	**प**	**|**	**म**	**मग**	**रे**	**सारे**	**|**
ते	ल	का	सा	|	म्हि	SS	ता	SS	|
ग	**गरे**	**सा**	**ऩि**	**|**	**सा**	**-**	**-**	**-**	**|**
आ	जुS	का	यें	|	वा	S	S	S	|

भावार्थ: नेवारी संगीत में अत्यंत प्रचलित इस खेल गीत में नेवारी जाति के विभिन्न खेलों के नाम का उल्लेख किया गया है, जैसे कि- बखुंकासा, तेलकासा, ताहाकासा, यकंधाला इत्यादि। इस गीत को 8 मात्रा में निबद्ध किया गया है। इस खेल गीत से ज्ञात होता है कि नेवारी संगीत में एक साधारण खेल को भी संगीतमय बनाके रोमांचक ढंग से खेलने की परंपरा अत्यंत मनोरंजक एवं शोभनीय है।

नेवारी संगीत में प्रचलित प्रेम गीत कुछ इस प्रकार है:

राजमती कुमती(1)

राग: लोक धुन , **ताल:** चो (चार मात्रा)

राजमती कुमती जिके वःसा पिरती हाय् बाबा राजमतीचा,
राजमती मबिल धाःसा काशी वने व्यल बुवा
ह्याब्यु राजमतिचा ।।धु।।
सँ धाःसा कुलिकलि मिखा धासा बालाबाला
सक्कमिया म्याहा मचाला
ख्वाः धासाः तुयू ख्वाः ख्वालय् निगः ती दु
ताहाननिया राजमतिचा ।।१।।
खें ख्वला ध्याक्कय् दं, पसः बजि धू दं
राजमति भुलुसुलु दं
राजमति गन दु इतंबालय् छम्ह दु
हयाब्यु राजमतिचा ।।२।।
न्हापा वः हमा तः ह्रीथकुं लिपा वः हम चीह्री थकूं
वयां लिपा राजनतिचा
तः ह्री थकुं मयो जितः चीह्री थकुं मिलय् मजू
राजमति व्याहा यानाव्यु ।।३।।

1. महर्जन, शेष नारायण/ बाँसुरी स्वर लिपि/ p-29

तः ह्री थकुंया तायो दु चीह्री थकुंया पायो दु
राजमतिचा बिजकनि दु
बिजकनि मरुम्ह कलाः जितः मयो बुबा
हयाब्यु राजमतिचा ।।४।।
थः नेया थँहिति कोनेया कोहिति वियय्लाक मरुहिति
मरू हिति लः का वनं तगो ल्वहँ तय् लुफिं हानांः न्हां
राजमति धसः पाल न्हां ।।५।।
तिसानं तियेकाः गुजरति पुयेकाः राजमति व्याहा यानाब्यु

राजमति बिल धाःसा काशी वने मखु बुबा
हयाव्यु राजमतिचा ।।६।।
चण्डालम्हा लंमि याना: म्हा म्हा धाय्क बिया छ्वत
लात मखुला सँझ्या मदुगु छेय्
धिकार जनम राजमतिया करम बैसय् भाःत मदुम्ह ।।७।।

'राजमती कुमती' गीत नेवारी संगीत का प्रेम गीत है। इस गीत के लेखक का नाम प्राप्त नहीं है। यह गीत प्रचलित नेवारी लोक धुन में निबद्ध किया है। प्रस्तुत गीत में एक नायिका है जिसका नाम राजमती है। राजमती को देखकर नायक मोहित हो जाता है और नायिका की सुंदरता एवं नेवारी गहनों का बखूबी वर्णन कर रहा है। उसकी सुंदरता को देखकर नायक दंग रह जाता है और अपने माता-पिता से कहता है कि राजमती के साथ शादी करवा दो अगर नहीं कर पाए तो नायक काशी धाम चला जाएगा। इस तरह की बातों का वर्णन प्रस्तुत गीत में किया गया है। नेवारी राजमती गीत की स्वरलिपि इस प्रकार है:

-	**गप**	**-प**	**-ध**	**|**	**सां**	**सां**	**सां**	**-**
S	राज	Sम	Sती	|	कु	म	ती	S
सां	**सांरे**	**गं**	**रें**	**|**	**सां**	**सांनि**	**ध**	**प**
जि	केS	वः	सा	|	पि	रS	ती	S
-	**पध**	**-नि**	**-**	**|**	**धप**	**-**	**-**	**-धनि**
S	हाय्	Sबा	बा	|	रा	ज	S	मती

प	**-**	**-**	**-**	**|**	**-**	**ध**	**ध**	**ध**
चा	S	S	S	|	S	राज	म	ती
ध	**<u>नि</u>**	**ध**	**प**	**|**	**प**	**ध**	**प**	**म**
म	बिल	धाः	सा	|	का	शी	व	ने
ग	**ग**	**रे**	**सा**	**|**	**-**	**सारे**	**ग**	**ग**
व्य	ल	बु	वा	|	S	हया	व्	यु
रे	**सा**	**-रे**	**ग**	**|**	**सा**	**-**	**-**	**-**
रा	ज	Sम	ती	|	चा	S	S	S

नेवारी जाति में अपने देश के प्रति प्यार और लगाव अथाह रूप में देखने को मिलता है। अपनी जन्मभूमि को बचाए रखने में नेवारी जाति का बहुत अधिक मात्रा में योगदान रहा है। नेवारी इतिहास को देखा जाए तो विभिन्न शासनकाल में अपने संगीत, अपनी संस्कृति, भाषा इत्यादि को बचाए रखने में नेवारी जाति सफल रही है। संगीत के द्वारा विभिन्न प्रकार की भावनाएं व्यक्त की गई है, उनमें से देशभक्ति की भावना की रचनाएं अलग-अलग समय काल में परिवर्तित हुई होगी ऐसा शोधार्थीनी का मानना है। वर्तमान में नेवारी जाति में अपनी जाति तथा देश के प्रति प्यार भरें गीत अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। इन सारी रचनाओं में से नेवारी संगीत जगत में अग्रपंक्ति के कलाकार जनकवि दुर्गालाल श्रेष्ठ द्वारा लिखा हुआ एक देशभक्ति गीत इस प्रकार है:

रचनाकार: जनकवि दुर्गालाल श्रेष्ठ ; **संगीत:** गुज्जे मालाकार

नेवारी देशभक्ति गीत[1]

स्थायी

थ्व देश नः लि जुइगु लः व मुति हे जिपिं
स्वराज झल्ल ल्वीगु जः व मुति हे जिपिं

अंतरा

थलाः क्वलाः न्हनां वनी बं यच्चुसे च्वनी
अनेतनेक स्वांन हवै नस्वाक्क फय् सनी
थ्व विश्वया व शान्ति घः व सूर्य हे जिपिं

अंतरा

व न्हू निभाः व न्हूगु फय् व दृष्टि हे जिपिं
व झ्वाः मज्विक हवैगु स्वां व सृष्टि हे जिपिं
मनुष्य या दु घायगु छु व सत्य हे जिपिं

भावार्थ: प्रस्तुत देश भक्ति गीत वर्तमान के प्रसिद्ध जनकवि दुर्गालाल श्रेष्ठ ने लिखा है और प्रसिद्ध गायक तथा संगीतकार गुज्जे मालाकार ने संगीत दिया है। गाने का भाव यह है कि जनता ही देश का मूल आधार है। देश की जनता स्वच्छ पानी के समान, ज्योतिर्मय प्रकाश के समान है। विश्व में अनेक उतार-चढ़ाव आएंगे परंतु उस स्थिति में जनता को ही शांति का स्वरूप बनाए रखना है। इसलिए जनता ही देश का बल है और शान है, इस भाव को प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत गीत की स्वरलिपि इस प्रकार है:

स्थायी:

											सा |
											थ्व |
प	**-**	**म |**	**ग**	**-**	**रे |**	**ग**	**-**	**रे |**	**सा**	**-**	**सा |**
दे	S	श |	नः	S	लि |	जु	इ	गु |	लः	S	व |
X			**0**			**X**			**0**		
प़	**-**	**प़ |**	**सा**	**-**	**म |**	**ग**	**-**	**- |**	**-**	**-**	**सा |**
मु	S	ति |	हे	S	जि |	पिं	S	S |	S	S	स्व |
म	**-**	**म |**	**म**	**-**	**ध |**	**प**	**-**	**म |**	**ग**	**-**	**रे |**

1. मालाकार गुज्जे/साक्षात्कार /ता. 10/04/2022

रा	S	ज |	झ	ल्	ल |	ल्वी	S	गु |	जः	S	व |
ग	**-**	**रे |**	**सा**	**-**	**ध़ |**	**सा**	**-**	**- |**	**-**	**-**	
मु	S	ति |	हे	S	जि |	पिं	S	S |	S	S	
X			**0**			**X**			**0**		

अंतरा:

											सा |
											थ |
प	**-**	**प |**	**प**	**-**	**ग |**	**प**	**-**	**प |**	**प**	**-**	**प |**
लाः	S	क्क |	ला	S	न्ह |	नां	S	व |	नी	S	बं |
X			**0**			**X**			**0**		
ध	**-**	**प |**	**ग**	**-**	**म |**	**प**	**-**	**- |**	**प**	**-**	**म |**
य	S	च्यु |	से	S	च्व |	नी	S	S |	S	S	अ |
ध	**-**	**ध |**	**ध**	**-**	**म |**	**ध**	**-**	**- |**	**ध**	**-**	**ध |**
ने	S	त |	ने	S	क |	स्वां	S	न |	ह्वै	S	न |
<u>नि</u>	**-**	**ध |**	**ग**	**-**	**म |**	**प**	**-**	**- |**	**-**	**-**	**प |**
स्वा	S	क |	फय्	S	स |	नी	S	S |	S	S	थ्व |
ध	**-**	**ध |**	**म**	**-**	**ध |**	**प**	**-**	**म |**	**ग**	**-**	**रे |**
वि	S	श्व |	या	S	व |	शा	S	न्ति |	द्यः	S	व |
ग	**-**	**रे |**	**सा**	**-**	**ध |**	**सा**	**-**	**- |**	**-**	**-**	
सू	S	र्य |	हे	S	जि |	पिं	S	S |	S	S	
X			**0**			**X**			**0**		

शोधार्थिनी द्वारा द्वितीय अध्याय में शोध प्रबंध के मुख्य विषय नेवारी संगीत एवं उसके अन्य प्रकार के विषय में चर्चा कि गई है। नेवारी संगीत को और ज्यादा स्पष्ट करने के लिए नेवारी संगीत के विभिन्न प्रकार कि गायन शैली की चर्चा एवं उपलब्ध स्वरलिपियों को प्रस्तुत किया गया है।